इतिहास।

—— o ——

औरङ्गज़ेब के बेटे बहादुरशाह के २६ फ़रवरी सन् १७१२ ई० (हिज्री ११२४ मुहर्रम २०) को मरने पर उनके लड़कों में झगड़ा खड़ा हुआ, वरञ्च यह झगड़ा पहिले ही से आरम्भ होगया था. बहादुरशाह के चार बेटे थे. मुईज़ुद्दीन (जहाँदारशाह) अज़ीमुश्शान, रफ़ीउश्शान और जहाँशाह. जहाँदारशाह से उस के रहन सहन के ढंग और पिता से प्रायः दूर अपनी राजधानी मुलतान में, जहाँ का वह सूबेदार था रहने के कारण पिता का जी फिर गया था तथा प्रायः सब लोग उससे अप्रसन्न थे. पिता का पहिले स्नेह तीसरे बेटे रफ़ीउश्शान पर था पर थोड़े दिन पीछे उसका चित्त इनसे भी फिर गया और दूसरे बेटे अज़ीमुश्शान पर कृपा होगई चौथा बेटा जहाँशाह प्रायः बीमार रहता था. अज़ीमुश्शान. बङ्गाल और बिहार की सूबेदारी पर औरङ्गज़ेब के समय से ही था. इसने बङ्गाल की सूबेदारी और पिता की कृपा से बहुत सा धन एकत्र कर लिया था इससे उसके सब भाई कुढ़ते थे।

बहादुरशाह के मरते समय लाहौर में उनके पास अज़ीमुश्शान था. तीनों भाइयों ने मिलकर उसपर चढ़ाई कर दिया. चार दिन तक घोर युद्ध हुआ. अज़ीमुश्शान की सेना भागी. अन्तिम दिन एक गोला आकर अज़ीमुश्शान की हाथी पर गिरा जिससे हाथी घबड़ाकर भागा और रावी नदी में अज़ी-मुश्शान को लिए हुए डूब गया।

जुलफ़िक़ारखां, बहादुरशाह के वज़ीर ने रफ़ीउश्शान और जहाँशाह को बराबर राज्य बाँट देने की प्रतिज्ञा किया था परन्तु अज़ीमुश्शान के मरने पर उसने राज्य बाँटना और लूट का धन देना अस्वीकार किया. जहाँशाह और रफ़ीउ-श्शान ने सेना सग्रह करके युद्ध आरम्भ किया परन्तु पहिले युद्ध में जहाँशाह मारा गया दूसरे दिन की लड़ाई में रफ़ीउश्शान भी वीरता से लड़कर मारा गया. बहादुरशाह ने विजय प्राप्त किया और लाहौर में, उसी लड़ाई के मैदान में ता० २१ सफ़र सन् ११२४ हिज्री (२९ मार्च १७१२ ई०) को दरबार करके भारतवर्ष का साम्राज्य पद ग्रहण किया. उसका नाम हुआ अबुलफ़तह मुहम्मद मुईजुद्दीन जहाँदारशाह।

अज़ीमुश्शान का बड़ा बेटा मुहम्मदकरीम छिपा हुआ था वह पकड़ा गया और बड़ी निर्दयता के साथ मारा गया

ता० १ मे १७१२ ई० को जहाँदारशाह दिल्ली के लिये चला और ता० २२ जून १७१२ ई० को दिल्ली पहुँचा यह सुनकर कि अज़ीमुश्शान का दूसरा लड़का फ़र्रुख़सियर बङ्गाल से पटना में आगया है और दिल्ली पर चढ़ाई करने वाला है जहाँदारशाह ने अपने बड़े बेटे ऐज़ुद्दीन को ५०००० सेना और ९ करोड़ रुपया के साथ आगरा में नियत किया जिसमें वह फ़र्रुख़सियर का रास्ता रोके.

जहाँदारशाह ने लालकुँअर नाम की वेश्या को महल में डाल लिया था उसका नाम इम्तियाज़महल रक्खा गया और उस के परामर्श पर वह सब काम करता था. नाच तमाशे रोशनी आदि में इतना अपव्यय होता था कि अन्न, घी, तेल आदि बहुतही महँगे होगए थे उसकी निर्दयता इसी से समझ लेना

चाहिए कि एक दिन जहाँदारशाह लालकुँअर के साथ यमुना किनारे की छत पर टहल रहा था, इतने में उसने एक नाव पर बहुत से मनुष्यों को यमुना पार करते देखा, लालकुँअर ने कहा कि "मैं ने कभी मुसाफ़िरों से लदी नाव डूबते और उसके सवारों की दशा नहीं देखा है" तुरन्त बादशाह का इशारा हुआ और एक नाव डुबाई गई निदान उसके नातेदारों के अन्याय आचरण से लोगों के नाकों में दम आगया. सरदारों में आपस में वैर भाव बढ़ने लगा. रंडी भडुओं के अधिकार से भले आदमियों का दरबार में निरादर होने लगा. जहाँदार-शाह दिन रात नाच रङ्ग में मस्त रहता था.

बहादुरशाह के मरने और पिता अजीमुश्शान के मारे जाने का समाचार पटना में फ़र्रुख़सियर के पास पहुँचा पहिले तो वह बड़ा दुखी हुआ और आत्मघात का विचार किया परन्तु माता की दृढ़ता और उत्तेजना से उसको साहस हुआ. उसने वहीं साम्राज्य पद ग्रहण किया और अपने नाम का ख़ुतबा पढ़वाया और सेना संग्रह करके दिल्ली की ओर कूच किया. बारहा के सैयद हसनअलीख़ाँ प्रसिद्ध नाम अब्दुल्लाहख़ाँ और उनके भाई सैयद हुसेनअलीख़ाँ इसके पक्ष पर हुए. इन में से पहिले को इलाहाबाद और दूसरे को बिहार की सूबे-दारी केवल अजीमुश्शान की कृपा से मिली थी. इस ग्रंथ में इसी लड़ाई का सविस्तर वर्णन है, जिस का सारांश आगे दिया जायगा ।

फ़र्रुख़सियर का जन्म दक्षिण में, औरङ्गाबाद में हुआ था मिस्टर इर्विन साहब ने जर्नल एशियाटिक सोसाइटी नं० २ सन् १८९६ में इसके जन्म की तारीख १९ रमजान सन् १०९४

हिज्री (११ सितम्बर १६८३ ई०) बहुत ढूंढ के साथ निश्चय किया है, परन्तु पूज्य भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने "बादशाह दर्पण" में बृहस्पतिवार १३ रज्जब सन् १०९५ हिजरी लिखा है, यह ग्रंथ बहुत ही प्रामाणिक है क्योंकि यह दिल्ली शाही घराने के दफ्तर के आधार पर बना है. भारतेन्दु जी के मातामह शाही घराने के काशी में आने पर दीवान थे. फ़र्रुख़सियर बचपन ही में दिल्ली भेज दिया गया था परन्तु फिर सन् ११०५ हिजरी (सन् १६९३-१६९४ ई०) में प्रपितामह औरङ्गज़ेब ने दाक्षिण में बुलाकर अपने पास तीन वर्ष तक रक्खा था. वहाँ से अपने पिता अज़ीमुश्शान के साथ आगरा और वहाँ से बङ्गाल आया. पिता बहादुरशाह की कृपा होने से अज़ीमुश्शान, फ़र्रुख़सियर को बङ्गाल में छोड़ कर लाहौर चला आया था, कुछ दिन पीछे फ़र्रुख़सियर को भी लाहौर में बुलाया था, वह पटना तक भी नहीं पहुँचा था कि लाहौर की ख़बर उसे लगी इस समय फ़र्रुख़सियर के पास न तो धन ही था न बल, केवल ४०० सेना साथ थी बड़े बड़े सब सरदारों ने जिनपर उसके पिता के बड़े बड़े उपकार थे मुँह मोड़ लिया था केवल माता के साहस दिलाने पर आगे बढ़ने का विचार किया था।

सैयद अब्दुल्लाह और हुसैनअली के मिलजाने पर और भी सरदार तथा ज़मींदार मिले रुपया भी इकट्ठा हुआ और फ़र्रुख़सियर इलाहाबाद आया जो सैयद अब्दुल्लाह के अधिकार में था वहाँ उसे राजा छबीलेराम भी मिले जिनके पास बहुत सा मालगुज़ारी का रुपया इकट्ठा था।

जहाँदारशाह ने अपने बड़े बेटे एज़ुद्दीन को आगरा से

फ़र्रुख़सियर को रोकने के लिये इलाहाबाद भेजा पर वह हार कर आगरा भाग आया जिसका वर्णन इस ग्रंथ में है.

आगरा में घोर युद्ध हुआ, उसमें हारकर जहाँदारशाह लालकुँअर के साथ दिल्ली भाग आया. उसने भेष बदलने के लिये दाढ़ी मुड़वा डाली थी. यह लोग एक बैलगाड़ी पर दिल्ली आए. लालकुँअर अपने घर चलदी, जहाँदारशाह अकेला असदख़ाँ (ज़ुलफिकारख़ाँ के पिता) के यहाँ गया, ज़ुलफ़िक़ारख़ाँ एक दिन पहिले दिल्ली पहुँच गया था, पिता पुत्र ने निश्चय किया कि अब फर्रुखसियर से लड़ना व्यर्थ है, उस से मिल जाना ही अच्छा होगा. उसने अभागे जहाँदारशाह को क़ैद कर लिया और फ़र्रुखसियर के दिल्ली पहुंचने पर उसे पेश कर बहुत कुछ उन्नति की आशा की. फ़र्रुख़सियर ने दिल्ली पहुँचकर जहाँदारशाह को मरवा डाला. ज़ुलफ़िक़ारख़ाँ के पिता और ज़ुलफ़िक़ारख़ाँ को उनके निमकहरामी पर दंडित किया और निष्कंटक दिल्ली के राज्य सिंहासन पर विराजा।

———·0·———

ग्रन्थ का सारांश ।

—— ॰ ——

जहाँदारशाह और फ़र्रुख़सियर का युद्ध ।

(जिस समय बहादुरशाह का परलोक हुआ, फ़र्रुख़सियर उस समय बङ्गाल में था) महाजनों की आपस की चिट्ठी से यह समाचार विदित हुआ । फ़र्रुख़सियर ने आज़मख़ाँ बख़्शी को आज्ञा दिया कि जितनी फ़ौज मिलै उसे भरती करके दिल्ली की ओर चलना चाहिए । इसके पीछे कुछ दिन पर पक्का समाचार आया कि ज़ुलफ़िक़ारख़ाँ और सब अमीर लोग मुईज़ुद्दीन से मिल गए उसने सब फ़ौज को भी फोड़ कर मिला लिया और मुईज़ुद्दीन को राज्य पर बैठा कर उसके नाम का ख़ुतबा पढ़ा गया तथा सारे राज्य में उसके नाम से फ़र्मान जारी किया गया है । यह सुनकर फ़र्रुख़सियर ने अपने सब सर्दारों को एक एक कर के आज्ञा दी कि जिसे जितनी फ़ौज मिले रखते जाओ । वह वहीं तख़्त पर बैठा । उसके अमीर लोग फ़ौज रखने लगे । सब से पहिले अब्दुल्लाहख़ाँ ने कूच किया । वह इलाहाबाद का सूबेदार नियत हुआ और उसने वहाँ अपना अधिकार जमाकर वहां मोर्चा दृढ़ किया ।

मीरजुमला दिल्ली में बैठा, फ़र्रुख़सियर को सब समाचार लिखता रहा । उसने लिखा कि सैयद राजख़ाँ इलाहाबाद के सूबेदार नियत हुए हैं । उसने हिरौल में सैयद अब्दुल ग़फ़्फ़ा-

र को आगे से भेजकर पीछे से धूमधाम के साथ ऐजुद्दीन के साथ भारी सेना लेकर कूच किया है । यह पत्र पढ़कर फर्रुखसियर ने क्रोध के साथ सब अमीरों की ओर देखा। हुसैनअलीखां ने कहा कि इसके लिये अकेले अब्दुल्लाहखां बहुत हैं, कुछ चिन्ता न कीजिए उन्हें तुरंत समाचार दे देना चाहिए, वह उसके दल को मार भगावेंगे । फर्रुखसियर ने सैयद अब्दुल्लाहखाँ के पास फर्मान भेजा. सैयद अब्दुल्लाहखाँ ने आज्ञानुसार सराय आलमचंद में डेरा डाल कर शत्रु का रास्ता रोका। अपने भाई के साथ सब सरदारों को देकर लड़ाई के लिये भेजा। ये सब अमीर दलबल सहित लड़ने के लिये प्रस्तुत हुए, सैफुद्दीँअलीखाँ, निज़ामुद्दीँअलीखाँ, सिराजुद्दीँअलीखाँ, राजा रतनचन्द, मीरमुहम्मदखाँ, अनवरखाँ, समुन्दरखाँ, इदगारबेग, वर्कन्दाज़खाँ के बेटे मिर्ज़ा बहराम्रबेग, और सैयद दरवेशअलीखाँ, आदि कितनेही सरदार प्रस्तुत हुए।

इधर ये लोग और उधर वे लोग आकर ठहरे। सवेरा होने पर दोनों दल का सामना हुआ और घोर लड़ाई आरम्भ हुई। सैयद सिराजुद्दीँअलीखाँ इस लड़ाई में मारे गए इस पर क्रोध के साथ महाघोर युद्ध मचा और अन्त में मीर सैफुद्दीँ-अलीखाँ, निजामुद्दीँअलीखाँ आदि विजय प्राप्त करके कुतबुल-मुल्क सैयद अब्दुल्लाहखाँ के पास आए। सैयद सब से गले मिले, बहुत कुछ पारितोषिक बाँटा। कुतबुलमुल्क ने साहबराय माथुर को आज्ञा दी कि सब समाचार यहाँ का बादशाह को लिख दें। और भाई हुसैनअलीखाँ को समझा करके लिखो कि अब आप लोग विलम्ब न कीजिए सेना

सहित शीघ्र आइए। यह भी लिखा कि ऐज़ुद्दीन ने कोड़ा में डेरा किया है राजा छबीलेराम छल करके उनसे जाकर मिल गए हैं और असग़रअलीख़ाँ भी योंही इटावे में आगे से बढ़ कर मिल गए हैं पर दोनों का मन अपनी ओर है। इधर जैनुद्दीख़ाँ, जीवाजख़ाँ, मुज़फ्फ़रअलीख़ाँ फकीरूल्लाहख़ाँ और महियारख़ाँ, आकर मिल गए हैं और ये सब सरदार हुज़ूर से मिलने पटने गए हैं। और समाचार पत्र वाहक इब्राहीमहुसैनख़ाँ के ज़ुबानी कहलाया। अमीरूलउमरा सैयद हुसैनअलीख़ाँ ने पत्र पढ़ा और सब समाचार बादशाह से निवेदन करके आगे बढ़ने की आज्ञा चाही। फ़र्रूख़सियर ने कहा कि दो दिन और ठहर जाइए पहिले सब वीर अमीरों को विदा कीजिए। ऐज़ुद्दीन की चिन्ता न करनी चाहिए, अब तो मुईज़ुद्दीन पर चढ़ाई करनी है।

दूसरे दिन बादशाह ने दर्बार, दीवान ख़ास में, किया और सैयद मुर्तिज़ाख़ाँ को आगे से पछाँह की ओर बढ़ने की आज्ञा दी। मुर्तिज़ाख़ाँ ने तुरन्त सेना सहित कूच किया और बहादुरपुर में डेरा डाला, फिर आज़मख़ाँनबख़शी को सेना सहित बढ़ने की आज्ञा दी आज़मख़ाँ के नाते भाई महम्मद सालेहख़ाँ, महम्मद शुजा, महम्मद हुसैन, और गुला-मउद्दीन सरकर साथ हुए। और भी ये सब सरदार आज़मख़ाँ के साथ हुए, मीर अज़ीज़ख़ाँ, हेगनो (?), मुहनाँ कुलीख़ाँ, मुहम्मदहयात, नेकनामख़ाँ, रूहीअलीख़ाँ, दिलावरख़ाँ और मुहम्मद अमीन।

बेटे, मीरजुमला, मीर मुकर्रम, शुजातुल्लाहखाँ, शेख रहमतुल्लाहखाँ और तैमूरखाँ। चारों ओर से घेरने के लिये बादशाह ने चार सेना भेजी।

दूसरे दिन जब बादशाह दर्बार में बैठा तो अशरफ़खाँ हाज़िर हुआ। यह सरदार मौज़ुद्दीं का साथ छोड़कर ऐज़ुद्दीन की दृष्टि बचाकर आ मिला था। इनके मिलजाने से फ़र्रुख़सियर को बड़ा हर्ष हुआ। उनको ख़ानदौरा का ख़िताब दिया गया। उसने निवेदन किया कि अब पछाँह की ओर चलिए। शुभ मुहूर्त में बादशाह ने यात्रा की। इब्राहीमहुसैन आकर मिला। उन्हें भागलपुर जाने की आज्ञा दी गई। जैनुद्दीनखाँ मिला, उसे ख़ाँबहादुर ख़िताब दिया। जाँबाज़खाँ मिला, उसको सरोपाव दिया गया। फ़कीरुल्लाहखाँ मिला, ग़ैरतखाँ मिला। उसको पटने का सूबेदार किया। ये सब सर्दार साथ में चलने के लिये सेना सहित प्रस्तुत हुए, अलीनक़ीख़ाँ हुसैनअलीख़ाँ, इनायतुल्लाहख़ाँ का बेटा शुजातुल्लाहख़ाँ, मीरमुशर्रफ़, मीरमुहम्मद हयात, असदअलीख़ाँ आतिशख़ाँ, ख़ानदौराँ, शमसामुद्दौला, मुज़फ़्फ़रख़ाँ, नूरुल्लाह खाँ पुत्र सहित इनायतख़ाँ, दोस्तअलीख़ाँ, वलीमुहम्मद, सादातख़ाँ, ख़ानज़ादख़ाँ, शाइस्ताख़ाँ, ग़ाज़ीयुद्दीनख़ाँ, रुस्तमख़ाँ दाऊदख़ाँ दुपट्टाबाज,तकर्रुबख़ाँ, अशरफ़ख़ाँ, अमीरख़ाँ, मीरख़ाँ, सफुल्लाह खाँ, मिर्जा कासिमबेग, सुलताँबेग, फ़तहुल्लाख़ाँ, अफ़रासियाब ख़ाँ, मुहम्मद वासेहख़ाँ, फतहअलीख़ाँ, राजागन्धर्वसिंह, सफ़शिकनख़ाँ, गुलामअलीख़ाँ, (इनको जुलफिकारख़ाँ ख़िताब मिला था) मुमताज़ख़ाँ, इमतियाज़ख़ाँ, दर्बारख़ाँ, मुज़फ़्फ़रअलीख़ाँ, अकबरअलीख़ाँ, सैयदअनवरख़ाँ जब्बरअलीख़ाँ, बैरमख़ाँ, रशीद

ख़ाँ, इलायचीबेग, (इनका ख़िताब बहादुर दिलख़ाँ था,) अख़्तियारख़ाँ, मुख़लिसख़ाँ ख़्वाजा अब्दुल्लाह, और ख़्वाजा रहमतुल्लाह।

सब सरदारों के प्रस्तुत होने पर फ़र्रुख़सियर ने अफ़ज़लख़ाँ को पेशख़ेमा लेकर आगे बढ़ने की आज्ञा दी। दूसरे दिन सवेरे धूमधाम के साथ बादशाह ने स्वयं कूच किया। शीघ्रता के साथ कूच करते हुए खजुरी पहुँचे, वहाँ सेना साथ लेकर आज़मख़ाँ आकर मिले, बहादुरपुर में मुर्तज़ाख़ाँ मिले, बनारस में ईद करके आगे बढ़े। फिर झूसी में डेरा पड़ा। वहाँ सैयद अब्दुल्लाहख़ाँ आकर हाज़िर हुए। उन्हें "कुतबुल् मुल्क" का ख़िताब दिया गया। और सरदारों को भी यथायोग्य मनसब और सरोपाव मिला। प्रयाग में पश्चिम की ओर से गंगाजी पर पुल बाँध कर पार उतरे। चार दिन वहाँ मुक़ाम हुआ। यहाँ फ़र्ज़ंदख़ाँ, राजाबलख़ाँ, और सैफ़ख़ाँ मिले। कड़े (मानिकपुर) के पास आकर छबीलेराम मिले। उन्हें चौहज़ारी मनसब मिला। हथगाँव में आकर अलीअसगरख़ाँ मिले। इन्हें चौहज़ारी मनसब मिला और इनका नाम ख़ानज़माख़ाँ रक्खा गया। पूर्व ओर कुँवरपुर और पश्चिम ओर बिंदुकी गाँव के बीच में बादशाह ने डेरा डाला। वहाँ से तीन कोस पर पश्चिम की ओर फ़तिहाबाद और पूर्व की ओर बिंदुकी गाँव के बीच में एज़ुद्दीन ने डेरा डाल रक्खा था। दोनों दल की लड़ाई आरम्भ हुई। बादशाह ने इस लड़ाई में शाहज़ादे को सेनापति बनाया। अब्दुल्लाहख़ाँ और हुसेनअलीख़ाँ ने आगे बढ़ कर सेना खड़ी की। ये सब सरदार सज कर खड़े हुए—इनायतुल्लाहख़ाँ, शुजाअतअलीख़ाँ मीर मुश-

रफ़, सैयद हयात महम्मद, मीर बुज़ुर्ग, मीर अशरफ़, सैयद फ़तेह अलीख़ाँ, सैफुल्लाहख़ाँ, असद अलीख़ाँ, जिसने आतिशख़ाँ पदवी पाया, रहमतख़ाँ (पदवी मुतहौवरख़ाँ) राजा रत्नचन्द, सैयद अनवरख़ाँ, मीर मुहसनखाँ, वरकन्दाज़ख़ाँ और उसका लड़का, समुन्दरख़ाँ का लड़का, यादगार वेग का वेटा सैयद दरवेश मुहम्मद, मियाँ मंजूर, हसनख़ाँ प्रयाग के दीवान, मुज़फ्फर अलीख़ाँ तोड़ावाज़, वारहापति (सैयद अब्दुल्लाह) जैनुद्दीनखाँ, जाँवाज़खाँ, राजा छवीलेराम, अमीनुद्दीनखाँ, आज़मख़ाँ, गुलाम मुहैयुद्दीनखाँ, तक़र्रुवखाँ, अली असग़रख़ाँ, ख्वाजा अब्दुल्लाह, (उनका वेटा) ख्वाजा रहमतुल्लाह, खानदौराँ, मुज़फ्फरखाँ, नूरुल्लाहख़ाँ, शेख इनायतअली, दोस्त अलीखाँ, वली महम्मद, अकवर अलीखाँ, खैरुद्दीँ अलीख़ाँ, दिलावरखाँ, शमशामुद्दौला, सादातखां, फ़र्ज़न्द अलीखाँ (सलावतखाँ का वेटा) सैफखाँ, सादातखाँ के वेटे, अमीरख़ाँ के वेटे मीरख़ाँ, मीर जुमला, मीर मुकर्रम, शुजातुल्लाहख़ाँ, मीर अकरम, हलीमखाँ, मुमताज़ख़ाँ, सादातखाँ, इमत्याज़ख़ाँ, खानाजादखाँ (पदवी शाइस्ताख़ाँ) ग़ाज़ियुद्दीँअलीखाँ, रुस्तम खाँ, दाऊदखाँ (दुपट्टावाज़) सुलताँवेग, क़ासिमवेग, फ़तहुल्लाहखाँ फतेह अलीख़ाँ, अफ़रासियावाख़ाँ, वासेखाँ, दरवार ख़ाँ, अरसलाखाँ, सैयद मुर्तजाख़ाँ, राजा गन्धर्वसिंह, अनवर खाँ, ज़ब्वरख़ाँ, मिर्ज़ा फकीरुल्लाहख़ाँ, इफ़तखारखाँ, मुखलिस खाँ, मफ़ाशिकिनखाँ गुलामअलीखाँ, वैरमखाँ, रशीदाखाँ, और इलायची वेग (पदवी वहादुर दिलख़ाँ) फ़र्रुखसियर ने और चारो ओर सेना वाँट दी, स्वयं घाटी रोक कर खड़ा हुआ, घोर युद्ध हुआ। ऐजुद्दीन की सेना भागी। खूव लूट हुई। सव लोगों ने वधाई दी।

इमतियाज़ख़ाँ ने निवेदन किया कि अबुलमसुद अली-ख़ाँ, राजेख़ाँ, सादिक़ख़ाँ लुतफुल्लाहख़ाँ, और दिलेरख़ाँ आदि मैज़ुद्दीन के विश्वासपात्र सरदार थे, पर कोई न ठहर सके। एज़ुद्दीन को लेकर भाग गए। बादशाह ने मुमताज़ ख़ाँ को बुलाकर आज्ञा दी कि बहुमूल्य शराब, हाथी, घोड़े, तोप और नगाडा रखकर और जो वस्तु जिसने लूट में पाई हो वह उसको देदो।

दूसरे दिन दर्बार हुआ, मुज़फ़्फ़रख़ाँ को ख़ानेजहाँ बहादुर का और रहमत ख़ाँ वलीअहद को मुतहौवर खाँ का खि-ताब दिया गया और सब सरदारों को बहुत कुछ इनाम मिला। चार दिन बादशाह ने वहाँ रहकर विश्राम किया। फिर शाहमदार के नगर में पहुँच कर ज़यारत की। वहाँ दस दिन डेरा रहा।

है, इन दोनों में भी आपस में बैर होगया है ग़ाज़ीयुद्दीनख़ाँ वलीख़ाँ, महम्मदअली ख़ाँ, अब्दुस्समुदख़ाँ, क़मरुद्दीन ख़ा ज़ि-क्रियाख़ाँ, रहमरहमाँ ख़ाँ, और तूरानिया सभों को मीर जुम-ला ने मिला लिया है, ये सब लड़ाई में न लेड़ेंगे।

एक दिन शराब में मस्त होकर मौजुद्दीन ने नवरोज़ की आज्ञा दी कि इतने ही में कन्नौज से ऐजुद्दीन के भागने का समाचार पहुँचा। सब के हाथ पैर फूल गए। मौजुद्दीन क्रोध से जल उठा। ख़्वाजा हुसेन अपनी बड़ हाँकने लगा। आगरे में जो सब भगोड़े आए थे उन्हें आज्ञा भेजी कि सब वहीं घाट रोके बैठे रहै। वालभपुर के नीचे तीन पुल बँधवा रक्खे जायँ, हम अभी पहुँचते हैं।

बख़्शी को बुलाकर आज्ञा दी गई कि सब तयारी तुरंत करो, सेना की तनख़्वाह दो महीने की पेशगी दीजाय, मीर-मंज़िल को विदा कर दो, सब स्थानों की ख़बरें लो। सब अ-मीरों को बुलाकर आज्ञा दी कि सब प्रस्तुत हो ऐसा उपाय हो कि सवेरे ही कूच हो। झटपट आगरे पहुँचकर इटावे में बढ़कर शत्रु को रोकें। यह आज्ञा होते ही सारे नगर में कोलाहल मच गया, सब अमीर तयारी करने लगे। बड़े सवेरेही सवारी तयार हुई, मौजुद्दीन ज्योंही सवार हुआ कि चारो ओर अशकुन होने लगे। शीघ्रता के साथ आगरे में आकर पहुँचे, समोगर में डेरा पड़ा, वहां ऐजुद्दीन की भागी सेना आकर मिली। मौजुद्दीन इन सभों के सामने अपनी बड़ाई हाँकने लगा, छबीलेराम और अलीअसग़र को धोखा देकर शत्रु से मिलने पर क्रोध प्रकाश करने लगा। फिर सब मोहासरा किया गया। पाँच लाख सवार, दो लाख तोप और कई हज़ार हाथी ठहरे। तोप दाग़ी गईं।

पत्र कुतुबुलमुल्क को क़ासिद ने दिया, साहबराम माथुर ने उसे सुनाया अब्दुल्लाहखाँ ने पत्र लेकर फ़र्रुख़सियर को दिखाया। उत्साह के साथ कूच की तयारी होने लगी। मुहम्मदखाँ बंगश बीस हज़ार सेना लेकर मिला। अरसलाख़ाँ पेशख़ेमा लेकर आगे बढ़ा। सवेरे फ़र्रुख़सियर सवार हुआ। शीघ्रता के साथ रास्ता तै करके आगरे पहुँचा। इस पार इनकी सेना थी, उस पार उनकी । एक भेदिये ने समाचार दिया कि पश्चिम ओर थोड़ी दूर पर यमुना में जल पायाब है। फ़र्रुख़सियर ने शत्रु को धोखे में रखने के लिये थोड़ी सी सेना छोड़ दी और वह आप सब सेना के साथ उसी मार्ग से पार उतरा। सिकन्दरे से दो कोस पर डेरा खड़ा हुआ। यह सुन कर शत्रु की सेना में खलबली मच गई। दूसरे दिन सिकन्दरे में डेरा पड़ा, रणभूमि में दोनो दल में केवल दो कोस का अन्तर रह गया।

पूस सुदी १८ स० १७६० * बुधवार चौदहीं मुहर्रम सन ११३३† हिज्री को शुभ मुहूर्त में युद्धारम्भ हुआ। सवेरे से दोपहर तक खूब पानी बरसा। पानी खुलने पर घमासान युद्ध हुआ। एक पहर घोर युद्ध हुआ। (दोनों ओर के सरदारों का नाम दिया है) इधर हजारों की गिनती थी परन्तु उधर लाखों ही थे, परन्तु ये दृढ़ता से उनका सामना करते रहे।

---

* मिस्टर इर्विन साहब ने दूसरे इतिहासों की जाँच तथा गणित के अनुसार इस युद्ध का तिथि माघ बदी १० सं० १७६८ (१३ जुलहिज्ज सन ११२४ हिज्री ता० ११ जनवरी १७१३ ई० निश्चय किया है।

† इसमें लेखक का भ्रम है। तारीख का तिथि लिख दिया है पर वह भी अशुद्ध है। वह सन् ११२४ होना चाहिए।

इधर से मीर अशरफ़ बढ़े, उधर जुलफ़िक़ार ख़ाँ ने सामना किया, इतने में सैयद हुसैनअली ख़ाँ पहुँचे, सहायता में इधर से अली असगर ख़ाँ, ज़ैनुद्दीं ख़ाँ, फ़तहअली ख़ाँ, सफ़शिकन ख़ाँ पहुँचे। घोर युद्ध मचा। मीर अशरफ़ मारा गया। उसका भाई मीर मुशर्रफ़ महा क्रोध से बढ़ा। फ़तहअली ख़ाँ, सफ़शिकन ख़ाँ और ज़ैनुद्दीन ख़ाँ भी खेत रहे। उधर के भी कई अमीर मारे गए। इतने में सैयद हुसैनअली और ज़ुलफ़िक़ार ख़ाँ का सम्मुख युद्ध आरम्भ हुआ। उधर से सहायता में मुख़तार ख़ाँ, जाँबाज़ ख़ाँ, जाँनिसार ख़ाँ, लुतफुल्लाह ख़ाँ, दिलेर ख़ाँ, आदि दौड़े। इधर से राजा छबीलेराम, आज़म ख़ाँ, सुलताँ कुली ख़ाँ, शेख रसूलखियत ख़ाँ ने रोका। राजा छबीलेराम का महावत मारा गया, राजा ने स्वयं हाथी को सँभाला। इतने में उनके दामाद राव गुलाब राव पहुँच गए। मुख़तार ख़ाँ हाथी सहित काम आए। तब राजा गिरिधर बहादुर, दीवान भगवन्त राय कायस्थ का बेटा सुबंसराय, बेनीराम नागर, सैयद इमाम शेख़, अहमद ख़ाँ, शाकिर मुहम्मद, गुलाम मोहैयुद्दीनख़ाँ, सुलताँ कुली ख़ाँ, आदि ने धूम से धावा किया। इधर से आज़म ख़ाँ उधर से जानी ख़ाँ से घोर युद्ध हुआ। जानी ख़ाँ मारा गया। उधर से लाख सेना इधर से हज़ार थी पर हटा कोई नहीं। तब कुतबुलमुल्क टूट पड़े। उनके साथ महम्मद ख़ाँ बंगश, शादी ख़ाँ, राजा रतनचन्द, निज़ामुद्दीनअली ख़ाँ के दीवान जैकृष्णदास, अनवर ख़ाँ, समुन्दर ख़ाँ, मंजूर तैयब, यादगार बेग आदि थे। उधर कोकिलताश ख़ाँ, आज़म ख़ाँ पर टूटे। सैदराजे ख़ाँ, अब्दुलसमुदअली ख़ाँ, नौशेर ख़ाँ, अबुलग़फ़ार आदि ने घमासान युद्ध मचाया। कुतबुलमुल्क से कोकिलताश

खाँ, महम्मद खाँ बगश से आज़म खाँ, शादी खाँ से नौशेरी खाँ, के साथ में युद्ध हुआ । उधर के सैयद राजेखान अब्दुस्समुद खाँ से इधर के राजा रतनचन्द भिडे । जैकृष्णदास, अनवर खाँ, समुन्दर खाँ, मंजूर तैयब, साहबराय आदि इधर से टूट पड़े। महा युद्ध हुआ, लहू की नदी बह गई, माँस का दलदल हो गया । (यहाँ से मूल ग्रन्थ छूट गया है। लेखक जी ने और और विषय की कविता लिखनी आरम्भ कर दी है। सारे ग्रन्थ से छाँट कर इस प्रसंग की कुछ कविता देकर ग्रंथ पूरा कर दिया गया है ।)

(इस युद्ध में हार कर जहाँदारशाह दिल्ली भाग गया और वहाँ जुलफ़िक़ार खाँ की निमकहरामी से फ़र्रुखसियर द्वारा मारा गया । यह वर्णन स्थानान्तर में देखिए ।)

——— o ———

फ़र्रुख़सियर का राजत्व ।

—— o ——

फ़र्रुख़सियर ने राज्य पर बैठतेही अपने सहायक सैयद अब्दुल्लाहखाँ और सैयद हुसैनअली को प्रधान बनाया। पहिला वज़ीर हुआ और दूसरा अमीरुल्उमरा अर्थात् सेनाध्यक्ष बनाया गया ।

सैयदों ने आशा की थी कि बादशाह को अपने हाथ का खिलौना बनाकर रक्खेंगे और वह अपने महल के सुख भोगने ही में मस्त रहेगा हमलोग यथार्थ में राज्य भोगेंगे, परन्तु ऐसा हुआ नहीं । फ़र्रुख़सियर का कृपापात्र ढाके का क़ाज़ी था जिसे उसने मीरजुमला की प्रतिष्ठित पदवी दी थी । अपनी अयोग्यता और सैयदों के बल पर ध्यान न देकर, इसके बहकाने पर उसने सैयदों का जी खटका दिया ।

सैयद हुसैनअली को दिल्ली से दूर करने की इच्छा से फ़र्रुख़सियर ने मारवाड़ के राजा अजीतसिंह पर चढ़ाई करने के लिये उसे भेज दिया, उधर गुप्त रीति से राजा को लिख दिया कि सन्धि के नियमों को तै करने में समय बितावैं, पर हुसैन अली भली भाँति जानता था कि उसके आँख की ओट होने में क्या उलट फेर होजायगा, उसने झट राजा से सन्धि की बात तै कर ली, राजा ने भी अपना लाभ देखकर बादशाह के लिखने की कुछ पर्वा नहीं की ।

सैयद हुसैनअली के लौट आने पर यह अविश्वास और

भी बढ़ा। सैयदों ने अपने जीवन की जोखों देखकर अपनी सेना को अपने महल के पास इकट्ठा किया और दर्बार में हाज़िर होना अस्वीकार किया। निकट था कि दिल्ली के भीतर घोर युद्ध होजाता, परन्तु किसी तरह इन नियमों पर यह झगड़ा मिटा कि मीर जुमला विहार का सूबेदार होकर जाय दिल्ली में न रहै, सैयद अब्दुल्लाह अपने वज़ीरी के पद पर रहैं और सैयद हुसैनअली दक्षिण की सूबेदारी पर जाँय। हुसैन अली ने चलने के समय बादशाह से स्पष्ट कह दिया कि यदि मीरजुमला फिर बुलाया गया और मेरे भाई के अधिकार में किसी प्रकार का अन्तर पड़ा तो मैं तुरन्त तीन सप्ताह के भीतर दक्षिण से दिल्ली आ पहुँचूंगा।

फ़र्रुख़सियर का जी हुसैनअली से खटकता रहा उसने गुजरात के सूबेदार दाऊदखाँ पन्नी को लिखा कि वह मरहठ्ठों से लड़ने के बहाने से हुसैनअली को बुलावे और छल से हुसैनअली का बल क्षीण करे। दाऊदखाँ की वीरता प्रसिद्ध थी इसलिये बादशाह ने उसपर भरोसा किया था। दाऊद-खाँ ने हुसैनअली से प्रगट रूप से शत्रुता आरम्भ की और उसे लड़ने के लिये ललकारा। इस लड़ाई मे दाऊदखाँ के सिर में गोली लगी और वह मारा गया, हुसैनअली ने बादशाह की आज्ञा की बाट न देखकर मरहट्ठों पर चढ़ाई कर दी।

इधर मुसल्मानों के आपस के बैर विरोध से सिक्खों ने बल पकड़ा। गुरु बन्दा इनका सरदार था। इनके विरुद्ध अब्दुस्समदखाँ की नायकता में सेना भेजी गई। बन्दे की हार हुई, बहुत से सिक्ख मारे गए। बन्दा दिल्ली भेजा गया, ऊँट पर चढ़ाकर वह और उसके साथी नगर में अपमान के साथ घुमाए गए, उसके सब

साथियों का सिर काट कर लटकादिया गया, वन्दे को अनेक प्रलोभन दिए गए पर वह तनिक न डिगा अन्त में उसका छोटा बच्चा उसके सामने हलाल किया गया और उसका कलेजा वन्दे के मुँह पर मलागया। पर वन्दे ने उफ़ भी न किया और शत्रुओं के हाथ से टुकड़े टुकड़े कर दिया गया।

उधर दाऊदखाँ के दक्षिण से बुला लिए जाने पर मरहट्ठों ने सिर उठाया, चिनकिलिचखाँ (जिनका नाम पीछे से निज़ामुल्मुल्क या आसिफ़जाह की पदवी से प्रसिद्ध हुआ) भेजे गए, उनको हटाकर हुसैनअलीखाँ भेजे गए, इन उलट फेरों से और भी मरहट्ठों का वल वढ़ने लगा, छोटे छोटे सरदार जहाँ जो पाते उसे दवाने और दृढ़ क़िले बनाने लगे।

दाऊदखाँ के दवाने के पीछे, मरहट्ठों पर धूमधाम के साथ सेना भेजी गई, मरहट्ठों ने यह किया कि जिधर से शाही सेना गई उधर के गाँव खाली करके भागगए और ज्योंही सेना आगे बढ़ गई त्योंही फिर सव अधिकार कर लिया। जव विजय के अभिमान में फूलकर शाही सेना इधर उधर तितर वितर हो गई तो मरहट्ठों ने एक साथ उनको धर दवाया और सभों को काट डाला, हुसैनअली को दवाने के लिये स्वयं फ़र्रुखसियर मरहट्ठों को उभाड़ता रहा, इस तरह पर सेना के नाश और विना दिल्ली गए अनिष्ट की आशङ्का से हुसैनअली ने साहूजी से सन्धि करली और दस हजार महाराष्ट्र सेना साथ लेकर दिल्ली आया, फ़र्रुख़सियर को यह सन्धि अस्वीकृत थी, इससे वादशाह और सैयदों के वीच में और भी विरोध वढ़ा।

इधर मीरजुमला का एकाएकी दिल्ली में आना और

एक काश्मीरी पर, जिसको रुक्नुद्दौला की पदवी मिली बादशाह का विशेष अनुग्रह होना सैयद अब्दुल्लाह को विशेष खटका, बादशाह ने वज़ीर के शत्रुओं से मेल बढ़ाना आरम्भ किया। आमेर के राजा जयसिंह इनमें प्रधान थे, परन्तु और सब सरदार काश्मीरी की प्रधानता से चिढ़ गए थे, वे सब के सब वज़ीर से मिल गए, इधर हुसैनअली भी अपनी सेना के साथ दक्षिण से आगया, राजा जयसिंह ने वज़ीर से साम्हना करने के लिये बादशाह से कहा, परन्तु उसको खुला खुली वज़ीर से वैर प्रगट करने का साहस न हुआ। इधर वज़ीर और उसके भाई ने नगर पर अधिकार करलिया और फ़र्रुखसियर को ढूँढ़कर पकड़ लिया और गुप्त रीति से मरवा डाला।

सैयदों ने शाही घराने के एक शाहज़ादे को रफीउद्दर-जात के नाम से गद्दी पर बैठाया परन्तु वह तीनही महीने में मर गया, इसके पीछे एक वैसाही शाहजादा, रफीउद्दौला के नाम से गद्दी पर बैठाया गया पर वह और भी थोड़े दिन में मारा गया। अन्त में रौशनअख्तर नामक एक युवक शाह-जादा गद्दी पर बैठाया गया और वह मोहम्मदशाह के नाम से दिल्ली के तख्त पर विराजमान हुआ।

—— o ——

ग्रंथ और ग्रंथकर्ता।

—— o' ——

प्रसिद्ध कवि श्रीधर उर्फ़ मुरलीधर के ग्रंथ तथा कविता का संग्रह मुझे मित्रवर बाबू जगन्नाथ दास (कवि रत्नाकर) से मिला था। यह कवि अच्छा सुकवि था। इसके कई ग्रंथ और स्फुट कविताओं का इस प्रति में संग्रह है। एक ग्रंथ इसमें राग रागिनियो का है, एक नायिका भेद का, एक जैनियों के मुनियों के वर्णन का, कुछ स्फुट श्रीकृष्ण चरित्र की कविता, कुछ चित्रकाव्य, फ़र्रूखसियर का जंगनामा और उस समय के अमीर, राज्यकर्मचारियों तथा राजाओं की प्रशंसा की कविता हैं। इनकी कविता से विदित होता है कि यह कवि बड़ा मझन और खुशामदी था और लोगों की बड़ाई गा गा कर कविता करते फिरने का इसका व्यवसाय था।

नावाब मुसलेहखाँ की प्रशंसा की बहुत सी कविता इसने की है। उनकी होली का वर्णन तथा उनकी रसिकता और विलासिता की बड़ी प्रशंसा की है। लोगों के यहाँ लड़का होने पर तथा विवाहादि में पहुँचना और कविता सुनाना इसका काम था।

बाबू शिवसिंह तथा डाक्तर ग्रिअर्सन ने इनके बनाए कवि विनोद का वर्णन किया है और लिखा है कि वे और कवि मुरलीधर मिलकर कविता करते थे परन्तु ऐसा नहीं है, जंगनामे मे यह स्पष्ट हो गया कि श्रीधर का ही प्रसिद्ध नाम मुरलीधर था और वह प्रयाग में रहता था। डाक्तर ग्रिअर्सन

ने इनका समय सन् १६८३ लिखा है परन्तु जंगनामा संवत् १७६९ (सन् १७१२–१३) में बना है अतः मिस्टर इर्विन ने इनका समय कम से कम तीस वर्ष पहिले मानना उचित समझा है।

प्रयाग में एक कवि मुरलीधर मिश्र भी हुए हैं। इनका भी ठीक इन्हीं का सा स्वभाव तथा व्यवसाय था। इनका बनाया रामचरित्र नामक ग्रंथ हस्तलिखित प्रयाग के भारती-भवन में संरक्षित है। मैं ने उसका वृत्त लिख लिया था उसे प्रकाशित करता हूँ। यह ग्रंथ संवत् १८१८ में बना था। कवि ने लिखा है कि सब जन्म स्वार्थ में बिताकर अब यही निश्चय करके कि अंत में राम के गुण गाकर परमार्थ सिद्ध करना चाहिए, इस ग्रंथ को बनाया। यह दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के दर्बार में था। जब नादिरशाह ने लूट मार कर दिल्ली को तहस नहस कर दिया तब यह भी उदास होकर रामचरित्र वर्णन में प्रवृत्त हुआ। इन्हों ने अपनी वंशावली का वर्णन इस भाँति से किया है कि यमुना गंगा के बीच (प्रयाग?) एक गाँव है वहाँ परमानन्द नामक बड़े पंडित थे। उन्हें अकबर ने अपने दर्बार में स्थान दिया था और प्रसन्न होकर शतावधानी की पदवी दी थी। उनके बेटे कपूरचन्द, उन के पुरुषोत्तम (ये बड़े कवि थे, और शाहजहाँ के समय में राज्यमान्य थे) उनके प्रेमराज, उनके पृथ्वीराज (ये बड़े कवि थे) उनके दिनमणि (ये बड़े प्रसिद्ध ज्योतिषी थे) उनके कई बेटों में यह मुरलीधर हुए।

मिस्टर इर्विन की ओर से मौलवी अबदुल अज़ीज़ नामक एक सज्जन भिनगी ज़िला ग़ाज़ीपुर के रहने वाले प्राचीन

ग्रन्थों का संग्रह करते फिरते हैं, उन्हों ने पहिले इस ग्रंथ तथा इसके साथ की बहुत सी कविताओं की नकल कराई और मिस्टर ईलस साहब जज के द्वारा यह ग्रंथ लिया, परन्तु मुझे खेद है कि उन्हों ने इर्विन साहब को लिखा कि यह ग्रंथ राधाकृष्णदास से बड़ी कठिनता से ईलस साहिब की कृपा से मिला। साहब ने इस ग्रन्थ को एशियाटिक सोसाइटी में छपवाया। उसी की भूमिका में उन्हों ने यह वृत्तान्त लिखकर मिस्टर ईलस को विशेष धन्यवाद दिया है। अस्तु इर्विन साहब ने इस ग्रंथ का बहुत सा अंश छोड़ दिया है।

इर्विन साहब ने लिखा है कि इसमें कई एक ऐतिहासिक घटनाएँ बहुतही अशुद्ध लिखी हैं, और यह सैयद अबदुल्लाह का पटने में रहना जब कि वह इलाहाबाद में था, मीर जुमला का मौजुद्दीन से लड़ना सर्वथा अशुद्ध है और लड़ाई का दिन और संवत् अत्यन्तही अशुद्ध है। पहिली घटना के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि कदाचित् सैयद अबदुल्लाह दो एक दिन के लिये इलाहाबाद से पटने आए हों तो क्या आश्चर्य था क्योंकि प्रयाग और पटने में इतनी दूरी नहीं है कि आना कठिन हो। दूसरी घटना में साहब को ग्रंथ के अनुवाद में भ्रम हो गया है, मूल ग्रंथ (पंक्ति ३०) में लिखा है—

तहँ मीर जुमला वीर बुद्धि गँभीर बाहु विसाल।
मिलि रह्यो मौजुद्दीन की कटक गहि करवाल॥

यहाँ "मिलि" रह्यो का अर्थ मिल रहा है अर्थात् मीर जुमला छल से मौजुद्दीन से मिल गया था और वहाँ के सम्-

चार फर्रुखसियर को लिखता था, साहब ने इस पद का अर्थ किया है—

The Mu Jumalah, a noble, clever, deep, strong of arm,
Fought Mauzuddin's army, grasping the sword.

दिन और संवत में कुछ तो लेखक को भ्रम हो सकता है और कुछ यह भी सम्भव है कि युद्धारम्भ के कुछ पहिले ही शुभ मुहूर्त्त में यात्रा की हो और उसी का वर्णन किया हो, परन्तु ग्रंथ के वर्णन से यह स्पष्ट है कि कवि स्वयं आँखों देखी घटना कहता है, इस बात को साहब भी मानते हैं वह लिखते हैं—

On the other hand some of the details as to localities add to our previous knowledge, and the copious use of actual names, shows to my mind, that the author either was present in the army or wrote immediately afterwards

जो कुछ हो यह ग्रंथ विशेष उपयोगी समझकर प्रकाशित किया गया है, आशा है कि इससे पाठकों का मनोविनोद हो।

२०-१२-१९०४ श्री राधाकृष्णदास।

फर्रुखसियर का

जंगनामा ।

दोहा ।

सुमुख कपिल एक रद विकट, भालचन्द्र गणनाथ ।
लंबोदर शंकर—तनय, आठ सिद्धि पद साथ ॥
लंबोदर शंकर शिवा, वटुक बीरवर पाइ ।
कवि श्रीधर कीन्ही कथा, गुरु सारद पद ध्याइ ॥
श्रीधर मुरलीधर उरुफ, द्विजवर वसत प्रयाग ।
रुचिर कथा यह शाह की, वढ़्यो कथन अनुराग ॥
फरुक्र-सियर से साह को, वरनों प्रवल प्रबंध ।
अरु करतूतें सवन की, जे अमीर सम कंध ॥
चीठी चली महाजनी, भई एकाएक चाह ।
छाडिं देह सुरलोक को, गए बहादुरसाह ॥१०॥
सुनी खवरि एकवारगी, फर्रुकसियर उदार ।
राखि फौज अलगारहीं, चलिये यहै विचार ॥
वकसी आजमखान को, कीन्हो हुकुम बुलाइ ।
फौज राखिए जाय अब, जेती राखी जाइ ॥
फेरि खवरि दिन दसक में, साँची पहुँची आइ ।
जुलफिकार उमराव सव, मिले मौजदिहिं जाइ ॥
जुलफिकारखाँ फोरि सव फौज दगा किय भग ।
नातरु येसे वांजन्ह सो, को जीतत सफ जग ॥
माजदीन सिर छत्र धरि, कुतवा कुटिल पढ़ाइ ।
चल्यो दिली को चहुँ दिसा, लिखि फरमान पठाइ ॥२०॥

तोमर छन्द ।

यह खबरि पहुँची तत्थ । तब फरुकसियर समत्थ ॥
सिगरे बुलाइ अमीर । सब सो कृपा करि वीर ॥
सब सौं दियो फरमाइ । अब फौज राखहु जाइ ॥
यह हुकुम करि सुभ वक्त । धरि छत्र बैठो तख्त ॥
सब साह के दिल सोज । तब लगे राखन फौज ॥
सजि अब्दुल्लह खान । किय प्रथम कोपि पयान ॥
हुअ साह को इरशाद । पहुँचो इलाहाबाद ॥
सूबा व सब सरकार । सब कियो अमल उदार ॥
रनबाँकुरा बलवान । करि रह्यो कायम थान ॥

छन्द ।

तहँ मीरजुमिला मीर बुद्धि गँभीर बाहु विशाल ॥ ३० ॥
गहि गयो मौजुद्दीनही की कटक गहि करवाल ॥
सूबा सबै मनसूब बाज बिडारि डारी चाल ।
अरु साहि को सिगरी हकीकत लिखत ता ततकाल ॥
तब मीरजुमला वीर अरज लिख्यो सुपत्र उदार ।
इन सैदगाजे खान कीन्हो प्राग सूबेदार ॥
वह चल्यो साजि हिरौल आगे सैद अबुलगफार ।
पीछे पठायो महा दल दै अजुद्दीन कुमार ॥
यह मीरजुमिला वीर की सब अरज पहुँची तत्थ ।
शाहानशाह जहाँपनाह सु फरुकसियर समत्थ ॥
सुनि कै अमीरन और हेर्यो कोपि कै समरत्थ ॥ ४० ॥
बोल्यो हुसैन अलीखना रनबाकुरा गजहत्थ ॥
इकबाल शाहनशाह को इसमें न आन की आन ।
हमको अकेलो बंधु सैयद अब्दुल्लह खान ॥

तिनको कृपा करि वेग सो लिखि भेजियो फरमान।
वह मारि फौज विदारि दल रन मारिहै घमसान॥
शाहानशाह लिख्यो जवै फरमान पहुँचो आइ।
तव सैद अब्दुल्लाहखा लीन्हों सु अदव वजाइ॥
वह हुकुम सिर धरि दै नगारो सुमिरि प्रभु को पाइ।
डेरा सु आलमचद करि अरि राह रोक्यो जाइ॥
पुनि भाय थिर करि रह्यो थानो गह्यो प्राग करार॥ ५० ॥
भाई पठायो जग को सव संग दै सरदार॥
तव सज्यो सैफुद्दीँअलीखाँ वंक वीर उदार।
भाज्यो निजामुद्दीँ-अली-खाँ कोपि गहि करवार॥
साज्यो सिराजुद्दीँ-अली-खाँ वीर औवल वान।
फिर सज्यो राजा रतनचद गयंद गहि किरवान॥
फिर मीर मुहसनखान साज्यो वीर अनवर-खान।
साज्यो समुंदर-खान अरु इदगारवेग जवान॥
मिरजा वली वहरामवेग चढ्यो गहे कर चाप।
जेहि वाप वरकंदाजखा सु खिताव पायो आप॥
अरु सज्यो त्यों दरवेशअली खाँ सैद वीरित छाप॥ ६० ।
साजे वली सरदार केते शत्रु दारन दाप॥

हरिगीतिका छन्द ।

इत अड़े आलमचंद उत कोह उन डेरा कियो।
भिनसार होत दुहूँ दिसा दुहु दलपती डंका दियो॥
इत ए वढ़े उत वे चढ़े मन वढ़े दुहु वागे लियो।
दलभार सो विकरार महि रजधान सूरज जो पियो॥
तव भयो देखा देख दुहुँ दल दुहूँ दल चापें चढ़ीं।
वाजीं वंदूखें रहकलें हथनाल धूम घटा मढ़ीं॥

तब विज्जु चमकनि झमकि त्यों शमशेर म्याननि तें कढ़ीं।
लागी झराझरनानु गटपट रुधिर की सलिता वढ़ीं ॥
ललकारि हाकनि दत सावत दपटि दुहु दल धावहीं ॥ ७० ॥
गरवी मगरवी कर गहं झुकि झपटि चोट चलावहीं ॥
छिन जात धाइ उठाइ ए छिन अटल अरिवर आवहीं।
द्विपहर उसल्ल पसल्ल भट रनसिन्धु पार न पावहीं ॥
कहुँ लरत सैयद वारहापति रतनचंद कहूं लरे ।
कहुँ लरत वरकंदाजखाँ कहुँ मीर मुहसनखाँ अरें ॥
कहु लरत अनवरखां समुन्दरखाँ कहूँ पैजे करै ।
वांटी लराई लरत कहुं इदगारबेग रिसै भरें ॥
जब लख्यो उसला पसल सैफुद्दीँअलीखाँ कोप कें ।
दोन्यौ सु निजमुद्दी-अली-खाँ फौज को आटोप के ॥
आगे सिराजुद्दीँ-अली-खा मुड्यौ रन चित चोप कें ॥ ८० ॥
पिपगार अरिदल बीच अगद सों रह्यो पद रोप कें ॥
तब बीच सैयद भए चहुदिसि लियो फौजन घेरि कें ।
तरवार तिहुं भाइन गही हरगित हरीफन हेरि कें ॥
मृगराज ज्यों मृगझुंड पर अहरात हर्गनि तरेरि कें ।
झारी झमाझम शत्रु के सिर पर सिरोही फेरि कें ॥
तेहि बीच झुकि पर ओर तें तरवारि झम झम झम परी।
झर लगी तीरन की महा मनु लगी सावन की झरी ॥
तब सिराजुद्दीं-अली खान की देह घन घायनि भरी।
भुव गिरत गिरत मचाइ गग्यो लोह वार करावरी ॥
यह वारहे के वालकनि को लग्यो अति गाढो हियो ॥ ९० ॥
सैयद सिराजुद्दीं अली खा तब शराहन को लियो ॥
हरखत हुर्गनि हाथ को पुर प्रेम सों प्याला पियो ।
करि हाल निमकहलाल ओप सिपाह सूरनि को दियो ॥

यह शोर भो चहु ओर तें दौरे सबै सरदार हैं ।
तित डारि ढालैं टारि कूदैं फारि जिरह अगार हैं ॥
अरु छोरि बखतर तोरि म्यानिनि गह्यो करनि कटार हैं ।
चमकैं चहूं नेजा सुनै झमकैं धनी करवार हैं ॥
इमि दौरि कै चहुं ओर तें पर फौज घेरी जाइ कै ।
तह तीर बरछा बान गोली अंग अंग अँगाइ कै ॥
शमशेर वार भरा झरी कर कर कटारिन घाइ कै ॥ १०० ॥
झुकि झपटि झुरमुट खेलि अरिदल दियो महि बिथराइ कै ॥
लोटैं किते भूमें परे कोउ घाइ सों घूमैं खरे ।
कोउ भए मुरछावंत डर सों ते बिना मारे मरे ॥
सरदार अबुलगफार के अंग अंग घन घायनि भरे ।
रनभूमि में पायो नहीं जानै कहाँ किहि लै धरे ॥
इमि कूटि भटकनि कटक लूटनि लगे दरवर वे दरा ।
जिहि पाय में पनही नहीं भए स्वार तेऊ पैदरा ॥
बाजे जसीले शाइना में धमक सों धमकैं धरा ।
फर में फतूहनि लै फिरैं जस जग्यो साँवत सैदरा ॥
कुतुबुल्-मुलुक सों तब मिआँ मजूर अरज सबै कियो ॥ ११० ॥
बाजे नगारे गहगहे आनंद सों हरख्यो हियो ॥
सुनि कै सिराजुद्दीं अली खा की दसा गुस्सा कियो ।
भाखे करेरी ऐंठि मोछनि दाँत ओठनि मैं दियो ॥
बोले सु अब्दुल्लाह खा अब मैं महा रन मांड़िहौं ।
सिगरी पछाहीं फौज को कर कर कटारिन काँड़िहौं ॥
आए जिते सरदार ह्वै तेहि प्रान डाड़नि डाँड़िहौं ।
तब सिराजुद्दीं अली खाँ को बैर लैके छाड़िहौं ॥
रन खेत में कुरु खेत सों तरवारि मार मचाइहौं ।
भुज जोर तें पर ओर के सब जीवतै गहि ल्याइहौं ॥
तब शाहि फर्रुकसियर को बदा बनंत कहाइहौं ॥ १२० ॥

फिरि मीर सैफुद्दी अली खाँ फतह कै आए जबै ।
आए सबै सरदार निजमुद्दी अलीखाँ संग तबै ॥
आए सबै सरदार सुन्दर जैत वर सोभा फबैं ।
तब लियो कंठ लगाइ कुतुबुल् मुलुक वीर लखी सबै ॥
काहू दए हाथी बड़े घोरा घने काहू दिए ।
काहू इजाफो चाउ सिगंर सरोपापनि सों हिए ॥
काहू सु मनसब की उमेदन मोहि मन सबके लिए ।
एहि भाँति करि सनमान डेरनि वीर बरन विदा किए ॥
दिन और कुतुबुल् मुलुक बोले बोलि साहिबराय सों ।
लिखि अरज शाहनशाह को सब भेद बात बनाय सों ॥ १३० ॥
भाई हुसेन अलीय खाँ कों लिखो सब समुझाइ सो ।
जिहिं आइ ह्यां अलगार पहुँचै साजि फौज उपाय सो ॥
सुनि लिख्यो साहिबराय माथुर अरज पत्र तहा तबै ।
सफजंग की सब बात जैसी भई जौन जहाँ जबै ॥
फुटनि पछाहिं फौज की आमद अमीरन की सबै ।
फिरि लिख्यो और लिख्यो हुसेन अलीय खाँ जू को सबै ॥
एजुदी अलगार पहुचो कोरड़ डरो दियो ।
राजा छबीलेराम कपट मिलाप अब उनसों कियो ॥
कपटै इटाए अली असगर खान आगे है कियो ।
उत खान हीं सों मिलि दोऊ प्रान तन मन ह्यां हियो ॥ १४० ॥
अब जैनदी खां फूटि आयो वीर बाँके गाज है ।
आयो वली जाँबाजखाँ वैरी चंदरगनि बाज है ॥
आयो मुजफ्फर अली खाँ बाँनैत तोरा ताज है ।
आयो फकीरुल्लाह खाँ महपार खाँ अरिगाज है ॥
ए सकल सों है मिलत मोहिं पयान पटना को कियो ।
सब चरन प्रभु के देखिहैं बर बदगी जिनकी लियो ॥
फिरि अरज इबराहिम हुसेनहि सों सबै कहि मैं दियो ।

अथ आइवो अलगार होइ असवार यहै छियो ॥
यह अरज पत्र सबै लिख्यो पटना सु पहुच्यो जाइकै ।
पहिले हुसेन अलीय खाँ लीन्हों लिखा सुख पाइ कै ॥ १५० ॥
बाँच्यो सिराजुद्दी अलीखाँ की दसा पछताइ कै ।
रिस घोंटि अरज पढ्यो सु आपुहि शाहि के ढिग आइ कै ॥
कीनो अमीरुल उम्मराव सु अरज शाहनशाह सो ।
रिस रहनि रोकी नाहिं क्योंहूं अनुज के दुख दाह सो ॥
पाऊँ हुकुम अलगार पहुँचों जग जैनक चाह सों ।
ललकारि कै छुछुकार फेरों सेज दीनहिं राह सों ॥
तब हुकुम कीन्हो शाह दिन द्वै अब तहम्मुल कीजिए ।
बाँके बनैत अमीर तिनको विदा आगे दीजिए ॥
अब ऐजुद्दीं सों रिस कहा तदवीर सो गहि लीजिए ।
मौजदीं पर साजिके चतुरंग फौज चलीजिए ॥ १६० ॥

पादाकुल छन्द ।

और रोज भिनसार भयो जब ।
सज्यो शाहि दीवानखास तब ॥
मिसिल मिसिल ठाढ़े अमीर सब ।
लियो मुरतुजाखान वली अब ॥
सैद मुरतुजा खां बढ़ि आयो ।
शाहनशाह तासों फरमायो ॥
फौज साज चाह्यो चित लीजे ।
प्रथम पछाँह पयानो कीजे ॥
हुकुम होतही चले महाबल ।
सैद मुरतुजाखान साजि दल ॥ १७० ॥
कूच कूच अलगार पयानो ।
कियो बहादुरपुर थिर थानो ॥

हजरत हुकुम फेर यह कियो ।
विदा सु आजमखाँ को दियो ॥
आजमखाँ बकसी विशाल बल ।
चढ़्यो साजि चतुरंग दीह दल ॥
साले खाँ महमद शुजा सबल ।
महमदसेन हुसेन सज्जि दल ॥
तईनात केते अमीरवर ।
चल्यो तेज सफजंग जैतवर ॥ १८० ॥
सज्यो गुलाब मेहदीखाँ तहँ ।
आजम खाँ को अनुज जंग कहँ ॥
आजम खाँ के अनुज चारिये ।
वीर जैत बर और चारिये ॥
साज्यो मीर अजीज खान जब ।
सुबलि हेम खा लिय सनाह तब ॥
सुलताँ कुली खान जब सज्जिय ।
तब महमद हयाति गल गज्जिय ॥
नेकनामखाँ वीर बंक मन ।
सज्यो खैरदी अलीखान रन ॥ १९० ॥
सज्यो दिलावर खा दिलेर जहँ ।
औवर महमद अमावेग तह ॥
तईनात एते अमीर वर ।
चल्यो तेज सफजंग जैत वर ॥
कियो हुकुम फिर बादशाह तह ।
फेर फाजिल फरजंदखान कहँ ॥
सज्यो सलाबतखान बोल लहि ।
सैफखान भो विदा सैफ गहि ॥

सजे नंद सादाति खान के ।
ईरापति माजिंदरान के ॥ २०० ॥
जैतवार किरवान वान के ।
वीर सबै जग के गुमान के ॥
तईनात उमराव राव अति ।
गनी जाति ना वीर भीर अति ॥
वीर मीरजुमला कृपान लिय ।
जत्थ तत्थ रन पत्थ वीर विय ॥
वीर मुकर्रम मीर लोह घन ।
जंग मीर अकरम उछाह मन ॥
शुजा शुजातुल्लाह जंगमन ।
सगी वेग सफजग सग तन ॥ २१० ॥
शेख रहमतुल्लाह वीर तति ।
चल्यो साजि माजिंदरान पति ॥
सजे संग सब जंग जैत वर ।
चले साजि दल वल पछाँह पर ॥
पूर्व सिन्धु दक्खिन समुद्र तहँ ।
सजि भेज्यौ तैमूरखान कहँ ॥
चहुँ ओरनि यों फौज रेल भरि ।
और रोज बैठे देवान करि ॥
आयो अशरफ खाँ अमीर तहँ ।
मलगारनि तजि मौजदीन कहँ ॥ २२० ॥
ऐजुदीन को दल मझारि करि ।
काढ़ि आयो कर वर कृपान धरि ॥
किय मुलाजिमत पादशाह सों ।
भन्यो अग आनंद उछाह सों ॥

पादशाह अनिही कृपाहि किय ।
ताहि खान-दौराँ खिताब दिय ॥
कियो आज तिन सज सलाह तब ।
अलगारनि चलिए सिताब अब ॥
शहनशाह तब सुदिन स्वच्छ धरि ।
बसे और थल पै पड़ाव करि ॥ २३० ॥
भयो शोर चहुँ ओर जोर नहँ ।
कूच कूच अलगार पछाँह कहँ ॥
इब्राहिम हुसेन मिलियो तह ।
कियो बिदा भागलपुर तेहि कहँ ॥
मिल्यो जैनदीं खान बीर मद ।
लह्यो बहादुरखां खिताब हद ॥
मिल्यो आनि जांबाज-खान तित ।
सरोपाउ दीनो सुमानि हित ॥
मिल्यो फकीरुल्लाह-खान तब ।
नव मुलाजि सु सजे संग सब ॥ २४० ॥
गैरतिखान अमीर थम्भ धरि ।
पट्टन सूबेदार चारु करि ॥
अलीनकीखाँ बीर पैज करि ।
रह्यो चाहि युनगाह खग्ग धरि ॥
सजे सूर सावंत संग वर ।
सुब अमीर बाँनन जैत कर ॥
सज्यो हुसैन अलीय-खान चल ।
महाबीर उमराव अतीबल ॥
है हिरौल अग्रहि पयान किय ।
सकल जैन सकजग संग लिय ॥ २५० ॥

(२२७ पंक्ति) असल कापी में "आज" पाठ था ।

सुव इनायतुल्लाह खान जहँ ।
शुजा शुजातुल्लाह खान तहँ ॥
तसु हिरोल हुव मीर मुशर्रफ ।
करत फारि सफजग साफ सफ ॥
संग मीर महम्मद-हयाति तसु ।
सफतजंग इन रचकवीर रसु ॥
बुजुरुग मीर सरफ सनाह लिय ।
मीर मुशर्रफ भुज बिसाल बिय ॥
असद अली खाँ युद्ध धनुक धर ।
सहस शत्रु वर हतक एक सर ॥ २६० ॥
आतसखॉ आतस समान रिसि ।
धूम धार सजि करत घोस निसि ॥
इमि हिरौल सैयद पयान किय ।
सजि हिरोल जिन्ह फतह सग लिय ॥
वर अमीर सब शहनशाह के ।
सजे संग सज्जित सनाह के ॥
सज्यो खानदौरा सु बहादुर ।
समसामुद्दौला सिपाह पुर ॥
सज्यो मुजफ्फरखां फतूह कर ।
समसामुद्दौला सु वीरवर ॥ २७० ॥
नूरुल्लहखां सहज साज सजि ।
रखो सत्व वीरत्व जाहि छाजि ॥
सज्यो इनायतखां सनंद तव ।
दोस्तअलीखाँ सजि सनाह सब ॥

(२७१ पंक्ति) "सज सह साजे" पाठ असल में है, "सहज साज सजि" पाठ होने से ठीक होता है ।

पादशाह अनिही कृपाहि किय ।
ताहि खान-दौराँ खिताब दिय ॥
कियो आज तिन सज सलाह तब ।
अलगारनि चलिए सिताब अब ॥
शहनशाह तब सुदिन स्वच्छ धरि ।
चसे और थल पै पड़ाव करि ॥ २३० ॥
भयो शोर चहुँ ओर जोर तहँ ।
कूच कूच अलगार पछाँह कहँ ॥
इब्राहिम हुसेन मिलियो तह ।
कियो बिदा भागलपुर तेहि कहँ ॥
मिल्यो जैनदीं खान वीर मद ।
लह्यो बहादुरखां खिताब हद ॥
मिल्यो आनि जांबाज-खान तित ।
सरोपाउँ दीनो सुमानि हित ॥
मिल्यो फकीरुल्लाह-खान तब ।
नव मुलाजि सु सजे संग सब ॥ २४० ॥
गैरतिखान अमीर थम्भ धरि ।
पट्टन सूबेदार चारु करि ॥
अलीनकीखाँ वीर पैज करि ।
रह्यो चाहि बुनगाह खग्ग धरि ॥
सजे सूर सावंत सग वर ।
सुव अमीर बानैत जैत कर ॥
सज्यो हुसेन अलीय-खान बल ।
महावीर उमराव अमीरल ॥
ह्वै हिरोल प्रथमहि पयान किय ।
सकल जैत सफजंग सग लिय ॥ २५० ॥

(२२७ पंक्ति) असल कापी म "अज" पाठ था ।

सुव इनायतुल्लाह खान जहँ ।
शुजा शुजातुल्लाह खान तहँ ॥
तसु हिरोल हुव मीर मुशर्रफ ।
करत फारि सफजंग साफ सफ ॥
संग मीर महमद-हयाति तसु ।
सफतजंग इन रचकवीर रसु ॥
बुजुरग मीर सरफ सनाह लिय ।
मीर मुशर्रफ भुज विसाल विय ॥
असद अली खाँ युद्ध धनुक धर ।
सहस शत्रु वर हतक एक सर ॥ २६० ॥
आतसखाँ आतस समान रिसि ।
धूम धार सजि करत घोस निसि ॥
इमि हिरौल सैयद पयान किय ।
सजि हिरोल जिन्ह फतह संग लिय ॥
वर अमीर सव शहनशाह के ।
सजे संग सज्जित सनाह के ॥
सज्यो खानदौरा सु वहादुर ।
समसामुद्दौला सिपाह पुर ॥
सज्यो मुजफ्फरखां फतूह कर ।
समसामुद्दौला सु वीरवर ॥ २७० ॥
नूरुल्लहखां सहज साज सजि ।
रखो सत्व वीरत्व जाहि छजि ॥
सज्यो इनायतखां सनंद तव ।
दोस्तअलीखाँ सजि सनाह सव ॥

(२७१ पंक्ति) "सज सह साजे" पाठ असल में है, "सहज साज सजि" पाठ होने से ठीक होता है ।

वली महम्मद कर कृपान लिय।
समसामुद्दौला पयान किय॥
सजि सादाति खान बहादुर।
जासु नंद सुव सुवे बहादुर॥
जिन जिन को तब हुकुम शाह दिय।
साजि फौज प्रथमहिं पयान किय॥ २८०॥

खानजाद खां जग साज किय।
शाइस्ता खां जेहि खिताब दिय॥
सज्यो गाजियुद्दीनखान तब।
सज्यो और केतक अमीर तब॥
रुस्तमखां रुस्तम समान दिल।
किते और श्रीधर कर फाजिल॥
सज्यो संग दाऊद खान असु।
बान दुपट्टे बाज जासु जसु॥
सज्यो तकरुव खान चारु दल।
आलिम आलिमजग बाहुबल॥ २९०॥

अशरफ खां सादर सदूर सजि।
रह्यो शुजायति इलम रोज रजि॥
जेह अमीर खां कर फतूह लिय।
काबुल अटक तुराह साफ किय॥
तासु नंद अम्मीर खान सजि।
मीर खान बहु संग तेज रजि॥
सैफुल्लहखां वीर सज्जि दल।
मिरजा कासिमबेग खां सबल॥
सुलतां बेगहिँ खाँ सनाह लिय।
फतहुल्लह खां तुरन सज्ज किय॥ ३००॥

सज्यो बीर अफरासियाब खाँ ।
डील पील बल कर फतूह दाँ ॥
तासु अनुज लघु मीर सज्ज किय ।
महमद बासे खाँ सनाह लिय ॥
फतह अली खाँ कर फतूह कर ।
कोप तोप आटोप खग धर ॥
गुरु राजा गंधर्वसिंह तहँ ।
सज्यो फौज सन्नाह युद्ध कहँ ॥
सज सनाह तब शिकिन खान किय ।
धनुक बान युद्धर कृपान लिय ॥ ३१० ॥
सज्ज गुलाब अलीय खान किह ।
जुलफिकार खाँ हुव खिताब जिह ॥
सज्यो बीर मुमताज खान बल ।
जंग जैत कर संग गोत दल ॥
रन हिरौल की होत जुसामिल ।
फर फाजिल फतूह कर कामिल ॥
सज्यो बीर इमत्याज खान तहँ ।
बल कृपान इमत्याज तेज जहँ ॥
तासु नंद जस कंद तेज बर ।
बीर बान घन रन फतूह कर ॥ ३२० ॥
जंग साज दरबार खान किय ।
फर फतूह कर बीर खग लिय ॥

(३१० पंक्ति) हस्त लिखित में "कृन लिय" है । इसका कोई अर्थ समझ में न आने से "कृपान लिय" पाठ कर दिया है ।

(३१९ पंक्ति) हस्तलिखित मे "ताज" लिखा है, किन्तु "तासु" से ठीक अर्थ होता है ।

सज्यो मुजफ्फर अलिय खान दल ।
अक्कवर अलिय खान सज्जितवल ॥
सवल सैद अनवर खाँ सज्ज्यो ।
ओज फौज जस्न रस जेहि छज्ज्यो ॥
तासु संग हुव सजि मनाह वर ।
वीरहु जव्वर खान जैत वर ॥
वैरम खाँ वाँको विशाल मन ।
सुव रसीद खां कियउ जैत पन ॥ ३३० ॥
सज इलायची वेग रुद्र रसु ।
वहादुर दिल खाँ खिताव जसु ॥
इख्तियार खाँ जग वाज चित ।
मुखलस खाँ सज्ज्यो फतूह हित ॥
खोजे अवदुल्लाह युद्ध धन ।
खोज रहमतुल्लाह तेज तन ॥

अधमा ।

सकल मीर अमीर सज्जिय ।
अरसला खाँ को हुकुम किय ॥
पेश खानो लै पयानहु ।
कूचअलगर ठीक ठानहु ॥ ३४० ॥
अरसला खां हुकुम धारो ।
चढ्यो सजि दल दै नगारो ॥
पेशखानो लै पयानेउ ।
पाँच कोस पयान ठानेउ ॥

(३३० पंक्ति) हस्तलिखित प्रति में "प" लिखा है, किन्तु "पन" होने से शुद्ध होता है ।

फाजर शाहंशाह साज्यो ।
सकल वृंद गयंद गाज्यो ॥
बजी नौबत गहगही तत्र ।
भई नौबत रावरी अब ॥
घोर धौंसा धुनि धकारत ।
फतेह फत्तेह मनु पुकारत ॥ ३५० ॥
होहु हो करनाइ बाजत ।
शहनशाहहि सगुन साजत ॥
सगुन सो सुरनाइ बाजी ।
सिद्धि राम करी जुसाजी ॥
झारु झारु बझारु भनकत ।
खनन लागहिं घंट खनकत ॥
फीलवार निसान झहरत ।
मनहुं आग फतूह फहरत ॥
आतपत्र अनूप राजत ।
इन्द्र सी प्रभुता बिराजत ॥ ३६० ॥
झालरी मुकता सुलच्छक ।
मनहुँ तारा छत्र रच्छक ॥
आफताब विहाँस केंकर ।
मनहुँ रक्षक सग दिनिकर ॥
तोग खुद्दर मार माही ।
सगुन की मनु देत ग्वाही ।

छप्पय ।

फर्रुखसियर समत्थ शाहशाहाँ दल सज्यो ।
पक्खर पक्खरि बहुल बार बारन दल गज्यो ॥

(३९९ पंक्ति) असल कापी में " खनखकत " पाठ है ।

श्रीधर धौंसा धमक घोर दसहूँ दिस्मान भर।
चमकत नेजे फहर वान वैरख निशान वर ॥ ३७० ॥
भुव दलत मलत जेहि दिसि चलत, सक्र सोर चहुं अक्क हु
अति अक्क धुंधरित धूरि महि, आफताव भुव लोक धुव ॥
कौन सवल वल उथपि निवल वल काहि सुथप्पिहि।
केहि महीप को मुलुक मीड़ि अव काहि समप्पिहि ॥
काहि पांय गज रज्ज करिहि केहि पील पीठि पर।
खग्ग धानिहिँ केहि थरिहिँ दरिहिँ केहि नमकि तेग तर ॥
अवहि मँड़हि खडहि सो केहि, वड़ गढ़ गढ़पति थरथरयो।
सजि शहंशाह फर्रुक सियर, सो अव श्रीधर हय पक्खरयो ॥

दोहा।

इमि सजि शाहनशाहजू, कीनो कोपि पयान।
एलगारनि के कूच को, कियो हिये ठिकठान ॥ ३८० ॥
कूच कूच एलगार सोँ, खजुरा पहुचे आय।
आजमखाँ सज फौज सोँ, परसे प्रभु के पाय ॥
साजि वहादुर पुर मिल्यो, सैद मुरतुजा खान।
उतरि वनारस ईद करि, एलगरि कियो पयान ॥
आनि वसेरे वीच के, झूसी कियो मुकाम।
आए संग महावली, हटिगे निमकहराम ॥
सैयद अवदुल्लाह खाँ, की मुलाजिमत आय।
की, मुलाजिमत संगही, जेतक संग सहाय ॥
हाथी घोरे पालकी, टकी फिरंगी कोर।
सरो पाँव सरपेच सज, जेगा मन सव ओर ॥ ३६० ॥
शहंशाहि दीनो तिन्है, कुतुवुलमुलुक खिताव।
दियो इजाफो जौन जेहि, मनसव को असवाब ॥

सेतु बाँधि सुरसरि उतरि, प्राग सु पश्चिम ओर।
चारि मुकाम तहाँ किए, आगे दौरादौर॥
मिल्यो तितै फरजन्द खाँ, जगत जासु किरवान।
सबल सलावति खाँ मिल्यो, सैफखान बलवान॥
करे निकट महैथा मिल्यो, आइ छबीलेराम।
चारि हजारी राज पद, तिन्ह को भयो सलाम॥
अलीय असगर खान जू, मिल्यो आनि हथ भाम।
चौहजारि मनसब लह्यो, खानजमाँ खाँ नाम॥ ४००॥
पूरब छांड्यो कुँवर पुर, पश्चिम बिँदुकी ओर।
बीच शाहि डेरा कियो, भयो दुवन दल सोर॥
पश्चिम फतिहा बाद तजि, पूरब बिँदुकी ग्राम।
पेजुदीन डेरा दियो, सकटक किते मुकाम॥
खारबंद खंदक खनी, कटक चारिहू कोट।
चुने अरावे अनगने, भरी फौज तिहिँ ओट॥
दुहूं महाबल फौज सों, तीनि कोस को बीच।
रची बीच रनभूमि नित, मँची दंति मद कीच॥
शाहिजादो हिरउल कियो, दलपति शाहनशाह।
सजि दलपति जिन शाहियै, ते कीन्ही तित चाह॥ ४१०॥
अबदुल्लह खा बकरन, हुसेन अलीखां माल।
रनथंभन आगे भए, कुतुब कूडरी वाल॥

मधुभार छन्द।

सज्यो अबदुल्लाह खाँ जित।
सज हुसेन अलीय खाँ तित॥

(४११ पंक्ति) हस्तलिखित प्रति में "म" है, परंतु ४१२ प्रति के अंत के पद में "वाल" है, अत "म" मे "माल" पाठ कर दिया है।

तित इनातुल्लाह खान सजि ।
रिस शुजायनि अलीखान रजि ॥
तित मुशर्रफि मीर गिरहद्द ।
सग सैद हयाति महमद्द ॥
मीर बुजुरुक मीर अशरफ ।
फोरि डारत फरनि की सफ ॥ ४२० ॥

फतेह अली सैद संगी ।
सैफ सैफुल्लाह जंगी ॥
असद अली खाँ वीर धायो ।
अस्व आतश खाँन पायो ॥
सज्यो रहमति खाँन वल हद ।
मुत्तहौवर खान जेहि पद ॥
कांपि रत्तनचांद राजा ।
वारहा पति सग साजा ॥
सैद अनवर खाँ धनुद्धर ।
मीर मुहसन खाँ सज्यो फर ॥ ४३० ॥

सज्ज वरकदाज खाँ हुव ।
वीर वरकदाज खाँ सुव ॥
सुव समुंदर खाँ सज्यो जसु ।
नंद ज्यों इदगार वेगसु ॥
सैद श्री दरवेश महमद ।
तित मियाँ मजूर शुभ कद ॥
हसन खाँ दीवान प्रागी ।
देग तेगहुँ किति जागी ॥
सजि मुजफ्फर अली खाँ मद ।
यान तोरा वाज जेहि पद ॥ ४४० ॥

वारहॉ पति कोप छायो।
साजि उत्तर ओर धायो॥
जैनदीं खाँ युद्ध योधा।
चढ़्यो उत्तर ओर क्रोधा॥
तितहिं दल जाँवाज खॉ के।
डाँकि मोरचनि वीर हॉके॥
सजि छवीलेराम आयो।
ओर दक्खिन धमकि धायो॥
अमीनुदीं खान जगी।
भयो दक्खिन फौज सगी॥ ४५० ॥
पूर्व दक्खिन बीच सज्ज्यो।
वीर आजम खॉ गरज्ज्यो॥
सज गुलाव मोहियुदीं खॉ।
वीर आजम खान जेहि घॉ॥
सज तकरुव खॉ सुलच्छिन।
हॉकि जय जय जय कर च्छिन॥
अली असगर खान जगी।
वारहा पति वीर संगी॥
खोज अवदुल्लाह सज्ज्यो।
सुव रहमतुल्लाह गज्ज्यो॥ ४६० ॥
पूर्व उत्तर ओर रोप्यो।
खान दौरा वहुत कोप्यो॥
दल मुजफ्फर खान सज्ज्यो।
खान दौरा वीर गज्ज्यो॥

(४५५ पक्ति में) "हाकि जय ज" करके छोड़ा है, हमने "हाकि जय जय जय कर च्छिन" कर दिया है।

सज्यो नूरुल्लाह खाँ जित ।
सेखि नायतिखाॅ वली तित ॥
दोस्तली खाँ शीलता हद्द ।
सग साज्यो वली महमद ॥
श्री मुजफ्फर अली खाॅ जहँ ।
सज्यो अकबर अली खा तहँ ॥ ४७० ॥

तितहिँ खरुद्दीँ अली खाॅ ।
दिल दिलावर खाँ फतह दाॅ ॥
उतहि उनको खान दौरा ।
इतहिँ सजि यह खान दौरा ॥
संग केतक खान दौरा ।
मनहुँ उनको खान दौरा ॥
सज्यो इमि समु सामुद्दौला ।
मड़्यो रन वल बाॅहु तौला ॥
पूर्व ओर अमीर जेते ।
शाहिजादे संग तेते ॥ ४८० ॥

सज्यो दल सादाति खाॅ अति ।
वीरवर माजिंदखाँ पति ॥
सज्यो तित फरजिंद खा दल ।
सुव सलावति खाॅ महावल ॥
सैफखाँ गहि सैफ हाके ।
नदसुव सादाति खाँ के ॥
मीरखान अमीर खाँ सुव ।
सज्यो तित फरजंद खाॅ हुव ॥
मीरजुमिला श्री मुकर्रम ।
शुजातुल्लह मीर अकरम ॥ ४९० ॥

गरजगजे सुहलीम खाँ तहँ ।
सज्यो दल फरजंद खाँ जह ॥
संग केतक वीर बाँको ।
सज्यो दल सादाति खाँ को ॥
सज्यो श्री मुमताज खाँ दल ।
देग तेग विशाल भुजवल ॥
सज्यो दल इमत्याज खाँ तहँ ।
वीर श्री मुमताज खाँ जहँ ॥
कियो खानेजाद खाँ सद ।
भयो जेहि शाइस्त खाँ पद ॥ ५०० ॥

गाजि मुद्दी खाँ महाबल ।
तितहिं रुस्तम खान को दल ॥
सज्यो दाउद खाँ वली तेहि ।
है दुपट्टे बाज पद जेहि ॥
सैफ सैफुल्लाह खाँ गहि ।
वीर सुलताँ वेग खाँ तहि ॥
वक कासिमबेग खाँ ध्रुव ।
स्वार फतहुल्लाह खाँ हुव ॥
फतेह अली खाँ पयानो ।
साजि आगे तोपखानो ॥ ५१० ॥

सज्यो अकरास्याब खाँ जहँ ।
सज्यो वासे खाँ वली तहँ ॥
मड़्यो तित दरबार खाँ रन ।
जैतपत्र विशाल करि पन ॥
अरसला खाँ वीर गरबी ।
कर कमो कुँवर मगरवी ॥

मुरतुजा खॉ सैद योधा ।
बारहैं को वीर क्रोधा ॥
राज श्री गंधर्व सिहहिं ।
मड़्यो पूरब ओर रन महि ॥ ५२० ॥
सैद अनवर खाँ मड़्यो रन ।
देग तेगहु जीतियो पन ॥
दलहु जव्वर खॉ सज्यो तहँ ।
सैद अनवर खॉ वली जहँ ॥
फकीरुल्लह खान मिरजा ।
सज्यो दल रन धाक खिरजा ॥
इफ्तकारहिं खान सज्ज्यो ।
वीर मुखलस खॉ गरज्ज्यो ॥
सफाशिकिन खॉ वंक मनजित ।
सज गुलाब अलीय खॉ तित ॥ ५३० ॥
वीर वैरम खान साज्यो ।
रन रसीदै खाँ गराज्यो ॥
सज इलायची वेग खग गहि ।
वहादुर दिल खान पद जेहि ॥
शाहनशाहि सुफौज बांटी ।
रह्यो आपुन रोकि घाटी ॥
बँटी फौजै दिली जहँ तहँ ।
पर्‌यो खर भर शत्रु दल महँ ॥

भुजङ्गप्रयात छन्द ।

दुहूँ ओर साजे महा मत्त दती ।
सजे पक्खरों लक्खकी पूर पंती ॥ ५४० ॥

गड़ादार घेरैं सिरी कद्द वंदा ।
गजैं मेघ मानो वजैं घोर घंटा ॥
घटा श्याम सी दीह ता विधिमा पै ।
परी पक्खरैं भालरा झूल झॉपै ॥
सजे पक्खरो भक्खरों लक्ख घोरे ।
मनो भानुजू के रथी जोर जोरे ॥
चले चाइ सों चचले चाल बॉकी ।
दऱ्याई तुरुकी तर्जीले इरांकी ॥
करैं पौन सी पौन की पायदारी ।
अरव्वी गरव्वी खुरीले खँभारी ॥ ५५० ॥
नचै नाटकी से पटी के चन्हावी ।
कछी पीठ पूठों पले नीर रावी ॥
सजे संदली औ समुंदे सुरंगे ।
कबूतो वने फूलवारी सुअंगे ॥
सजे ओज सजाफ नीले हरीले ।
मुसुकी सजे पंच कल्यान पीले ॥
वड़े ढील के, कान छोटे नवीने ।
सुचौरी खुरी चाकरी जासु सीने ॥
वडे चंचल नैन के, मुक्ख सॉचे ।
खुरी पाल झूमै वनी दोप वॉचे ॥ ५६० ॥
सजे साजियों चारिहूँ ओर योधा ।
सजे साज लोहा वँटो छत्त क्रोधा ॥
पिले चारिहूं ओर सूवे गरूरी ।
जिन्हों वार के शत्रु की फौज चूरी ॥
कहां लों कहौं फौज में सूर राजे ।
तिनेको चली लै वँदूखें गराजे ॥

सबै मूरुयाँ वीर बाँके बनेते ।
सजे साज बाजी चढ़ै हाँक दै ते ॥
कढ़ै फौज सों डाँकि घोरे धपावै ।
किते कूह कै कै सु भाले फिरावै ॥ ५७० ॥
लख्यो दूसरी ओर गाढ़ो अनी को ।
चढ़ो कोपि कै पूत दिल्लीधनी को ॥
दुहूँ ओर ठाढ़ी चमू बहि रोकैं ।
दुहू ओर की फौज ठाढ़ी विलोकैं ॥
सु फर्रुकासियर शाहि के जोर सूबे ।
पिले चारिहूँ ओर साजे अजूबे ॥
बजी दीह धौंसानि आवाज अच्छी ।
चहूँघा लखीजे बरच्छी बरच्छी ॥
छुटे त्यों अरावे उठी धूरि भारी ।
धुवाँ की उठी धुंधुरारी अँध्यारी ॥ ५८० ॥
बढ़ै रोशनी ऊपरी बान छूटै ।
मनो आसमानी महा लूक टूटै ॥
पिले चोट कों खोट के चारि फेरे ।
पिले ओपची तोपची यों घनेरे ॥
चहूँ फौज की वीरता की बडाई ।
चमूँ शत्रु की चूर कै कै हटाई ॥
बली उत्तरी फौज के गर्व एंठे ।
महा मोरचा भीड़ि कै पेलि पैठे ॥
लख्यो एजुदीं वार छूटो दुवारो ।
परी भाग भाग्यो तकैं कोह नारो ॥ ५९० ॥
सँभारै न घोरे रथी हेम हाथी ।
सँभारे न कोऊ कछू सग साथी ॥

(५८७ पक्ति में) "गव" है, "गर्व" कर दिया, इससे पाठ स्पष्ट होगया ।

किहूँ छाँड़ि घोरैनि डान्यो हथ्यारो ।
किहूँ भागि सों भागेही पत्थ धारो ॥
करै कोउ हाहा परै कोउ पैयाँ ।
चले रामरे गाँव झैझा वकैयाँ ॥
घुसे वीहरो भागि केते निकामी ।
किते को करे बदि नामी निनामी ॥
किते को गुमानी गरूरे निछाए ।
बड़े हैंसिला कै तिया संग लाए ॥ ६०० ॥
तिन्हैं छोड़ि भागे छुटी चाल बाँकी ।
गए फूटि ताले फटी हौंस नाकी ॥
सु रोवै असीले फसीले सहेली ।
पुकारे खुदा भाय दै कौन मेली ॥
गरोढा घरो झाँकि झीकैं सुरोसैं ।
सबै मौजदीं को भरे नैन कोसैं ॥
कहूँ बैदरा को बड़ी धूम धाई ।
चहूँ वुच्च लुघानि लै आग लाई ॥
बरैं छावनी छाँह डेरा सु भारी ।
महा भीम फैली धुवाँ की अँध्यारी ॥ ६१० ॥
कहूँ आँच के तेज सों लाल फूटैं ।
कहूँ बैदरा वीर बाजार लूटैं ॥
कहूँ बाँस की गाँठ फूटैं पटक्कैं ।
चटाचट्ट पापान भारी पटक्कैं ॥
लुटैं केसरौ दाख दान्यों छुहारो ।
लुटैं चारु कस्तूरिका ग्रन्नमारो ॥
कहूं होत मोती बरैं चूर चूना ।
कहूं लै लुटेरे करैं मोट दूना ॥
जरें चार आचार चूरी चिरोंजी ।

फट्टैं फौलगट्टे कसेरू करोंजीं ॥ ६२० ॥
जरें औ लुटैं चीर चीरा जरी के।
परे भोट के मोट लूटैं परी के ॥
भए वैदरा जौहरी लूटि लूटैं।
छिटे ज्वारिलों मोट मुक्तानि छूटैं ॥
किती तीं जरैं हाय हा रट्ट लागी।
किती कामिनी दामिनी रूप भागी ॥

दोहा।

यहि विधि दल सब भंगियो, एजुदीन को जान।
श्रीधर कवि आगूँ सुनो, अब सब करौं बखान ॥
अरज कियो इमत्याज खाँ, प्रभु को पाइ प्रसाद।
शाहनशाहि यह शाहि वै, फतह मुबारकबाद ॥ ६३० ॥
कियो खान दौंरा हुतो, उनको अँग हरजंग।
नौसेरी खाँ नंद इत, हो हिरोल रनरंग ॥
अबदुल समुद अलीय खाँ, राजे खान अमीर।
सादिक़ लुतफुल्लाह खाँ, दिल दिलेरखाँ वीर ॥
मौजदीन के ये हुते, इतवारी उमराइ।
हजरति के इकबाल सौँ, सके न रन ठहराइ ॥
ऐजुद्दीन को जबरई, लै सब गए पराइ।
पान खाइ आए हुते, पानिप गए गँवाइ ॥
हाथी घोड़े शुतुर रथ, महल बहल सुखपाल।
तोप नगारे रहकले, शुतर नाल हथनाल ॥ ६४० ॥
मुहर जवाहिर को गनै, ढेर ठौर ही ठौर।
ठाढ़े छुटे सराइचे, करी वैदरनि दौर ॥
तहँ ठाढ़े मुमताज खाँ, हजरति निकट बुलाय।

शाहनशाहि कीनो हुकुम, तुम देखो अब जाय ॥
सब मोलक हाथी तुरे, तोप नगारा लेहु ।
और लूटि में जो लहै, तौन ताहि को देहु ॥

अर्धक ।

करि फतह शाहनशाहजू । हिय भन्यो परम उछाह जू ॥
बैठे प्रभात देवान कै । सब बोलियो सनमान कै ॥
तहँ बजति नौबति घोर है । रह दीप दीप अँदोर है ॥
किय कचुकी इतमाम को । आए अमीर सलाम को ॥ ६५० ॥
मुकता जवाहिर वारहीं । अँजुरीन लै फिटकारहीं ॥
पुनि भांति भांतिन्ह नजरि दै । लै मिसिल ठाढ़े भे सबै ॥
कुतबुल मुलुक अरजी भए । उमराव बोलि बुवो लए ॥
मिलियो मुजफ्फरखाँ तहाँ । कीनो कृपा साहब जहाँ ॥
दीनी खिताब धुराधुरी । खाने जहान बहादुरी ॥
मिल्यो रहमतिखाँ बलीहद । मुत्तहौवरखाँ लह्यो पद ॥
फिरि शाहि बकसिस साजियो । सिगरे अमीर निवाजियो ॥
हाथी महा मद के दए । घोरे इराँक जए नए ॥
सुभ सरोपाय झलाझली । किय कनक बार सभाथली ॥
जेवर कलंगी झलझले । सरपेच साज भले भले ॥ ६६० ॥
शमशेर भूषन जाहिरी । सज करी फौज जवाहिरी ॥
तेहि भूमि चारि मुकाम कै । सब कटक को बिसराम कै ॥
फिरि कूच कूच लगार को । जहँ शहर शाहि मदार को ॥
पहुँच्यो तहाँ दल बीर को । किय दरस परसन पीर को ॥
दिन दस बसे तेहि थान जू । किय मेहर गरम देवान जू ॥

गीता छन्द ।

मीरजुमिला पीर उत सो अरज पत्र पठाइयो ।
कासीद कागद कर लए दरबार द्वारे आइयो ॥

मुमताजखान लिखान लै सुत्र शाहि पै पहुँचाइयो ।
यह लै तक्करूब खाँ तहाँ मजमून बाँचि सुनाइयो ॥
आकिल वकील उदार सैयद अब्दुल्लह खान को ॥ ९७० ॥
कायथ शिरोमनिदास राय महीप साडी थान को ॥
मिलि रह्यो मजलिस मौजदीं की सचक तत्व विधान को ।
उन लिख्यो कुतवुल मुलुक को सब भेद जो परवान को ॥
इत मौजदीं मगरूर मस्त अलस्त अमलैं खाइ कै ।
सिगरे कलाँवत ह्वै अमीर भरं रहे चित चाइ कै ॥
आवै न आवै मननि में फूले रहे इक भाइ कै ।
माही मरातिब अलम पजा तोग नौवति पाइ कै ॥
दारू सु दारू भरत गोली अमल गोली रंग की ।
मिरदंग ढोलक तोप औ सुर नाद रीत तुफंग की ॥
प्याला पलीता सु भरि कै तहँ जीति मौजे भंग की॥ ९८० ॥
दिन रात यह चरचा रहे ततबीर और न जंग की ॥
सब कमललोचन दुक्खमोचन कामरूप अगोहरा ।
अति चतुर नृत्त कलान मैं मघवान मजलिस नोहरा ॥
अनुराग उपजत राग सुनि सुनि कवित रस के दोहरा ।
मनु ढरे साँचे नवल नाँचे नटा नट के छोहरा ॥
कहुँ सभा मस्त कलाचँती कहुँ पातुरन की गाँहकी ।
कहुँ नचन हरखे हिँजरा झर लगी ऊहिऽरु आहि की ॥
कहुँ छोकरे बागे बने दरबार कुँजरिन राह की ।
यह मौजदीं की मौज है गति और नाहिँ निबाह की ॥
इखत्यार कोकिलतास खाँ अरु जुलफिकारहिँ खाँ लियो ॥९९०॥
दोऊ रहे वर वीर योधा बैर आपुस में कियो ॥

(९९१ पंक्ति में) "दोऊ रहे वर योधा वैर आपस में कियो"। हमने "वीर" शब्द अधिक कर दिया है ।

ज्यों कठिन करुई नीम रोगी मूदि आँखिन घूटियो ।

... .

रह्यो गाजियुद्दीं खाँ वली खाँ महमदअमी खाँ फूटिहै ।
अवदुस्समुद खाँ कमरुदीं खाँ जकरिया खाँ छूटिहै ॥
तहँ रहमरहमाँ खान अरु तूरानिया सब टूटिहै ।
परपंच कीनो मीर जुमिला जंग ये नहिं जूटिहैं ॥
इक रोज वैठे मौजदी मदिरा बढ़ायो मौज को ।
उत साह सों चित चाह भरि करि हुकुम नव नवरोज को ॥
तेहि वीच आई खवरि आए फरुख शाहि कनोज को ॥ ७०० ॥
मरु एजुदीं भागे लए हमराह सिगरी फौज को ॥
यह सुनत एजुद्दीन भाग्यो फौज सग सबै भगी ।
तहँ सकल मजलिस मौज में इक बारगी दुख सों पगी ॥
तब लगी सुख विष सी विरी अरु गीत गारी सी लगी ।
मँग अमल की लाली घटी ततवीर औ डर रिस जगी ॥
कहाँ लों लिखिये कथा सब रीति देखि परी नई ।
हहरे कलाँवत गिर गए मेहरान को मुरछा भई ।
कहुँ परी ढिनगत ढोलकी सुध ताल घुँघरू की गई ।
सब गयो मद छुटि छाक सो रट ऊहि आहि दई दई ।
अति रिस भऱ्यो मन मौजदीं बकि उठत बारहिंबार है ॥७१०॥
यह काम चूक कियो दियो करि छोकरा सरदार है ॥

(६९३ पंक्ति) वाला पद हस्तलिखित प्रति में नहीं है ।

(७०२ पंक्ति में) "सगरि भपि" था, हमने "संग सबै भगी" कर दिया है ।

(७०६ पंक्ति में) "सब रीति कछु देखि परी नई" था, हमने "कछु" निकाल दिया है ।

फिर बेतमीज अमीर सिगरे लै गयो इखत्यार है।
मन मैं न आई मसलहति अपनी खता की हार है॥
खोजा हुसेन न जग जानत घात की कथनी कथी।
कहुँ लरो लुतफुल्लाह सादिक साँचु है पानी पथी॥
करि संग दीने और सिगरे मसलहति तिनकी न थी।
सफजंग जीते सैद सों हमराह कौन महारथी॥
अब मैं चलो सजि सामुहें कहि कौनधों ठहराइगा।
मेरी अवाई सुनत सब दल एक एक पराइगा॥
सब ओसलों ताकि उदित सूरज बूँद बूँद बिलाइगा॥ ७२० ॥
नहिँ बचन देहों भागेहूँ रन भागि को कित जाइगा॥
अब भोर सों करि दौर पहुँचत एक एकहिँ मारिहों।
कोउ जियत जान न पाइहै दरबार द्वार पछारिहों॥
करि सेर देहों मस अहारनि टूक टूक बँटारिहों।
फिर बारहें की ईंट ईंट उखारि जल में डारिहों॥
मेरे भुजा बल शाहिजादेन सों न जौन लई गई।
तरवार के बल फौज के बल हिंद की ‾भुता भई॥
रन मारि तीनो पादशाहहिँ पादशाहति मैं लई।
सुलतान चाहत सो दिली वहकाइ ल्याए औरई॥
यह हुकुम पठयो ताहि जे पहुँचे भगोरा आगरें॥ ७३० ॥
बैठे रहो उतहीं सबै मिलि घाट घाट धरा धरें॥
पुल तीनि बेगि बँधाइयो मजबूत बाँलभपुर तरें।
इलगार पहुँचत भाइहों सफ जग साज महा करें॥
यकसी बुलाइ कह्यो सवारहिँ साज सिगरो कीजिए।

(७३३ पंक्ति में) "सफजं साज महाकरे" है, हमने "ज" के साथ "ग" लगा दिया है।

सबको कुमाहो पेशगी गनि राति रातिहिँ दीजिए ॥
करि मीर मंजिल को बिदा फिरि खबरि सब थल लीजिए।
ततबीर ऐसी साधि जो परभाति राति चलीजिए ॥
फिरि हुकुम कीन्हो निकट जो सिगरे अमीर बुलाइ के।
तनबीर चलिवे की करो सब रात रातिहिँ जाइ के ॥
सब साजि फौज प्रभात होतहिँ होहु हाजिर आइ के ॥ ७४० ॥
इलगार उतरो आगरो मारोँ हटाये धाइ के ॥
यह हुकुम निकसत ही एकाएक शहर खरभर शोर भो।
साजे अमीर सजी सवारी बजी नौबत भोर भो ॥
जब स्वार भो खुद घटा घुमड़ी परे पाहन घोर भो।
बद सगुन लखि सब कहैँ हा यह कालिका को कोप भो ॥
दाहिने खर, चील्ह सनमुख, बाम बोल्यो काग है ।
अरु गई काटि गली बिली, थित राँड़ रोवत राग है ॥
आतपत्र निशान खंडित दंड परम अभाग है।
जब स्वार मौजुद्दीन भो बद सगुन लागा लाग है ॥
दिन कटक माँझ उलूक बोलत लूक टूटत रात है ॥ ७५० ॥
कहुँ स्वान रोवत सुरनि सोँ कहुँ स्यारगन फिकरात हैं ॥
मडरात सिर पर गीध के गन योँ बढ़ो उतपात है ।
हहरे सिपाही सुपन मेँ सब भागिवो बररात है ॥
उतपात औ बद सगुन सिगरो मूढ़ मन बहराइ के।
इलगार पहुँचो आगरे ठहऱ्यो समोगर जाइ के ॥
तहँ मिले एजुद्दीन औ सिगरे भगोरा आइ के ।
सफ जग की कथनी कथी अति बात बनक बनाइ के ॥
बिकरार बोल्यो मौजदीँ अब सैयदोँ सो बूझिहोँ ।
रन मारि लेउँ गनीम कोँ तब बारहाँ हिँ अरुझिहोँ ॥
सिगरो फिसाद कियो इन्हीं दिल माह कीन्ही उझि हो ॥७६०॥

येई अगोहर जग के इन सों लगावन लूझिहों ॥
सादादि खाँ माजिद को मन मानि नाता आवता ।
फरजंद खाँ तेहिका पिशर सजि फौज आगे धावता ॥
यह भयो जो सम मामुदौला तेग कर फर कांपता ।
रन माँझ मेरे सामुहँ अब कौन धौ ठहरावता ॥
पहिले छबीलेराम एजुद्दीन सों मुजरा कियो ।
फिर जाइ के उतहीँ मिल्यो बदबख्त मोहिँ दगा दियो ॥
अरु अली असगर खाँ मिल्यो उन जाइ आगे ह्वै लियो ।
मन में न ल्याये मोजद्दीनहिं देखिये इनको हियो ॥
यों कहि मोहल्ला लेन लाग्यो पांच लाख सवार भो ॥ ७७० ॥
तित तोपखानो लाख द्वै गजराज कैक हजार भो ॥
फिरि करी तोपन की शलंगे गगन धूँधाँधार भो ।
धुरि धरा धसकति मेरु मसकति सबल यों दल भार भो॥
यों लिखि शिरोमनिदास राय उलाँक वेग पठाइयो ।
दरबार कुतुबुलमुलक के कासीद जोरी आइयो ॥
सब अरथ साहेबराम माथुर प्रगट बाँचि सुनाइयो ।
पर सुनत नैन रँगे भये अति वीर रस चित छाइयो ॥
हँसि कह्यो अबदुल्लाह खाँ गलबा भयो उत शाह का ।
पाऊ जो अब मैं नेकहूँ करि हुकुम शाहनशाह का ॥
इकबाल फरुखसियर को अरु करम इक अल्लाह का ॥ ७८० ॥
रन दौरि तोरौं आजुहीं बल मौजदीँ की बाँह का ॥
मज़मून सुनि तजवीज करि करि फेरि अपने कर लयो ।
स्वारी तयार भई नई असवार सैयद है भयो ॥
खुशहाल मोछनि हाथ फेरत शाहि के मुजरे गयो ।
सब अरज कीन्हीं अरथ शाहनशाह को हिय हरखयो ॥

(७६७ पंक्ति में) " के " अधिक था ।

वर मीरजुमिला को लिख्यो यह अरज सैद वजीर की ।
दोऊ बराबर सी बिदी वर बात मीर अमीर की ॥
मखियानि सरस्यो बीर रस साहवजहाँ रनधीर की ।
फर तेग वाहक हाथ फरक्यो खरी मोछैं धीर की ॥
वर बारहां पति वीर सैद वजीर त्यों अरजी भयो ॥ ७९० ॥
आयो महम्मद खान बंग समाज साजि नयो नयो ॥
असवार वीस हजार वखतरपोश ज्यों घन ऊनयो ।
सखरैन वीर बली सबै पखरैत हाथी औ हयो ॥
तब हुकुम कीन्हों शाहि फर्रुक कियो कूच करार है ।
मिलियो महम्मद खाँ मोहल्ला दै चलयो इलगार है ॥
हमराह वीर अमीर जगी साज तेज तयार है ।
गहि आशला खाँ पेशखानो चलत आजु अगार है ॥
स्वारी तयार भई प्रभातहिं शहनशाह सवार भो ।
मिलियो महम्मद खाँ सही असवार वीस हजार भो ॥
खुद आपु पंज हजार सब सरदार मनसबदार भो ॥ ८०० ॥
हमराह हिरउल को कियो अलगार वीर अगार भो ॥
करि कूच कूच लगार को पलगार पहुंचो आगरे ।
जल पिअत जमुना को दुओ दल सबल वालमपुर तरे ॥
तित पार थार मुहाम्मरो मिलि दलप दोउ डेरा करे ।
ए पेलि चाहत पार, उत वे घाट वाट धरा धरे ॥
दुहुं ओर नौबति घोर घुमरत सकल जल हल कापिओ ।
दुहुं ओर झडे झलमले फहरानि उडगन झपिओ ॥
रजभान भानु बिमान बिलखत आसमान सुढपिओ ।
दुहु ओर दल भर सहस फनिफन तुरग चपनि चपिओ ॥
दुहु ओर शादल सुदल सूर मयूर ज्यों हरखा करें ॥ ८१० ॥
दुहु ओर तोपन की गलगें गाज गरज रखा करें ॥

दुहुँ ओर चातक पिक गुनीगन कीर्त्ति सों करखा करैं।
दुहुँ ओर गोला बान बूँदनि राति दिन वरषा करैं ॥
दुहुँ ओर भट उट मन चढ़े म फजग की अति मनमनी।
दोउ पेलि चाहत पार भो, नित टरत टार दुओ अनी ॥
लगि नीर आवत कुद्ध उद्धत दलप दोउ दिल्लीधनी।
विकरार धार महानदी पछतात त्यों दोऊ पनी ॥
तेहि वीच वीर वजीर सैय्यद अरज आवत ही कियो।
प्रभुराज चन्दु प्रतच्छ लखि थल खबरि आनि हमैं दियो ॥
कछु दूर पश्चिम आगरे तहँ थाह यमुना को लियो ॥ ८२० ॥
पाँ आव पारहु पारलों सुनि शाहि को हिय हरखियो ॥
करि झूठ दीन्हों गुलगुला तिरि मौजदी उर वार भो।
यह शोर भा चहुँ ओर जोर दिलेर दल तैयार भो ॥
कछु फौज भेजि गनीम मुख पर शहनशाहि तयार भो।
तब राति रातिहिं दौरि सैयद थहरि तरि करि पार भो ॥
अड़ि रही जौन गनीम मुख पर फौज तौन वलाइ कै।
चलि कोस चारिक पहर एक तितै रह्यो ठहराइ कै ॥
जब भयो भोर अँदोर दहुँ दिशि चढ़्यो ध्वान वजाइ कै।
अति वेग तेग घनेस जमुना कूल पहुँचे आइ कै ॥
जब आनि पहुँच्यो जोर दल बल समय साधन सो सध्यो॥८३०
अति धार भार खभार फनिपुर फनी सहसौ फन खध्यो ॥
रजधान सों असमान मुद्रित सेतु सिंधुन में वंध्यो।
जल प्रथम कीचनि बीच के थल पाछिले तरिबो नध्यो ॥

(८१२ पंक्ति में) "कित्तिसों काखाकरै", पाठ था, हमने "कीर्त्ति सों करखा करैं", कर दिया है।

(८२० पंक्ति में) "तहं", अधिक कर दिया है।

एहि भाँति शाहनशाह जमुना उत्तरहिँ ते उत्तरो।
पर ओर रोज बिहाँसु पूरब कोस द्वैक सिकदरा॥
तेहि बीच सरिता निकट भो कुलि कटक को डेरा खरो।
सुनतहिँ अवाई मौजदीँ की फौज मेँ खरभर परो॥
यह खबर सुनते मौजदीँ मन मेँ महा रिस सौं भरो।
चकि उठ्यो यारहुँ देखना अब दौर जीवत हीँ धरो॥
बाचेँ न कोऊ भागेहूँ गहि एक एकहिँ सघरो॥ ८४० ॥
इन्ह कियो ढाढ़स कै ढिठाई सो सजाय इन्है करो॥
कहि योँ करेरे नैन करि करि कोप डेरनि तेँ कढ़्यो।
शमशेर सरकत खुनिस खरकत मोछ फरकत मन बढ़्यो॥
चतुरंग अगी साज जंगी मत्तमैँ गल मैँ चढ़्यो।
धौंसा धकारनि धरनि धुनि धुवलोक धूरिन्ह सोँ मढ़्यो॥
हमराह वै भट पाँच लाख अभिलाख मन रन के भरे।
सब जिरहबख्तरपोस भक्खर बारहेँ पर पक्खरे॥
एहि भाँति राति बस्यो बली चलि ओर दक्खिन आगरे।
फिरि भोर होतहिँ दौरि करि डेरा करेइ सिकन्दरे॥
रनभूमि बीच रची सु अंतर कोस द्वै दुहुँ फौज सोँ॥ ८५० ॥
थिन पूरबी पर ओर औ परवार पूरब ओज सोँ॥
दोउ वीर बाँके हरखि हाँके त्योँ अमीरन सौज सोँ।
फर भोर शत्रु सँहारिये मजिये जमन की मौज सोँ॥
संवत सु सत्रह सै अन्हत्तरि पूस पून्यो बुध तहीँ। (१)
सन सो इग्यारह तीतिसा माहे मोहर्रम चौदहीँ॥ (२)
अरु पादशाही माह आजुर बायसी श्रीधर कही।
रुफजग की सायति सधी साहबजहा कीनो सही॥
तिन भोर सोँ लगि पहर द्वै घन वारिधर बरखा कियो।
जब खुले बादर हरख सोँ दिल्लीधनी डंका दियो॥

---

(१) संवत् १७६९। (२) सन ११३३

दल सजे वीर अमीर सैद वजीर त्यौं हिय हरखियो ॥८६०॥
चतुरङ्ग जंग उमंग भर रनभूमि पिलि पहिले लियो ॥
कर वीर चढ़ि ठाढ़ो भयो हमराह सब स्वारी ठटी ।
जिहिँ ओर जा दल चाहिये तिहिँ ओर त्यौं फौजैं वटी ॥
लहि मिस्लि सिगरे अगुहरे रजथान मों सरिता पटी ।
अति सूर अपन कुम्म कपन शेष की वलना घटी ॥

हुलास छन्द ।

हुकुम शाहि को लै गल गज्ज्यो ।
कुतुवुलमुलुक दाहिने सज्ज्यो ॥
बख्तरपोश वीर हमराही ।
सैद सूर रनकाल सिपाही ॥
सैद सूर रनकाल सिपाही अति उतसाही ह्वै हमराही सकल सजे ८७०
जे शाहि हुकुम लहि तेगैं गहि गहि मारू मारू कहि कहि गरजे ॥
बागैं ढीली धरि घोरे दप करि मन में भरि सफ़जंग मजे ।
अवदुल्लह खान सैयद के धौंसे दक्खिन गहिरी वम्ब वजे ॥
दिलाजाक लोदी लोहाणी ।
पन्नी तरीन सुरसर बाणी ॥
दाउद जई खेशगी गब्बी ।
सु महम्मद बिट्टनी पब्बी ॥
बिट्टनी पब्बी मत्ती गब्बी अस्प अरब्बी पक्खरैते ।
वनि वख्तर झिलमैं दायैं दिल मैं जैतक तिल मैं सख्रैते ॥
पाठे पठनैहे लोह लपेटे कोहनि फैटे अखरैते ॥ ८८० ॥
यों अवदुल्लह खाँ सँग वीर महम्मद खाँ बंगश अगरैते ॥

(८६१ पक्ति में) "भर" अधिक कर दिया है ।

स्वामित शरम शील जेहि माहीँ ।
विप्र धेनु पालक छिति छाहीँ ॥
देग तेग हूँ कायम जा है ।
पूरो भट सूरो रन सो है ॥

सो है भट पूरो जो रन सूरो वीर गरूरो गहि गाजा ।
अति उद्धत युद्धर क्रुद्ध धनुद्धर जगी जग सोर जोर छाजा ॥
दै हरि दांही सरकि सिरोही दौरे दक्खिन ध्वा वाजा ।
यों अबदुल्लह खाँ को देवान रन मडवो रतनचंद राजा ॥
रहै वीरता को मद छाको ॥ ८६० ॥
तोफेबाज बिरद है जाको ॥
देग तेगहूँ मेँ अति अरबी ।
दौन्यो गहि शमशेर मगरबी ॥

शमशेर मगरबी गहि गहि गरबी अटल अरबी सो आयो ।
आँखैँ रिस घूमैँ तोफै झूमैँ त्यों दल दूमैँ दै पायो ॥
तरवारैँ नंगी फौजें जगी सैयद भंगी फरमायो ।
योँ अबदुल्लह खाँ सँग वीर मुजफ्फर अली खाँ धायो ॥

बरकंदाज खान अनुखगी ।
मुहसन खो अनवर खो जगी ॥
सबल समुदर खान सुयोधा ॥ ९०० ॥
यादगार वेगो अतिक्रोधा ॥

अति युद्धर क्रोधा सबल सुयोधा अरि अवरोधा निरभौरे ।
मजूर मियो भट सैयद निकट ठाढ़े ठट्ट वार औरे ॥
सज्जे सन्नाहै, जंग उमाहै जे रनसिंधु सहस पौरे ।
दुशमन भो ठग सग सय्यद सकल भोर दक्खिन दौरे ॥
दक्खिन फौज सकल गल गाजी ।
फिरि चांचमू आगिली साजी ॥

वीर हुसेन अली खाँ बंका।
बकसी चढ्यो कोपि दै डंका ॥
सैयद रनबंका दै कर डंका दौर्‍यो लंका लगि शोर पर्‍यो ॥ ६१० ॥
दौरी हथनालैं पक्खर ढालैं कर भूपालैं भूरि भर्‍यो ॥
छिति भार न धारत शेष सँभारत ह्वै अति आरत हहरि हर्‍यो।
फौजैं धाईं चारिहुँ घाईं प्रथम अवाई जाइ भर्‍यो ॥
त्यों इनायतुल्ला खाँ चोपा।
शुजा शुजा तुल्लह खाँ कोपा ॥
असद अली खाँ अस्प धयायो।
पद सिपाह हमराही धायो ॥
धाये हमराही सकल सिपाही जंग उछाही सन्नाही।
केते रनधीर अमीर बीर फर फाजिल फदकि तेग वाही ॥
वैरी सों बरकस सूरहुँ सरकस ह्वै ह्वै तरकस हैं जाही ॥ ६२० ॥
वे बकसी संग दाँकि दौरे रननदी कोटि जिन्ह अवगाही ॥
गुरुन्नी तरीन तीराही।
सरव मत नि ए बाँही ॥
नस्सुर गिलजी का सब काकर।
आरव सूर निआजी नागर ॥
पेशगी रुभनार काशी आगर पणी उजागर रोशानी।
महम्मद बिट्टनी जे फर मन्नी छवी लोदी लोहानी ॥
बखत्यार रुहेले ईसफ खेले दिलाजाक औसर बानी।
यों दाउद जई जैनदी खाँ सँग बाकी फौजैं फहरानी ॥
सजि गुलाब अली खाँ धायो ॥ ६३० ॥
जुलफिकार खाँ जेहि पद पायो ॥
चढ्यो शेष शिकिन खान सु गाजी।
फतेअली खाँ तापैं साजी ॥

साजी वर तोपैं करि करि कोपैं फत्तह अलीखान वली ।
भारी हथनालैं बान महालैं जगी भालैं भाँति भली ॥
छकरे भरि गोले और अतोले भारनि डोल जग थली ।
यों वकसी सैद हुसेन अलीखाँ संग अगोही फौज चली ॥

तसु हिरोल भो मीरमुशर्रफ ।
फतह अली बुजरुक अरु अशरफ ॥
अली असगरखाँ सैफुल्लह ॥ ६४० ॥
अरु महमद हयाति रनदुल्लह ॥

सिगरे रनदुल्लह साजी मुल्लह कायम कल्लह गापि गजे ।
फहराते कच्छी पायन्ह पच्छी तेग वरच्छिन्ह स्वच्छ सजे ॥
आँखें रिसराती वैरिन्ह घाती जे उतपाती वीर सजे ।
फीलहुँ की स्वारी फौज डरारी आगे भारी ध्वान धजे ॥

उत्तर पिसर कि दाइदखाँ को ।
आजमखान वीर वल वाँको ॥
जल हल थल थल पुमिम पव्वत ।
सजी फौज अति दल भर दव्वत ॥

अति दलभर दव्वत पुहुमिस पव्वत गढ मढ सव्वन धकानि सके ॥६५०॥
संकित दिग्वारन करत करारन पारावार न जल छलकें ॥
धरकित कच्छप घन भजत तजन वन फटन फनीफन सहम लच्यो ।
जव आजमखान ओर उत्तर फर मंडल मंडि सफजंग रच्यो ॥

वीर गुलाव मीर युद्दीखाँ ।
सुलतां कुली खान फतह खाँ ॥
महमद अमा महम्मद वाकर ।
नेक कदम अतिही रन-शाकर ॥

अतिही रन-आकर तेज प्रभाकर तेग कराकर करखैंन ।
धीरत धौ मृत शत्रु अरि का अवदुल रसूल सर वरखैंन ।

धीरन मेँ धरकस सावँत सरकस जगो करकस परवैने ॥ ९६० ॥
उत्तर तेँ दौरे साधि समोर वैरी अंग मरवैंन ॥

महाराज राजनि को राजा ।
सवल छवीलेराम गराजा ॥
चतुरंगी दल चपरि चलाया ।
कोपि ओर उत्तर तेँ धायो ॥

उत्तर तेँ धायो गरजत आयो वीर सुहायो वर जंगी ।
पखरैने वाजी ताजे ताजी सावँत गाजी सफजंगी ॥
वखतर सन्नाही वीर उछाही दुशमनदाही अनुखंगी ।
फीलहुँ की स्वारी अति भयकारी फौजेँ भारी रनरंगी ॥

महावीर जे एक तेँ एक गाढ़े ॥ ९७० ॥
सुमानी अनी के सवै संग ठाढ़ ॥
धनी संग सोहैँ सवै तेगधारी ।
सजे साज सों आपनी आसवारी ॥

नंद भगौतीदास को उत्तर तेँ रुधि आय ।
सावँत योधा प्रवल अति तिनको लए वुलाय ॥

दया वहादुर रिपु दल खण्डन ।
तासु नंद महिमण्डल मंडन ॥
गिरधरलाल वहादुर योधा ।
चढ़्यो ओर उत्तर तेँ क्रोधा ॥

उत्तर तेँ क्रोधा जंगी योधा वसुधा सोधा एक सही ॥ ९८० ॥
जैतक जग निंत्ति जित्ति भूमण्डल कीन्ही कायम कित्ति मही ॥

(९६६ पंक्ति मे) "गरजगत" था, हमने "गरजत" कर दिया है।
(९७२ पंक्ति में) "वारि" है, "री" दीर्घ होनी चाहिए ।
(९७९ पंक्ति मे) "तीनको" था, हमने "तिनको" कर दिया है।

झाटे जेहि कूद्यो सो घर लूट्यो जहँ तहँ यूध्यो तेग गही ।
धाही रनबंका दीन्हों डंका लका सका बाढि रही ॥

नृपति छबीलेराम को वेश ।
राय गुलाब रावहु नरेश ॥
मौजदीन को तृन गनि धायो ।
दप करि ओर आपनी आयो ॥

तित तुरंग धायो दप करि आयो वीर सुहायो चाइ भरो ।
जित जंगी बान निशान लाल भूपाल छबीलेराम खरो ॥
पहुँचो तिहि ओरे अत्रनि जोरे पाइ समोरन रंग धरो ॥ ६६० ॥
राजा सों मिलि कै मुरुक्यो पिलि कै मौजदीन सो लपटि लरो ॥

या विधि और ओर की सोजैं ।
कहिहौं अव रिकाव की फौजैं ॥
अटल अमीर वीरवर बाँके ।
करनवाल एक कारन साके ॥

करता रन साके जो वल बाँके वीरत छाके मौजभरे ।
फहराती फौजै साजी सौजै जंगी मौजैं रग धरे ॥
ते वीर अमीर धीरधर युद्धर रन में कायम कीर्त्ति करैं ।
दाँकनि दै दौरैं साधि समौरैं जाही ओरैं मीर परैं ॥

वली खान दौरान वहादुर ॥ १००० ॥
कीन्ही कायम किर्त्ति धुराधुर ॥
रह्यो विरद सम सामुद्दौला ।
दल वल प्रवल वाहुवल तौला ॥

समम्सामुद्दौला भुज वल तौला वीर अगोला फील चढे ।
लरिवे की टाँही सकल सिपाही ते हमराही मोद मढ़े ॥
वख्तर दस्ताने कूंडे टाने बाँये वाने तेज वढे ।
कर कायम दस्त फतह रुस्तम सो जे रनरीति पढ़े ॥

समसामुद्दौला को भाई ।
वीर मुजफ्फरखान सवाई ॥
जंग जुरे अतिही उतपाती ॥ १०१० ॥
अरवीलो दुशमन उर घाती ॥

दुशमन उर घाती अति उतपाती आँखें राती रोस भरो ।
अरवीलो गव्वी अस्प अरव्वी तेग जुनव्वी हत्थ धरो ॥
द्वै तरकस बाँधे सायक साधे साधि उपाधे खेज करो ॥
गव्वर को गजक भूपति भंजक तेजी रंजक खानि खरो ॥

सेख इनायति खान वीर हद ।
वली वली तसु वली महम्मद ॥
दोस्तअली खाँ साहिबखानो ।
करमंडल छाजे जेहि वानो ॥

छाजै जेहि वानो साहिबखानो जग में जानो जोर छजो ॥१०२०॥
गव्बर मदभानै सर संधानै कोपि कमानै गहि गरजो ॥
सोभा को सागर वीर उजागर जानत जो मफजंग मजो ।
समसामुद्दौला संग अगोला दोस्तअली खाँ सँमरि सजो ॥

मुजफ्फर अली खान रन सज्ज्यो ।
अकबर अली खान गलगज्ज्यो ॥
खैरुद्दीं खाँ अली सु युद्धर ।
सज्यो दिलावर खान दिलावर ॥

युद्धर शोभाधर दलप दिलावर ते दरवर सरदार सजे ।
मजीठी वामर कलँगी चामर चौरासी गजगाह छजे ॥
वाँके वनैते हय पखरैते ह्वै अगरैते तेज रजे ॥ १०३० ॥
समसामुद्दौला सँग रग में जगी योधा गाज गजे ॥

सज्यो जोर सादाति खान अति ।
वीर वली माजिंदरान पति ॥

पखरैते मोगल मदमत्ते ।
ताते तुरँग तेग रँगरत्ते ॥
ते हाँ रँगरत्ते है वर तत्ते रन मै फत्ते जे चाहैं ।
हाथी मदमत्ते पक्खर घत्ते मद वरखत्ते परवाहैं ॥
आये सर मैं सजि कत्ते कर मै फरकै फरमै जे वाहैं ।
ते बीर बली माजिदरान पति सग जंग दुशमन दाहैं ॥
सु फरजद सादाति खान को ॥ १०४० ॥
शहिजादो माजिंदरान को ॥
दल सज्यो फरजंद खान को ।
गंजक अरि भजक गुमान को ॥
गाढ़े गढ़ गंजक बैरी भजक मोरचा मंजक बका है ।
रनमंडल पत्थ हत्थ गहि हत्थर अरिवर परभर शंका है ॥
अँगवै को लायक जाके सायक खरभरात डरि लंका है ।
जव वाज्यो गहरी ववं वीर फरजंद खान को डंका है ॥
दूजो सुत सादाति खान को ।
अनुज वीर फरजद खान को ॥
सवल सलावति खाँ भुव मंडन ॥ १०५० ॥
जुरत जग दुशमन दल खंडन ॥
दुशमन दल खंडन महिमा मडन डड अडडन कोपि करै ।
लरिवे को चमको तालिव जम को वीरे रग को रग धरै ॥
एमराही फोजैं वाँकी साजैं रन की मौजैं और भरै ।
माजिंदरान को शहिजादो फर सवल सलावति खाँ फहरै ॥
सुव सादाति खान को नंदन ।
सज्यो तीसरो शत्रुनिकंदन ॥
सैफ सैफखाँ की जग जाहिर ।
जासु जगमहिमा महि माहिर ॥

महिमा महि माहिर जग मे जाहिर जंग उछाहिर चित रहै ॥१०६०॥
रुस्तम सो बल मे दार्क दल में जैतक पल में फतह लहै ॥
जाकी फिरखानै आलम जानै माहि बखानै धन्य कहै ।
सुब सबल नरेस सादाति खान को अफखान जब सफ गहै ॥

जोहि अमीर खां काबिल मञ्यो ।
कोपि थान इराके खञ्यो ॥
जाको आलमगीर बखानो ।
लसै जासु बीरन मे बानो ॥

बीरन में बानो शाहि बखानो जग में जानो जोर छजै ।
काबिल को सूबो बुद्धि अजूबो अति मनसूबो तेज रजै ॥
ताही को बेटो लोह लपेटो बीरत फेटो जंग गजै ॥ १०७० ॥
जेहि लह्यो खिताब बाप को ताहि अमीर खान के ध्वान बजै ॥

घोर जोर धौंसा धुनि सञ्ज्यो ।
रन मुमताज खान गल गञ्ज्यो ॥
हातिम करन कितिक जब रिझ्झत ।
रुस्तम सौं जब अरि पर खिझ्झत ॥

जब अरि पर चढ़त सज्जि सुब दल बल भट ठट्टनि ठाढ़े खग्ग गहै ।
को भूप बीर दूजो ऐसो काहि को तुम सो रन मडि रहै ॥
सुनि बज्जत ध्वान दुबन भज्जत पुर पुर को प्रबल प्रताप दहै ।
मुमताज खान बलवान बीर ऐसी बिधि श्रीधर सुकवि कहै ॥
रीझत जब नैकहु मौलाखन की मंगन माहि को सकल लहै ॥१०८०॥
बरनै कहँ लगि दीनन के दारिद हेमदत्त सो सकल दहै ॥
दरवाजे सदा दान को, धौंसा बाजतु गहिरी बब रहै ।
मुमताज खान बलवान बीर ऐसी बिधि श्रीधर सुकवि कहै ॥

(१०७१ पंक्ति में) "कितात्र" था, हमने "खिताब" लिख दिया है ।

त्यों इमत्याज खान दल गंजक ।
जुरत जंग दुशमन कुल भजक ॥
जस इमत्याज तेज इक ठाहर ।
सज्यो फौज गरज्यो जिमि नाहर ॥

गरज्यो जिमि नाहर बीर उछाहर रन रस माहर जोर भरो ।
फौजनि को गाहक जस को चाहक दुर्जन दाहक तेज खरो ॥
आयो करि कोपै गहि गहि धोपै रन को चोपै चित्त धरो ॥ १०६० ॥
इमत्याज खान बलवान सज्जि दल हठि कर मंडल माझ अरो ॥

जित मुमताज खान दल सज्ज्यो ।
हमराही लछ हलीम खाँ गज्ज्यो ॥
जुरत जंग दुशमन दल दाही ।
सबल बीर अफगान सिपाही ॥

अफगान सिपाही रिपुदल दाही रन की हाही रोज नई ।
शमले फहराते ताजी ताने रन की घातें जानि लई ॥
बरनै कवि श्रीधर जेहि दिशि भर मुमताज खान की फौज भई ।
ताही दिशि बाँको दिलाजाक सज्ज्यो लहीम खाँ बर गजई ॥

सजि राजा गंधर्वसिंह दल ॥ ११०० ॥
आयो शाहि रिकाब बीर बल ॥
सिगरे कुरी साज साजि आए ।
बानैते रजपूत सोहाए ॥

रजपूत सोहाए साजे आए हाडा गौर सोमबशी ।
चौहान चँदेले बैस बघेले गहरवार औ रघुबशी ॥
कछवाह सुलकी हैहयवंशी सिरनेत परिहारंशी ।
गंधर्वसिंह राजा सज्ज्यो दल बुंदेलो सूरजबशी ॥

सज्यो गाजियुद्दीन खान दल ।
त्यों रुस्तम दिल खान महाबल ॥

दाउद खाँ हमराह सिधायो ॥ १११० ॥
बान दुपट्ट बाज स्वाहायो ॥
जेहि बान मोहाए रन के दाए बल सों छाए अरिदाही ।
जे मन के बंगे जग अनेगे भारी तेग है बाही ॥
खूंदै मैदानै रर के बानै चित्त न आनै सिप्पाही ।
ते सजे वीर दुद्धर युद्धर गाजुद्दीखाँ के हमराही ॥
सैफुल्लाह खान सजि आयो ।
जबरदस्त खाँ संग सोहायो ॥
कातिम बेग खान सुव सज्ज्यो ।
सुलताँ बेग खान गल गज्ज्यो ॥
बानैते सज्जे रन गलगज्जे धौंसे बज्जे भूमि हली ॥ ११२० ॥
कुल हत्थे पट्टे रन चौहट्टे खेले कट्टे मीड़ि थली ॥
अत्रनि के जोरें पूरब ओरें बैरिन की जिन फौज दली ।
ते सैफुल्लह खाँ संग रंग में हाँके बाँके वीर बली ॥
शहनशाह साहिब को मातुल ।
अटल वीरबल को बल ता तुल ॥
सजि दल खानिजाद खाँ आयो ।
शाइस्ता खाँ जेहि पद पायो ॥
पायो पद साँचो कीरति राँचो रनभू माँचो जोर भरो ।
जाकी अति बाँकी चमू चलाँकी बीरन में दाँकी देत खरो ॥
बैरिन के मत्थर कीजतु तत्थर हाँकत हत्थर हत्थ धरो ॥ ११३० ॥
यों शाइस्ता खाँ फर फतूह दाँ गहि कमान मैदान अरो ॥
शहनशाहि साहिब फरमायो ।
सजि अफरा सियाब खाँ आयो ॥
डील पील बल को जेहि दायो ।
महावीर अगहर है धायो ॥

अगहर ह्वै धायो शह फरमायो वल को दायो जाहि लसै।
अंगूठनि मसकै धरनी धसकै कूरम कसकै सेस ससै ॥
गहि कै दुहु हत्थे गै वर सत्थे मत्थनि मत्थे मीडि मसै ।
साहव समत्थ अफरासियाव खाँ यों रनमडल धूम धसै ॥

अफजल खाँ सर्दार सदर सजि ॥ ११४० ॥
आयो हाफिज इलम ओज रजि ॥
रनमडल मडक जस गाहक ।
वाहक तेग शत्रु दल दाहक ॥

शत्रुन को दाहक पत्र निवाहक जस को गाहक ओज रजो ।
रन मडल मडन वैरि विहडन लै भुज दडन जैत मजो ॥
मुमहरू को जेहि वर कत्तो केवर कर कमान जेहि साज सजो ।
यों अफजल खां सद्दर सदूर आफिज फर नाहर ज्यों गरजो ॥

वीर सैद अनवर खाँ सो है ।
देग तेग कायम जग जो है ॥
कर कमान जाकी जुलहाली ॥ ११५० ॥
जुरत जग रन परत न खाली ॥

रन परत न खाली तेग कराली जग जुलहाली कौन सहै ।
रस रूप मनौजे भूपर भौजे दिल दिल सौजे शाहि कहै ॥
विद्या गुन आकर किर्त्ति सुधाकर तेज प्रभाकर दुवन दहै ।
सज्जित सन्नाह उतसाह चित्त सैयद अनवर खाँ खग्ग गहै ॥

महमद अली वंश उतसाही
जवर सैद सावत सिपाही ॥
फौजें सत गनीम की गाही ।
वार हजार तेग जिन वाही ॥

तेगें जिन वाही फौजें गाही सवल सिपाही रन दायो ॥ ११६० ॥
गोसे दग राते ताजी नाते फरफारात मग नायो ॥

कने कंवर में भाले कर में बखतर गर में रिस छायो।
हमराह सैद अनवर खाँ मोई जवर हु जवरखान आयो॥
त्यों दरवार खान दल साजा।
जबे ध्वान श्रीधर वर वाजा॥
फर टाहर नाहर जिमि गाजे।
सुनत घोर गव्वर गन लाजे॥
गव्वर गन लाजे नाहर गाजे धौंसे वाज घहरि घने।
पखरैते तुरकी लेते फुरकी टापें खुर की छार छने॥
सोहें भट बाँके हय चढ़ि हाँके लोह ढांके वीर वने॥ ११७० ॥
दरबार खान नर जंग सु भुजवर आयो खग धर रोस मने॥
इफ्तखार खाँ जंगी योधा।
मुखलिस खान महावल क्रोधा॥
सज इलायची वेग सँधाने।
वहादुर दिल खाँ जग माने॥
मानै जग बाँको करता साको आगे दाँको दल दूमें।
भाले की नोकै सुरगति रोकै सरकी फोंके छवि भूमें॥
सन्नाहो साजै गरव गराजै हय चढि गाजै रनभूमें।
यों वहादुर दिल खाँन भुजवल अरि को दल तोरा तूमें॥
जे पुस्तैन अमीर हजूरी॥ ११८० ॥
तेग तेगहू कीरति पूरी॥
वली अरसला खाँ गुन गरवी।
दौऱ्यो गहि शमशेर मगरवी॥
शमशेर मगरवी गहि गुन गरवी चढ़ि हय अरवी सो धावो।
पखरैते वाजी तुरकी ताजी साजे गाजी सो भायो॥
सोहै गर वखतर कूडैं सिर पर कत्ते कवर रन दायो।
यों मीर अरसला खाँ अमीर रन धीर मीर फरमें आयो॥

रन रसीद खाँ फतहुल्लह खाँ ।
सरस तकर्रुब खाँ वैरम खाँ ॥
सजि जाँबाज खान रन धायो ॥११६०॥
वीर फकीरुल्लह खाँ आयो ॥

आयो रनबाँको करता साको एक कहाँ को भू फर मैं ।
टोपै सिर ऊपर तरकस कंवर भाले कर बखतर गर मै ॥
धौंसे घहराने धुज फहराने शोभत बाने दू दर मैं ।
वैरी दल भानै मानि निशानै तानि कमानैं स्यों सर मै ॥

सैद मुरुतुजा खान सुयोधा ।
बीर बारहैं वाल सु क्रोधा ॥
जिहिँ चहुँ ओर शत्रुदल रोधा ।
एक वीर वसुधापति सोधा॥

वसुधापति सोधा जंगी योधा सैयद क्रोधा ज्यों मन मैं ॥१२००॥
धाए हमराही सकल सिपाही तेगैं वाहीं वैरन मै ॥
ज्यों सिंह गराजे यों गल गाजे अरि करि लाजे ज्यों वन मैं ।
लँगवै को लायक जिनके सायक को ठहराइ सकै रन मैं ॥

टीकाराम चारु रुच नाढ़ी ।
वीर वहेलिया कीरति वाढ़ी ॥
चढी फौज मनु घटा असाढ़ी ।
फतह जासु आगे नित ठाढ़ी ॥

जनु घटा असाढ़ी फौजें वाढ़ी फतह सु ठाढ़ी पुर गाजैं ।
वंदूखें भारी सहज डरारी सकल सवारी सों छाजै ॥
आरव्वी घोरे सुलगे तोरे मुहड़ी में जोरे जे काजे ॥ १२१० ॥
यों टीकाराम कामतरु रन मै शहनशाहि आगे राजे ॥

मियां निहाल वली फतेह दां ।
लह्यो खिताव सु यातमाद खाँ ॥

मौजदीन के संगहि आयो ।
महावीर अगहर ह्वै धायो ॥

अगहर ह्वै धायो तुरग धयायो दप करि आयो रंग भरो ।
अज्जीमुश्शानी अति अभिमानी पादशाह के पाँय परो ॥
साहब सुख मानो अपनो जानो दै करि पानो हाथ धरो ।
तित शाहि हुकुम लै मुरक्यो पिलि कै जहाँदार सो जाइ अरो ॥

हीर छन्द ।

तब मौजदीँ मन रोस कै, चहुँ ओर बाँकी फौज कै ॥१२२०॥
हिरउल सु कोकिलताशखाँ, बलवंक बीर फतेह दाँ ॥
नौशेरी खाँ तसु नद है, रन के सिखे फरफंद है ॥
आजम्म खाँ तसु वीर है, सफ जंग जोर अमीर है ॥
सुब सैद राजे खाँ जहीँ, अबदुस्समुद्ली खाँ तहीँ ॥
तहँ सैद अबुलगफार है, सफजंग जोर जुझार है ॥
जित अब्बदुल्लह खान है, तेहि सामुहेँ सब ज्वान है ॥
द्वै लख सवारन साजि कै, आए बली गल गाजि कै ॥
हुसेनली खाँ जेहि दिशा, तित सज्यो जुल्फिकार खाँ ॥
द्वै लख सवार सनाह सोँ, पखरैत फील उछाह सोँ ॥
फिरि जबर जानी खाँ चढ़्यो, रनरंग रोस महा मढ़्यो ॥१२३०॥
जै जोरजाँ निस्सार खाँ, सादिक सु बुतफुल्लाह खाँ ॥
तहँ दिल दिलेरो खाँ बली, मुखत्यार खाँ जस की थली ॥
सब बीर आप साजि कै, चतुरंग दल गल गाजि के ॥
आजम्म खाँ बकसी जहीँ, सब सामुहेँ आप तहीँ ॥
राजा छबिलेराम जू, रनरंग धर जसधाम जू ॥
नव्वाब आजम खाँ जहाँ, हमराह भो राजा तहाँ ॥
महमद अमी खाँ बीर है, कमरुदीँ खाँ रनधीर है ॥

अवदुस्समुद खाँ दौर है, तहँ जकरिया खाँ जोर है ॥
सुत गाजियुद्दीँ खान को, चिकलीच खाँ बलवान को ॥
फिरि रहमरहमाँ खान जू, साजि चढ़े गहि किरवान जू ॥१२४०॥
सब मीरजुमिला संग है, द्वै लख सवार उमंग है ॥
यह बंक कोतल फौज है, सावंत उर मे ँ ओज है ॥
द्वै लाख स्वारन सौँ सजे, उप रोस ध्वान घने बजे ॥
जित परत भारी भीर है, तित लरत जोर अमीर है ॥
इहि भाँति कर फौजे ँ बटी ँ, खुर घाट दल बल छिति छवी ँ ॥
तहँ मीरजुमिला ओज सोँ, द्वै लाख कोतल फौज सोँ ॥
वानतै बाँके वीर सो, तूरान बार ममीर सो ॥
ओहि ओर कीती वंचकै, इनके करे परपंच कै ॥

हरिगीता छंद ॥

दुहुँ ओर फौजैँ साजि योँ गल गाजि भट ठाढ़े भए ।
घाजे नगारे फीलवारे घम्म धुनि धुव कंपए ॥ १२५०॥
खुर धार भार दुधार सोँ छटि छार सूरज झंपए ।
तह वहलकी झुकि मेरु हहलत पहलसम भुव वंपए ॥
दुहुँ ओर फौजनि ओज सोँ रन मौज देखा देख भो ।
हथनाल तोपै ँ बान जाल विशाल गरज अलेख भो ॥
घोरनाल घोर अँदोर दुहुँ दल रहकलास विशेष भो ।
फर दजी वहकि वँदूख अगनित तित वनैतनि तेख भो ॥
धड कडाकड़ सो अरावे छुटत टपकनि टाप की ।
चहुँ ओर घोर घटा मढी धुवधार तोपतराव की ॥
घर वान वगरत वीजुरी सन गोल ओला थाप की ।
नहिँ पहर एक पिछानि काहू रही पर की आप की ॥ १२६० ॥
छुटि गयो सो धुँधकार त्योँ भिनुसार सोँ दुहु दिसि भयो ।

ळळकार वरि अमीर सावँत चाँप सर कर वर लयो ॥
इप करत आगें बाजि बागे ँ मौज मोद मने भयो ।
धज उठे मारू मारु मारु अँदोर रनमंडल छयो ॥
तहँ तीर तर तर बान सर सर सुभट भर गोला चले ।
पग पिलत आगेहिं आगही सावंत भूप भले भले ॥
भट लाल मुख सुख भरे पीरे रग कायर हलहले ।
जिमि देखि जाचक दानि सुख मुख सूम दुख मुख बेकले ॥
इत उत दुहूं दल के जिजैं जे बीर बीर बिरी बिरे ।
ते करन साके बलिक बाँके हाँकि भट भट सों ँ भिरे ॥१२७०॥
शमशेर सराकि सिरोह वार संभार सावँत सिर चिरे ।
दोनो झमाझम झमाकि झर झर झूमि झूमि किते गिरे ॥
तहँ दौरि अगवर है सिधायो धनी मुशरफ मीर है ।
तिन मीर बुजरुक मीर अशरफ़ तासु बोर सुबीर है ॥
तब जुळफिकार गह्यो महाबल जुलफिकार अमीर है ।
झमकी दुधारनि सार सार दुधार धीरैं धीर है ॥
तहँ अली असगर खाँ महाबल मदति पहुँचो जाइकै ।
फिर जैनदीँ खाँ बीर पहुँचो तेग अंग अँगाइकै ॥
फत्तह अलीखाँ सफ शिकिनखाँ भये शामिल आइकै ।
पहुँचो हुसेन अलीयखाँ धौंसे हिरौल वजाइकै ॥ १२८० ॥
सरदार तितहिँ हुसेनली खाँ लै अमीरन संग है ।
रन भिर्यो जुल्लाफिकार खाँ हमराह गाढ़े अंग है ॥
फर मैं ँ फकाफक होत तेग कटार कटकतु फंग है ।
तहँ तीर तरकस सबै खाली भए लाख निखंग है ॥
सावँत सैदहुसेनली खाँ जोर जैतक सत्थ है ।
तहँ हत्थ हत्थनि मत्थ मत्थनि लराति लत्थनि पत्थ है ॥
गहि जबर हत्थर करे तत्थर परे बिरथ बितत्थ है ।
उहि सत्थ बार समत्थ हे एक मत्थगे बिनमत्थ है ॥

तव सैद अशरफ अगहरो भाई मुशरफ मीर को ।
समसार तासु अँगावतो अँग अंग ह्वो रन धीर को ॥ १२९०॥
हेरो सुहूरानि हाथ प्यालो हरखियो हिय वीर को ।
लीनी शहादति साहिवी सुरलोक बुद्धि गँभीर को ॥
पेल्यो मुशरफ मीर पीलनि पील वान जुझाइकै ।
तव अली मसगरखाँ पिल्यो फर धार अग अँगाइकै ॥
सुव्र जैनदी खाँ गहि जुनव्बी कर कमान चढ़ाइकै ।
फत्तह अलीखाँ शफशिकिनखाँ भए मगहर आइकै ॥
इन सवनि जाइ अँगाइ घायनि लखि लगाई जूझियो ।
गिरवान गहि गहि जात रहि रहि एक एक मरूझियो ॥
फैली फुलगैं सार सारनि वजत परत न सूझियो ।
फत्तहअलीखाँ शफशिकिनखाँ जैनदीखाँ जूझियो ॥ १३०० ॥
उत जुलुफिकारहि खान कैं सँग के अमीर किते गिरे ।
ठहराइ सकत न पाइ लखि दल आपु आइ किए थिरे ॥
हुस्सेनलीखाँ भो उतारू पिले जगी मुँडचिरे ।
उत भो उतारू जुलफिकार दुधार दोऊ भट भिरे ॥
दोऊ अमीरल उम्मराव भिरे दोऊ तेहा भरे ।
हातिम दोऊ रुस्तम दोऊ कायम दोऊ रन कर करे ॥
शमशेर सरकि सिरोह की सावंत ये दोऊ लरे ।
घन घाइ खाइ अँगाइ अंगनि अटल ह्वै दोऊ मरे ॥
मुखत्यारखाँ जाँवाजखाँ जाँनिसारखाँ आटोप कै ।
सादिक सु लुतफुल्लाहखाँ आयो महावल चोप कै ॥ १३१० ॥
फिर दिल दिलेर अलीयखाँ उमराव केतक कोप कै ।
जिहिं ओर आजमखाँ तहाँ फर लियो फौजनि छोप कै ॥
तव मारु मारु संघारु हाँ हाँ हाँ दुहूँ दल ह्वै रह्यो ।
राजा छवीलेराम आजमखाँ वली कर वर गह्यो ॥

सुलताँ कुलीखाँ सैद शेखर सूग्वियतग्वाँ ग्सि भर्यो।
फिर नेक कदम फतेह कर श्रीधर सुकवि जग जस लह्यो॥
तहँ पिले बसतर-पोश रोसभरे महा धमकी मही।
गिरवान गहि गहि जात रहि रहि हहँ हाँहरि है रही॥
को गनै तरफन तीर की वर वान वरखन अर सही।
तरवारि ते तहँ वार त्यों अँगवत चलावत हरखही॥१३२०॥
तहँ कँपत कायर गात कदली पात वात मनौं लगे।
जे सूमदान न देत हे, जिय देत भागे डग ठगे॥
जे दान निरखे दान में जिय दान हूँ मैं जगमगे।
मुख लाल रंग प्रसन्नता हिँगु लाल रंग मनो रँगे॥
राजा छबीलेराम को जंगी महावत जूझियो।
मैं मंत मुख रुख फिरत लखि वर वीर मन महँ वूझियो॥
तव आपु दै फल दै अँगूठा जोर करत असूझियो।
रनथंभ पीलहि थाँभि पेलि लगाइ राखी लूझियो॥
राजा छबीलेराम जू को खेश सजि फौजैं भली।
रन मड्यो रैया राय राव गुलावराव मही हली॥ १३३०॥
मुखत्यार खाँ वलवान की चतुरंग पृतना दलमली।
मुखत्यार खान समेति हाथी साथ जूझ्यो तेहि थली॥
तव राज श्रीगिरधर वहादुर सुव वहादुर औ फवै।
फव कील हूलि हला कियो दौरे महादल के सबै॥
दप कियो रैयाराय राव गुलाव राव जहाँ जबै।
सरदार सिगरे हाँक दै दौरे दिलेर तहाँ तबै॥
भगवन्त राय दिवान कायथ वीर वर काकोरिया।
तसु नंद राय सुवंस गहि किरवान दर वर दौरिया॥
दप कियो वेनीराम नागर नौनिहाल अगोरिया।
फिरि शुजा सैद इमाम सेख सुपीर महमद पौरिया॥ १३४०॥
नर सूर सर वानी वली अफ़गाँ वतन चिहि दौलिया।

किरवान महमद खाँ गही वा फौज फर वागै लिया ॥
फिरि सैद सुव शाकिर महम्मद मीर जिहिं रन लै लिया ।
जसु वतन ओलमगोट रो सफजंग में जस फैलिया ॥
दौन्यो गुलाव मोहैयुदीखाँ वीर आजम खान को ।
दौन्यो वली सुलताँ कुली खाँ जिनै जस किरवान को ॥
रन मड्यो शेख रसूखियत खाँ जाहि सम वलवान को ।
हरि कदम फत्ताह नेककदम जु देग तेगहु वान को ॥
नव्वाव आजम खाँ तहाँ फर भूमि हाँकि हला कियो ।
सुलताँ कुली खाँ वाग वीर रसूखियत खाँ हूलियो ॥१३५०॥
भनि सुकवि श्रीधर नेक कदम सु फौज गुर गाढ़ो हियो ।
तहँ जवर जानीखान पर झर झरनि कै वर वरखियो ॥
नव्वाव आजम खाँ महावल जवरजानीखाँ भिरो ।
रह सत्थ आजम खाँ वली अँग अंग घन घायनि घिरो ॥
शमशेर सर सर तीर तर तर मुख न काहू को फिरो ।
तहँ हसित साथी सरथ हाथी जूझि जानीखाँ गिरो ॥
इतके भए सरदार साथी सहित सेर सुघाइ कै ।
उतके किते जूझे अरूझे रहें लोह अघाइ कै ॥
नहिँ लरत चलत न वर परे दोऊ मरे अरराइ कै ।
वे लाख, ये न हजार पूरे रहि रहे ठहराइ कै ॥ १३६० ॥
तव सैद कुतुवुलमुलुक वीर अमीर मनि रेला कियो ।
वंगश महम्मद खान शादी खान कर करवर लियो ॥
रन काज राजा रतनचंद महावली हिय हरखियो ।
जैकृष्णदास दिवान निजमुदीँ अलीखाँ को वियो ॥
पुनि सैद अनवर खाँ समुद्दर खाँ सँभारी तेग है ।
मजूर तैयव तरव अरवनि यादगारो वेग है ॥
सरदार वारहँ वार रुस्तमदस्त सैद अनेग है ।
ये सैद अवदुल्लाह खाँन रिकाव तेग फते गहै ॥

इत कियो हाँकि हलाक दूनौ आनि उन आगो लियो।
बलवान कोकिलताशखाँ तसु बीर आजमखाँ कियो ॥ १३७० ॥
फिरि सैद राजे खान अबदुल समुदलीखाँ हरखियो।
नौशेरखान जुझार अबुलगफार हाँक तहाँ दियो ॥
कल लेन देत न रहकले हथनाल घन घुरनाल है।
तूफान कहर तुफंग की फहरान बान बिसाल है ॥
तहँ तीर सलभ-समूह-सम सुरलोक तर सरजाल है।
असमान भानु बिमान गो रुकि भयो धुंधूकाल है ॥
तब बीर बीर बिरीँ बिरे मनु,गहबरे भट भट भिरे।
बाजि उठो मारू मारु मारु पुकार करि करि मुरु भिरे ॥
बानैत गब्बी है अरब्बी बीर,गब्बी कर थिरे।
तहँ होत हूह फकाफकी फर मुख न काहू के फिरे ॥ १३८० ॥
तब गह्यो कुतुबुलमुलुक के वर उतरि कोकिलताशखाँ।
बंगश महम्मदखाँ इतै उत बीर आजमखान खाँ ॥
इत सूर सादीखान उत नौशेरीखाँ उनकीकखाँ।
भट भिरे एकहिं एक जे बबिरी बिरे दूहूँ पखा ॥
उत सैद राजेखान अबदुस्समुदअली बागैँ लियो।
इहिँ ओर राजा रतनचंद गयंद चढ़ि रेला कियो ॥
सरदार इत उत के भिरे रन लत्थ पत्थनि के बियो।
तरवारि तीर तुफंग साँगि कटार कै वर बरखियो ॥
जयकृष्णदास दिवान निजमुद्दी अलीखाँ को बढ़ो।
तब सैद अनवरखाँ समुंदर खान अगहर है कढ़ो ॥ १३६० ॥
मंजूर तैयवतरब साहबराय रोस महा मढ़ो।
लखि पिलनि कुतबुलमुलुक की सब पिलत रनरस रुचि चढो ॥
चहुँ ओर फौजनि फौज सो मन मौज मारु महा परी।
हाथियार भार दुधार भर मनु मघा मेघन की झरी ॥

झिरि झिलम कुंडि कुरी कुरी किरि गई बखतर की करी ।
करि मारु मारु सँभारु यार सँभारु सुनियत ललकरी ॥
घन घटा घोर घमंड सो सम घुमड़ि फर फौजें रही ।
धैँसे धोकारत गाज गहि तरवारि चमक छटा सही ॥
झर तीर गोलिन वार गोला परत ओला से तही ।
महि मची मेदनि गूद कीच कृपान सैयद जब गही ॥ १४०० ॥
मदभरे भ्रमत खरे अघाइ अघाइ करिवर थरि अरे ।
सिर सरत श्रोनितधार मनहुँ पहार सौं भरना झरे ॥
बढ़ि चली लोहुन की नदी लहरैं लखें कहि को तरै ।
तेहि तीर दलदल मास को बल ठान काहू को परै ॥

कवित्त ।

फौजबल भुजबल मन मनसूबा बल,
श्रीधर हरीफन हरषि हहलावतो ।
साहेब सरबुलंदखाँ नवाब करि करि,
पत्थ के से हत्थ महाभारथ मचावतो ॥
जहाँ शाहमौजदीं रफीउलकदर कूटि,
जेवर जुलफिकार खाँने बाँधि ल्यावतो ॥ १४१० ॥
होतो हमराह लाहानूर के समर तो,
अजीम सौं अजीम पातशाही कौन पावतो ॥

सनमुख साहजू के साजि सेन चारों अंग,
सैद अबदुल्लह खाँ घीर आयो बल में ।
बाजि उठ्यो मारु मारु मारु भो अँदोर जोर,
हाँके फील बाँके पेलि पैठे रेलि पल में ॥
श्रीधर भनत दोसतखाँ अँगार धार,
मुन कै चलाए भट वैसे चलाचल में ।

वाह वाह कहे पातशाह औ सिपाह सबै,
वाह वाह रह्यो है सवत्त दुहूँ दल में ॥ १४२० ॥

छप्पय ।

श्रीधर दलबल प्रबल लखि लोकपाल रह लज्जि ।
महमद सालेह बीर जू चढ़त कटक वर सज्जि ॥
सज्जदल रन कज्ज जनप्पसमज्जज्जयवर ।
वगग्गहनि मतंगग्गननि उतुंगग्गिरिवर ॥
रंगग्गति सुकुरंगाग्गवन तुरंगग्गति गुर ।
पच्छद्धर थिर कच्छ कर व सुलच्छभ्भर पुर ॥
लच्छ भट्ट टिट्ठय चढ्यो महमद सालेह ज्वान ।
धुजा वान झलकैं वजैं उद्धद्धुनि धुर ध्वान ॥
उद्धद्धुनि धुर ध्वान द्धुकि सज युद्धज्जै भर ।
लक्ख भ्भट रण दक्ख क्खुमसुवियक्ख क्कै कर ॥ १४३० ॥
वारब्बलिय उछारभ्भरि क्खग वाहब्बल किय ।
वान ब्बिकट कमान कठिन कृपान द्दुर लिय ॥
कर लिय खग कोप्यो वली, महमद साले ज्वान ।
अरि के वढ़ गढ़ मढ़नि पर, कियेउ सुकोपि पयान ॥
कोपप्पकरि पयानप्पथि घन ध्वान द्धलक्कत ।
लच्छ च्छहरि वरच्छ च्छविवर स्वच्छ च्छलकत ॥
युद्ध ज्जुरत सक्रुद्ध भ्भट रण उद्ध द्धमकिय ।
वाहक वलिय उछाह भ्भरि खग वाहब्बल किय ॥
खग्ग वाह वलकिय वली महमद सालेह वीर ।
दुवन ठट्ट कट्टिय भयो श्रोनन्नद भरि नीर ॥ १४४० ॥
श्रोनन्नद भरि नीर भ्भरित गँभीर भ्भलक्कत ।
लुत्थत्थिरन उलत्थज्जलजिय जुत्थत्थलकत ॥

बीच खलननगी चचल हर कीचचभकत ।
मुंड भरि करि कुभ भरत सुअभ भभकत ॥
महमद सालेह बीर कोपि भारी रन मंडेउ ।
अरि की प्रतन प्रचंड खंड खंडन करि खंडेउ ॥
गीध गृद बेताल मास हर मुंडमाल लिय ।
रुहिरय रुहिर अपार पाइ भैरव गलगज्जिय ॥
ताकि शत्रु सूर को ग्रास कर श्रोनसिंधु गज्जन कियो ।
लखि परव कृपानी रावरी मनहुँ दान उत्तम दियो ॥ १४५० ॥

कवित्त ।

फौजनि की घटा की घमंड घोर घेरु करि,
मौजदीन मघवा के मन में उछाह भो ।
तोप गरजत तरवारि बीजु तरजत,
बरषत बाननि अचल चाग्यो राह भो ॥
तब गिरिवर कर धरि गिरिवरधर,
श्रीधर भनत ब्रजमडल की छाँह भो ।
अब गिरिधर लाल बहादुर वीर,
समसेर गहि कर पातसाही को पनाह भो ॥
मार्‍यो जोर जंग रंग आजम अजीम जू सों,
गालिब गनीम आयो महमद गरूर है ॥ १४६० ॥
श्रीधर सरबुलंद खाँ नबाब दौर कै,
हिरौलही हटायो कीनो चमू चकाचूर है ॥
मारि खानि खालि में बिदारि राउ दलपति,
गंजेउ जुलफिकार खान को गरूर है ।
वाह वाह करे पातशाह ओ सिपाह रही,
सही समसेर तेरी शाहि के हजूर है ॥

वाह वाह कहै पातशाह औ सिपाह सबै,
वाह वाह रह्यो है सबत्त दुहू दल में ॥ १४२० ॥

छप्पय ।

श्रीधर दलवल प्रवल लखि लोकपाल रह लज्जि ।
महमद सालेह बीर जू चढ़त कटक बर सज्जि ॥
सज्जदल रन कज्ज जनप्पसमज्जज्जयवर ।
वगग्गहनि मतंगग्गननि उतुंगग्गिरिवर ॥
रंगग्गति सुकुरंगाग्गवन तुरंगग्गति गुर ।
पच्छद्दर थिर कच्छ क्कर व सुलच्छभ्भर पुर ॥
लच्छ भट्ट टट्टिय चढ़्यो महमद सालेह ज्वान ।
धुजा वान झलकैं वजैं उद्धद्धुनि धुर ध्वान ॥
उद्धद्धुनि धुर ध्वान द्धुकि सज युद्धज्जै भर ।
लक्ख भ्भट रण दक्ख क्खुमसुवियक्ख क्कै कर ॥ १४३० ॥
बारब्बलिय उछारभ्भरि क्खग वाहव्वल किय ।
वान ब्बिकट कमान क्कठिन कृपान द्दुर लिय ॥
कर लिय खग कोप्यो बली, महमद सालें ज्वान ।
अरि के वढ़ गढ़ मढ़नि पर, कियेउ सुकोपि पयान ॥
कोपप्पकरि पयानप्पथि घन ध्वान द्धलक्कत ।
लच्छ च्छहरि धरच्छ च्छविवर स्वच्छ च्छलकत ॥
युद्ध ज्जुरत सक्रुद्ध भ्भट रण उद्ध द्धमाकिय ।
वाहक वलिय उछाह भ्भरि खग वाहव्वल किय ॥
खग्ग वाह बलकिय वली महमद सालेह बीर ।
दुवन ठट्ट कट्टिय भखो श्रोनन्नद भरि नीर ॥ १४४० ॥
श्रोनन्नद भरि नीर भ्भरित गँभीर भ्भलक्कत ।
लुत्थत्थिरन उलत्थज्जलजिय जुत्थत्थलकत ॥

बीच ख्वलनतगी चञ्चल हर कीन्व्चभकत ।
मुंड भभरि करि कुम्भ भभरत सुअम्भ भमभकत ॥
महमद सालिह वीर कोपि भारी रन मंडेउ ।
अरि की प्रतन प्रचंड खंड खंडन करि खंडेउ ॥
गीध गूद वेताल मास हर मुंडमाल लिय ।
रुहिरय रुहिर अपार पाइ भैरव गलगज्जिय ॥
ताकि शत्रु सूर को ग्रास कर श्रोनसिंधु गज्जन कियो ।
लखि परब कृपानी रावरी मनहुँ दान उत्तम दियो ॥ १४५० ॥

कवित्त ।

फौजनि की घटा की घमड घोर घेरु करि,
मौजदीन मघवा के मन में उछाह भो ।
तोप गरजत तरवारि बीजु तरजत,
बरषत बानन अचल चाम्यो राह भो ॥
तब गिरिवर कर धरि गिरिवरधर,
श्रीधर भनत ब्रजमडल की छाँह भो ।
अब गिरिधर लाल बहादुर वीर,
समसेर गहि कर पातसाही को पनाह भो ॥
माच्यो जोर जंग रंग आजम अजीम जू सों,
गालिब गनीम आयो महमद गरूर है ॥ १४६० ॥
श्रीधर सरबुलंद खाँ नवाब दौर कै,
हिरोलही हटायो कीनों चमू चकाचूर है ॥
मारि खानि खालि में विदारि राउ दलपति,
गंजेउ जुलफिकार खान को गरूर है ।
वाह वाह करे पातशाह औ सिपाह रही,
सही समसेर तेरी शाहि के हजूर है ॥

जहाँदार शाह शमशेर जोर जेर करि,
जहाँ शाहि रफीसान की ही कौन मी तथा ।
आजम के संगन से जग महरायो त्यौं,
जुलुफिकार खाँ को फेर लावतो वहै पथा ॥ १४७० ॥

श्रीधर सरबुलंद खान किरवान धनी,
रुस्तम के काम कै वढ़ावतो वड़ी कथा ।
वार वार कहे पातशाह अपसोस करि,
हाय हमराह या अजीम शाह के न था ॥

श्रीधर फरुकसाहि मौजदीं भिरे हैं दोऊ,
पूरो नेक कद्म कौं करम अलाह को ।
कीनो खग वाह मोगलनि के दलनि भो,
हिरोल की पनाह जाके कोप की पनाह को ॥
गालिब गनीम गाज गंज मगरूरिन को,
गरब को दलिक गजब गुमराह को ॥ १४८० ॥

देखै पातशाह उत शाह पायो निज दले,
वाह वाह करन सिपाह पातशाह को ॥
भारी पातशाह दोऊ आगरे अगारी लरैं,
धौंसन की दुहूँ ओर श्रीधर धुकार है ।
वाजे बीर बीर गोला वान तरवारि तीर,
वाजे मार मार होत मोर मार मार हैं ॥
शेख खैरुल्लाह अलेख रन कीनो कैई दिनो,
जुगनि के भूखे मसहारिन अहार है ।
घाय खाए वेसुमार वैठि दल अरि कै सु,
मार तें गिराए वीर वाँके वेसुमार है ॥ १४९० ॥

वखतरपोस पखरैत फील स्वारन की,
कारी घटा भारी ज्यौं पयोद प्रलै काल को ।

श्रीधर भनत गोला बान सर झर भर,
बरखत थाँभै को करैरी तरवाल को ॥
दिलाजाक डपटि हलीम खाँ वरग जाइ,
दल मींडि मान्यो मौजदीन विकराल को ।
शोनित सलित तट्टनाँचै प्रेत पहपट,
घट घट घूँटे कर खप्पर कपाल को ॥
इत गल गाजि चढ्यो फरुकसियर शाहि,
उत मौजदीन करि भारी भट भरती ॥ १५०० ॥
तोप की डकारनि सोँ वीर हहकारनि सोँ,
धौँसा की धोकारनि धमकि उठी धरती ॥
श्रीधर नवाव फरजंद खाँ सु जंग जुरे,
जोगिनी अघायो जुगजुगनि की वरती ।
हहन्यो हिरौल भीर गोल पै परी ही तूँ न,
करतो हिरौली तौ हिरौलै भीर परती ॥
मान्यो मौजदीनै फर विफारि पलक बीच,
कीनो मौजदीन को कटकु अढ़ अढ़ है ।
मींडि गढ़ आजम अजीम अजमति गढ़,
कूधो जटवारे के सकल मढ़ी मढ़ है ॥ १५१० ॥
श्रीधर भनत महाराज श्रीछबीलेराम,
तेरे वैरी बाँची काहू सूर की न सढ़ है ।
जीत्यो क्यारो ओर मेरी फिकिर सो कीजे जोर,
ऐसे महाराजा सोँ गहाति गाढ़ो गढ़ है ॥
फिर मण्ड्यो श्रीधर छबीलेराम राजा,
पातशाह कोँ हिरौल पातशाहत को पाहरू ॥
तोप की तरापैँ तोरि गोला को गुलेल गनि,
पेलि दल मान्यो मौजदीनै गहि गाहरू ॥

चके हरि हर चभ देषि आनपत्त थभ,
जैत रनखंभ वीर विक्रम उछाहरू ॥ १५२० ॥
सुरुखरू आप भयो आवरू दिलीस पायो,
माहरू रफीक भो मुखालिफ सियाहरू ॥

भालनि सों भाला भिन्यो बरछा सौं बरछानि,
सरे समसेर समसेरनि सुरंग मैं ।
तीरन को कीनो तन तीरनि तुनीर तोरु,
तोरादार जोरन न पावतु सुफंग मैं ॥
जंग सुलतानी मैं कहानी कैसो कीनो काम,
श्रीधर छबीलेराम राजा रनरंग मैं ।
साढ़ेतीनि हाथ कद दसहथा हाथी चढ्यो,
दोई हाथ होत हैं हजार हाथ जंग मैं ॥ १५३० ॥

श्रीधर अवाई देषि फरुकसियर जू की,
आयो मत्त मौजदीं अनेक अभिलाख कै ।
घरिकु घमड घोर माच्यो गइ मुरि बागैं,
अडियौ छबीलेराम राजा मनं माख कै ॥
मारि पर दल हरखायो जूथ जोगिनी को,
करत बडाई सिवासंकरहि साख कै ॥
एकै वीर कैयो लाखैं एक के न आन्यो मन,
एक ही गनत कैयो लाख कैयो लाख कै ॥
माच्यो जोर जंग दुहूँ ओर पातशाहनि सौं,
उत तें उमड़ि दल मौजदीं को धायो है ॥ १५४० ॥

आजमखाँ जू के संग शाह की नजरि आगें,
सैद सुलतान जहाँ जग तें जगायो है ।
श्रीधर सुकवि तीर नरल तुफंग सौं,
सिनारा देखो चुनि सरदारनि गिरायो है ।

खाली कीनो पल में अमारी हौदा हाथिन को,
धोखो होत यामें स्वार आयो के न आयो है ॥
फरुकसियर शाहि जहाँदार शाहि दोऊ,
आगरे अमारी अरे पातसाही हेत में ।
श्रीधर बजत मारू बाजे बाजे बीरन के,
मुरि गई बागें रहे केतक न चेत में ॥ १५५० ॥

अंगद सो अड़ो पातशाहति पलटि डार्‍यो,
एवी एतो आजमखाँ सबल बनैत में ।
महा हुव भारथ को कमनैती पारथ की,
जैसो भीम भुज बल भाख्यो कुरुखेत में ॥
श्रीधर कृपान गहि मुसलह खान रन,
कीनो घमसान यों मसान हहरात हैं ॥
झुडनि झहूले प्रेत लोहू के प्रवाह परे,
लाती लैरैं पैरै पेलि पियत अन्हात हैं ।
खोपरा लौं खोपरिन फोरैं गलकत गदू,
पोरीलों पलासी खाल खैंचि खैंचि खात हैं ॥ १५६० ॥
पाखर से खापरनि चहुवा चुरैलनि के,
चाइ भरे चर चर चपरि चबात हैं ॥

छप्पय ।

भट्ट टट्ट डट भट्ट भट्ट हरि आभट्ट हरि ।
उद्धत जुद्धत क्रुद्ध सुद्ध गज्जत जिमि केहरि ॥
धीर मुसल्लेह खो जलद्द उल्लद दल सज्जिय ।
पक्खर पक्खर लक्ख स्याह सन्नाह समज्जिय ॥
बल तडित तेग तरपत कड़ाकि रस वर श्रीधर धर कुरेड ।
तहं गोलापत्थर वित्थरिय सो भरि मन्थर थत्थरि थुरेड ॥

मीर मुशर्रफ धीर कोपि भारी रन मंडेउ ।
अरि की प्रतन प्रचंड खड खंडह करि खंडेउ ॥ १५७० ॥
गीध गूद बेताल मासहर मुंडमाल लिय ।
रुहिर प रुहिर अपार पाइ भैरव गल गज्जिय ॥
तजि सत्तु सूर को ग्रास फर श्रोन सिंधु मज्जन किएउ ।
लखि परत कृपानी रावरी मनहुँ दान उत्तम दिएउ ॥

कवित्त ।

आयो मौजद्दीन उत इतते फरुकसाहि,
दुहुँ ओर सोर ललकारैं धीर बीर की ॥
भरा भरी गोलन की झरा झरी तेग की,
कटारिन की कराकरी तरातरी तीर की ।
श्रीधर बिलोयो दौरि बीरन की भीर रुंड,
मुंडन को मेरु श्रोन सरिता गँभीर की ॥ १५८० ॥
वाह वाह करै पातसाहरु सिपाह सब,
देखो रे दिलेरी यारो मुशरफ मीर की ॥
कोऊ ढूँढै कोऊ वारो काहू मै न गुन भारो,
कोऊ वारनारी बस मन मैं न आयो है ।
सुंदर सुजान सुजा सीलवंतु ओजवान,
दान पूरो एकै तोहि विधि ने बनायो है ॥
श्रीधर भनत सानी जलालदीं अकबर,
फरुकसियर पातशाह वर पायो है ।
बाल पातशाहति सोयंवर कर करति,
तोहि देखि रीझि जयमाल पहिरायो है ॥ १५९० ॥
गेड़ी सौं अरावो टारि भेड़ी सौं बिदारि दल,
खल दल खूँदि कीनो छीन एजद्दीन को ।

धावा करि पूरब तें डावा डारि फौजनि को,
मीन सो पकरि लीनो शाहि मौजदीन को ॥
श्रीधर भनत पातशाहनि को पातशाह,
फर्रुकसियर भो पनाह दुहूँ दीन को ॥
मुलुक मुलुक दौरी फरदै फतूहनि को,
काँप्यो डरि गबर हरख बाढ्यो दीन को ॥

साजि दल फरुकासियर पातशाहपति,
श्रधिर बढ़त जब सहज शिकार है ॥ १६०० ॥
घूमरू सुभासा में अराम इसफामें कित,
सुनि जलधर धुनि धौंसा की धुकार है ॥
हबसाने हहल खँधारिन के खल भल,
बलक बदकसान जान न रूका रहे ।
तारा दे केवारा दे केवारा देके वारा देहि,
पौरि पौरि लंकपुर परत पुकार है ॥
दक्खिन दहेलि पेलि पच्छिम उदीची जीति,
पूरब अपूरब हठीलो हाथु लायो है ।
श्रीधर शहनशाहि फरुकसियर नर,
सातो दीप सरहद्द हिंद की मिलायो है ॥ १६१० ॥
दिन दिन बाढ़ति है बाढ़िहइ दिन दिन,
दिन दिन दूनी पातशाहति बढ़ायो है ।
और पातशाह पातशाही पावैं जब पाए,
तोसों पातशाह पातशाही जेब पायो है ॥
शादी शादियाने के उछाह आतपत्रनि के,
अग अग बाढ़े रंग बाढ़े हैं रखत के ॥
तेरी पातशाही पातशाही पायो जेब फल,
टाढे नभ सुमन प्रसून बरखत के ॥

श्रीधर भनत पातशाहन को पातशाह,
फरुकसियर नर जबर नखत के ॥ १६२० ॥
तिनके बखत जे वै लखत तखत तोहि,
बैठत तखत बाढ़े बखत तखत के ॥

इति ।



॥ श्रीः ॥

शरीरपुष्टिविधान.

अर्थात्

शरीर सदा हृष्ट पुष्ट बलिष्ठ रहने और होनेकी विधि।



जिसको

पंडित-मुरलीधर शर्मा संपादक "आरोग्यसु-
धाकर" पत्र-फ़र्रुख़नगरने,

पाँच अध्यायो (१ प्रकीर्णाध्याय, २ क्षीणाध्याय,
३ नपुंसकाध्याय. ४ जराध्याय, ५ संगृही-
ताध्याय) मे निर्माण किया।



इसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया।

संवत् १९५८, शके १८२३.

शरीरपुष्टिविधानकी अनुक्रमणिका।



विषय.	पृष्ठांक.

प्रकीर्णाध्याय १.

क्षीणाध्याय २.

नपुंसकाध्याय ३.

जराध्याय ४.

संगृहीताध्याय ५.

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

ओंतत्सत्

शरीरपुष्टिविधान.

प्रकीर्णाध्याय १.

यह बात पूर्ण रूपसे सिद्ध होचुकी है कि देश, समय, प्रकृति, अवस्था आदिके अनुसार खाने, पीने, सोने, परिश्रम आदि आहार विहार करने तथा रोगोंसे यथा संभव बचनेहीसे शरीर पुष्ट रहता है और अन्यथा करनेसे शरीर रोगी और निर्बल होता है, इस हेतु हम इस अध्यायमें प्रथम इनबातोंका संक्षिप्त वर्णन करते हैं, क्योंकि उक्त बातोंके परिज्ञान विना मनुष्य आहार विहार की योग्यता अयोग्यताका मूल हेतु नहीं जानसकते ॥

देश ।

जिस प्रांतमें नदी, नाले, डाबर, झील, दलदल, छोटे वृक्ष, वन अधिक हों वह अनूप देश कहाता है वहाँकी प्रकृति वादी (वातल) कफकारक ठंढी होती है ॥

और जहाँ सूखे रेतले मैदान या जंगल हों उसे जांगल कहते हैं इसकी प्रकृति गरम पाचक पित्तकारक होती है और मिश्रितकी मिश्रित ॥

या यों समझो कि जहाँ कुवोंमें जल निकटहो वहाँकी प्रकृति वादी (मरतूब) और जहाँ नीचाहो पैत्तिक ॥

समय-(ऋतु.)

मेष वृषकी संक्रान्ति ग्रीष्म, मिथुन कर्ककी प्रावृट्, सिंह कन्याकी वर्षा, तुला वृश्चिककी शरद, धन मकरकी हेमंत, कुंभ मीनकी वसंतऋतु होतीहै-ग्रीष्ममें गरमीकी अधिकता और शरीरमें वायुका संचय होता है, प्रावृट् गरमी और वर्षाकी संधि है इसमें वायुका कोप होता है, वर्षामें रतूबत अधिक होती है और पित्तका संचय होता है, शरद वर्षा और जाडेकी संधि है इसमें पित्त का कोप होता है, हेमंत सरदी इसमें पाचक जठराग्नि बलवान् होती है और कफका संचय होता है तथा वसंत सरदी और गरमीकी संधि है इसमें कफ का कोप होताहै॥

इस हेतु ग्रीष्ममें गरम और वादी पदार्थोंसे बचना, दिनमें सोना, अतिश्रम रहित रहना तथा बहुतही कम (१५ दिनमें एकवार) मैथुन करना चाहिये-वर्षामें मैले स्थान, मैलीवस्तु वो नदीका जल, गरिष्ट भोजन से बचना ऊँचेस्थानोंमें रहना चाहिये और सरदीमें चिकना पुष्ट भोजन तैलाभ्यंग और व्यायाम (कसरत) करना उत्तम है ॥

तथा गेहूं, दूध, घृत, खाँड, कूवेका ताजा जल, छाया

में सोना, अपनेसे छोटी स्त्री सदा पथ्य अर्थात् (तन्दु-रुस्तोंको) गुणदायक है ॥

कोदोंका अन्न, बासीदूध, उखराया दही, बेसमय अति भोजन, अपनेसे बड़ी स्त्री, प्रभातका सोना सदा कुपथ्य है॥

प्रकृति।

जो मनुष्य रूखाहो, दुबलाहो, बाल कड़ेहों, बहुत बोले वह वायु (सौदावी) प्रकृति होता है ॥

तथा जो दुबलाहो, पर रूखा नहो, क्रोधयुक्त हो, पाचक (हाजमा) शक्ति अधिकहो, बुढ़ापेके पहलेही बाल श्वेत होने लगें तो उस मनुष्यको पित्तप्रकृति (सफरानी) जानो॥

और जो स्थूल मोटा हो, गंभीर हो, बाल नरमहों, कमबोले, अधिक सोवे, स्थिर बुद्धि हो, उसे कफ (बलगमी) प्रकृति समझो ॥

वात प्रकृतियोंको रूखा, ठंढा, वादी भोजन हानि-कारक और तर गरम श्रेष्ठहै ॥

पित्त प्रकृतियोंको पतला, ठंढा, तर भोजन गुण-कारी और गरम कड़ा चरपरा हानिकारक ॥

कफप्रकृतियोंको श्रम, रूक्ष, गरम आहार, शोपण वस्तु गुणदायक और पतली, ठंढी, अतिचिकनी, गरिष्ट दुःखदायी है ॥

शरीर पुष्टिके लिये ऐसी बातोंका अवश्य विचार चाहिये ॥

अवस्था ।

बालअवस्थामें पित्तकी अधिकता होती है और फिर ज्यों ज्यों मनुष्यकी अवस्था बढ़ती है त्यों त्यों कफ और वायु बढ़ते हैं ॥

तरुण अवस्थामें कफकी और वृद्ध अवस्थामें वायुकी अधिकता होती है ॥

इसीसे बालकोंकी जठराग्नि प्रबल होती है कई बारका भोजन किया भली भाँति पचजाता है–तरुणावस्थामें बल पराक्रम अधिक होता है श्रम मैथुनकी शक्ति अधिक होती है जठराग्नि स्थिर होजाती है जिससे दो बारका किया भोजन तो ठीक पचजाता है अधिक नहीं ॥

वृद्ध अवस्थामें वायुकी अधिकतासे शरीरकी धातु उपधातु सब (अच्छा भोजन मिलनेपरभी) स्वयं शोषित होने लगती हैं वायु दोषसे जठराग्नि विषम होती है जिसमें कभी दोबारका भी भोजन पच जाता है कभी नहीं पचता भोजनके रसको वायु शोष लेता है इससे शरीर क्षीणही होता जाता है ॥

स्वस्थ (तंदुरुस्त) मनुष्योंको शरीर पुष्टिकारक नित्यके वर्त्ताव संक्षिप्त दिनचर्या ।

सब मनुष्योंको प्रभात (पिछली चार घड़ी रात) से उठना चाहिये प्रभात सोने या पड़े रहनेसे आलस्य शिथिलता प्रमेह आदि होते हैं ॥

फिर कुछ ईश्वरका चिंतवन कर दिशा शौच जाना चाहिये शौचके समय शिर अवश्य ढापना चाहिये नहींतो मलकेअणु मूर्द्धाको हानि करते हैं ॥

फिर हाथ मुँह धो कुल्लीकर कीकरकी दंतधावन (दतौन) करनी चाहिये कीकरकी दतौनसे दांत दृढ़ होते हैं तथा नींब, खदिर, महुवा और अपामार्गकी दतौनभी श्रेष्ठ हैं ॥

इस पीछे शरीरपर विशेषकर शिर मुँह पाँव हाथ पर तैल मलना उचित है गरमीमें चौथे आठवेंदिन और सरदीमें ७ दिनमें तीनवार वा नित्य तैलमर्दनसे त्वचा मुलायम मजबूत होती हैं खुश्की रुधिरविकारमेंहितहै, रूखे मनुष्योंको इसकी अधिक जरूरत है ॥

तैल मलनेके पीछे उबटन मलना चाहिये इससे तैलकी ऊपरी चिकनाई और मैल नाश होजाता है ॥

शरीर पुष्टिके लिये ऐसी बातोंका अवश्य विचार चाहिये ॥

अवस्था ।

बालअवस्थामें पित्तकी अधिकता होती है और फिर ज्यों ज्यों मनुष्यकी अवस्था बढ़ती है त्यों त्यों कफ और वायु बढ़ते हैं ॥

तरुण अवस्थामें कफकी और वृद्ध अवस्थामें वायुकी अधिकता होती है ॥

इसीसे बालकोंकी जठराग्नि प्रबल होती है कई बारका भोजन किया भली भाँति पचजाता है—तरुणावस्थामें बल पराक्रम अधिक होता है श्रम मैथुनकी शक्ति अधिक होती है जठराग्नि स्थिर होजाती है जिससे दो बारका किया भोजन तो ठीक पचजाता है अधिक नहीं ॥

वृद्ध अवस्थामें वायुकी अधिकतासे शरीरकी धातु उपधातु सब (अच्छा भोजन मिलनेपरभी) स्वयं शोषित होने लगती हैं वायु दोषसे जठराग्नि विषम होती है जिसमें कभी दोबारका भी भोजन पच जाता है कभी नहीं पचता भोजनके रसको वायु शोष लेता है इससे शरीर क्षीणही होता जाता है ॥

स्वस्थ (तंदुरुस्त) मनुष्योंको शरीर पुष्टिकारक नित्यके वर्त्ताव संक्षिप्त दिनचर्या ।

सब मनुष्योंको प्रभात (पिछली चार घड़ी रात) से उठना चाहिये प्रभात सोने या पड़े रहनेसे आलस्य शिथिलता प्रमेह आदि होते हैं ॥

फिर कुछ ईश्वरका चिंतवन कर दिशा शौच जाना चाहिये शौचके समय शिर अवश्य ढापना चाहिये नहींतो मलकेअणु मूर्द्धाको हानि करते हैं ॥

फिर हाथ मुँह धो कुल्लीकर कीकरकी दंतधावन (दतौन) करनी चाहिये कीकरकी दतौनसे दांत दृढ़ होतेहैं तथा नींब, खदिर, महुवा और अपामार्गकी दतौनभी श्रेष्ठहैं ॥

इस पीछे शरीरपर विशेषकर शिर मुँह पाँव हाथ पर तैल मलना उचित है गरमीमें चौथे आठवेंदिन और सरदीमें ७ दिनमें तीनवार वा नित्य तैलमर्दनसे त्वचा मुलायम मजबूत होती हैं खुश्की रुधिरविकारमेंहितहै, रूखे मनुष्योंको इसकी अधिक जरूरत है ॥

तैल मलनेके पीछे उबटन मलना चाहिये इससे तैलकी ऊपरी चिकनाई और मैल नाश होजाता है ॥

फिर शरीरके समान निवाये जलसे स्नान करना उचित है स्नानके समय देशी वस्त्रके अँगोंछेसे शरीर मलना और साफ करना चाहिये ॥

फिर निर्मल धोती पहिने । ऋतुके अनुसार तिलक लगाना चाहिये गरमीमें चंदन कपूर, सरदीमें चंदन केशर, वर्षामें तीनोंको मिलाकर मस्तकपर लेपन करना—इससे दुर्गंधि वायुका बुरा प्रभाव न हो मस्तक (मृदुस्थान) सरदी, धूप, लू, ओस आदिसे बचारहे.

फिर नयनामृत अंजन नेत्रोंमें लगाना और ऋतुओंके अनुसार उज्ज्वल वस्त्र पहिनना.

ये सब कृत्य दोघंटामें अच्छे प्रकारसे हो सकते हैं फिर यदि हो सके तो कुछ भ्रमण पर्यटन करना और ४ घड़ी दिन चढ़े लौटकर आजाना फिर अपना निज कृत्य करना ॥

पहरदिन चढ़ेपीछे दोपहर पहिले भोजनकरना चाहिये भोजनमें पहले मधुर स्निग्ध पदार्थ खाने चाहिये पीछे चरपरे खट्टे अंतमें कटु और कसैले और समाप्ति के समय मधुररससे समाप्त करना हो सके तो अंतमें निवायादुग्ध पीना उचित है ॥

जल भोजनसे पहिले पीना उचित नहीं भोजनके मध्यमें अच्छाहै, अंतमें पीना कफ बढ़ाताहै ॥

भोजनमें रस विरुद्ध पदार्थ मिलाकर कभी न खाना चाहिये जैसे गुड़, दूध, लवण, मिठाई आदि तथा योग विरुद्ध, क्रिया विरुद्ध, मानविरुद्ध, समय विरुद्ध, देश विरुद्ध भोजन करनाभी उचित नहीं—इनका विस्तार-पूर्वक वर्णन आरोग्यसुधाकर तथा सत्कुलाचरणमें देखो भोजन इतना अधिक न करना चाहिये जिससे अजीर्ण हो या सोनेको जी चाहे ॥

दिनमें सोना कभी नहीं चाहिये हाँ गरमी ग्रीष्म ऋतुमें दोषनहीं तथा वातप्रकृति रूखे दुबले मनुष्यों कोभी प्राय आवश्यकता हो दिनमें सोना बुरा नहीं, थके रातके जागेको दिनको सोना अच्छाहै पर कफ प्रकृतियोंको दिनका सोना बहुत बुराहै संध्याको पर्यटन अवश्य करना चाहिये ॥

रात्रिचर्या ।

संध्यामें पढ़ना, भोजन, मैथुन, सोना बहुत बुरे हैं चारघड़ी रातगये पीछे रात्रिको भोजन करना उचितहै रातका भोजन पुष्ट, बलिष्ठ, वाजीकरण होनाचाहिये रातको भोजनके पीछे जहांतक हो निवाया दूध पीना उचित है ॥

पढ़ना लिखनाहो तो सरसोंका तेल जलाकर उस-की रोशनीमें पढ़ना चाहिये मिट्टीके तेलका उज[illegible]

रोशनी नेत्रों और दिमाकको हानिकारक है—रातका पढ़ना गरमीमें ठीक नहीं पहर रात गये पीछे सोना चाहिये ॥

मैथुन सब ऋतुवोंमें तीन दिनमें एकवार और ग्रीष्म (गरमी) में १५ दिनमें एकवार चाहिये ॥

अपनी अवस्थासे वड़ी, रोगयुक्त, रजस्वला मैली स्त्री उचित नहीं ॥

अति मैथुन करना वहुत बुराहै निर्वलता का सबसे मुख्य कारण यही है—अतिमैथुनसे अनेक दारुण रोग लगजाते हैं, संतान नहीं होती, उमर घटजाती है, आनंद भी नहीं रहता इससे मैथुन कम करना ही परम पुरुषार्थका हेतु है ॥

इन सब बातोंका विशेष वर्णन हमारी पुस्तक सत्कुलाचरण या आरोग्यसुधाकरमें देखो ॥

(२) क्षीणाध्याय

इस अध्यायमें निर्बलता (कमजोरी) एवं धातुक्षीणता क्षयी कृशता आदिका वर्णन किया जायगा ।

निर्बलता ।

इस समय हमारे भरतखंडमें निर्बलताकी इतनी अधिकता है कि सौ पीछे नव्वे क्या पंचानवे यही

कहते हैं कि हम बहुत निर्बल हैं काम करनेमें पूर्ण शक्ति और उत्साह नहीं और विशेषकर इस समयके जवान लड़कोंमें इस बातकी बहुतही अयोग्य शिकायत है ॥

इसके मुख्य हेतु कई प्रतीत होतेहें ॥

(१) बाल अवस्थाका विवाह और द्विरागमन होकर स्त्रीका अनुचित संसर्ग ॥

(२) कुपात्र बालकोंके संगसे बुरे विचार और खोटे चरित्रोंका ध्यान ॥

(३) घृत दुग्ध आदिकी महँगीसे यथोचित् स्निग्ध भोजनकी स्वल्पता ॥

(४) किसी न किसी द्रव्यादिकी चिंता ॥

(५) मैथुनका अनर्थ रूपक अधिक प्रचार ॥

(६) देशमें आये दिनकी बीमारियों के कारण शारीरिक सत्त्वका घटना ॥

(७) स्वदेश प्रकृति विरुद्ध आहार विहारकी पृथा इत्यादि कई कारण हैं ॥

इनमें कई कारण तो ऐसे हैं कि जिनका प्रतीकार हरएक मनुष्य स्वयं नहीं करसकता परंतु हाँ इस उपाधिके प्रबल कारण बालविवाह तथा अयोग्य चरित्रोंका ध्यान अति मैथुन आदिसे बचनाही परमोप-

कारक है—क्योंकि सब धातुवोंके निचोड़ शरीरके सार भाग वीर्यकी रक्षा करनी ही शरीर पुष्टिका एक दृढ़ उपाय है॥

और यह तो प्रगट ही है कि जिस मनुष्यकी धातु पुष्ट होगी उसके शरीरमें अधिक बल होगा तथा प्रायः रोगभी नहीं होंगे ॥

निर्बल मनुष्योंको अधिक परिश्रम तथा मैथुन गरिष्ठ भोजन अधिक सरदी और गरमीसे बचे रहना चाहिये ॥

धारोष्ण गोदुग्ध तथा अजादुग्ध मिश्री सहित सेवन करना श्रेष्ठ है ॥

निर्बल मनुष्योंको पुष्ट औषध, इतना गुण नहीं करती जितना दुग्ध करता है। हाँ यदि जठराग्नि बिगड़ी होतो उसका बल अवश्य करना ॥

धातु क्षीणता ।

अति श्रम करने, अधिक मैथुन, चिंता, शोक आदिसे एक अथवा कई धातुवोंमें क्षीणता होजाती है अथवा दोषोमें॥

[1]रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और वीर्यसे सात

---

१ रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान्मेदः प्रजायते ॥ मेदसोऽस्थि ततो मज्जा मज्जातश्शुक्रसंभवः ॥ १ ॥ सुश्रुतः

धातु हैं और वायु, पित्त, कफ ये तीनदोष, इनकी उत्प-त्ति सुश्रुत में यों लिखी है कि आहारसे रस बनताहै और रससे रक्त (खून) तथा रक्तसे मांस मांससे मेदा मेदासे अस्थि (हड्डियें) और अस्थिसे मज्जा और मज्जासे शुक्र अर्थात् वीर्य बनताहै ॥

उत्तरोत्तर उत्कृष्ट होनेके कारण वीर्य सब धातुवों का सारभाग है ॥

वातक्षयमें अल्प चेष्टाहो मंदवचन बोले संज्ञामें विकार हो जाय ॥

तथा जिसके शरीरकी कांति घटजाय, जठराग्नि मंदहो जाय, श्लेष्मा बढ़जाय उसके पित्तक्षय जानिये ॥

जिसके संधिशिथिल हों, रूक्षता और दाहहो, मूर्च्छा आने लगे उसके कफक्षय जानिये ॥

रस क्षीण होजानेसे कलेजा दूखने लगे, कंठमें खुश्की रहे त्वचा शून्यसी होने लगे, प्यास अधिक लगे ॥

और जिसके रक्तमें क्षीणताहो शिरा मंदहो ठंढे और अम्लरसकी इच्छा अधिक हो त्वचा मुलायम न रहे ॥

---

१ वातक्षयेऽल्पचेष्टत्वं मंदवाक्यविसंज्ञता ॥ पित्तक्षयेऽधिकः श्लेष्मा वह्निमान्द्य प्रभाक्षयः ॥ सन्धय शिथिला मूर्च्छा रौक्ष्य दाह कफक्षये ॥ १ ॥ भावप्रकाशः ।

[1] कपोल, ओठ, स्कंध, हृदय, पेट, संधि पिंडियोंमें शुष्कता शरीरमें रूखापन और चमकावैसाहो नाड़ी शिथिलहों तो मांसक्षय जानिये ॥

मेदक्षीण होनेसे तिल्ली वढ़जाय, संधिशिथिल पड़ जाय, शरीर रूक्षहो, चिकनाई पर रुचिहो ॥

अस्थियों में क्षीणता होनेसे हडफूटनहो, शरीर रूखा हो, दाँत और नख अधिक टूटै अर्थात् निर्बल होजायँ ॥

मज्जाकी क्षीणतामें वीर्यकी अलपता संधियोंमें पीड़ा अस्थियोंमें शून्यता हो ॥

वीर्यमें क्षीणता होतो रतिमें (वार वार या थोड़ी २) शक्तिहो लिंग और अंडकोशमें व्यथा होने लगे और देरसे वीर्यपात हो और जब वीर्यपात होतो स्वलपवीर्य हो तथा कभी २ कुछ रुधिर आजाय ॥

---

१ हृत्पीडा कंठशोषश्च त्वक्शून्या तृट्रसक्षये । शिरा श्लथा हिमाम्लेच्छा त्वक्पारुष्यं क्षयेसृजः ॥ गंडोष्ठकंधरास्कंधवक्षोजठरसंधिषु । उपस्थशोषः पिंडीषु शुष्कता गात्ररूक्षता॥ तोदो धमन्यः शिथिला भवेयुर्मांससंक्षये । प्लीहाभिवृद्धिः संधीनां शून्यता तनुरूक्षता ॥ मार्थना स्निग्ध मांसस्य लिंगं स्यान्मेदसः क्षये । अस्थिशूलस्तनौ रौक्ष्य नखदंत त्रुटिस्तथा ॥ अस्थिक्षये-शुक्राल्पत्वं पर्वभेदस्तोदः शून्यत्वमस्थिनि । मज्जासंक्षये-शुक्रक्षयेरतौ शक्तिर्व्यथा शेफसि मुष्कयोः । चिरेण शुक्रसेकः स्यात्सेके रक्ताल्पशुक्रता ॥ भावप्रकाशे ।

इस क्षीणतामें प्रायः यहभी देखा जाता है कि जिस २ प्रकारके द्रव्यों और रस आदिसे वह क्षीणता नाशहो अर्थात् जिस २ दोष या धातुकी शरीरमें स्वल्पता हो उसीके वर्द्धन करनेवाले पदार्थोंपर मनुष्यों की सत्य रुचि होती है—देखो भावप्रकाश जैसे ॥

वातक्षीण मनुष्यकी रूखे, कड़वे, कसैले, शीत, लघु पदार्थोंपर रुचिहोती है—तथा पित्तक्षीणकी रुचि तिल, माष, पिष्ट अन्न, तीक्ष्ण, लवण, दधि, अम्लरस, क्रोध, गरम देश और समयकी ओर अधिक होती है कफक्षीण पुरुष मीठारस, स्निग्ध भोजन, शीत, अम्ल, लवण, गरिष्ठभोजन, दधि, दुग्ध और दिनके सोनेको अधिक चाहते हैं, रसक्षीण—ठंढा पानी, रातमें निद्रा, मधुररस चाहतेहैं, रक्तक्षीण—इक्षु, मांस, रस, गुड़, शहद, घृत, द्राक्षा, अनार, नमकीन और चिकने भोजनमें रुचि रखतेहैं, मांसक्षीण—दधि, सिद्ध अन्न, संयाव(हलुवा)चूरमा, मधुर, स्निग्ध भोजनकी विशेष इच्छा करते हैं—मेदक्षीण पुरुषको घृत, वसा, तंडुल, पायसादि तथा क्षारवस्तुकी अभिलाषा होती है ॥

अस्थिक्षीणको दुग्ध अथवा मांस आदिकी रुचि होय, मज्जाके क्षयमें घृत माखन शिखरनकी रुचि होती है और वीर्यक्षयमें दुग्ध मिश्री माप तथा गोक्षुरादि पदार्थोंपर रुचि होतीहै ॥

[1]कपोल, ओठ, स्कंध, हृदय, पेट, संधि पिंडियोंमें शुष्कता शरीरमें रूखापन और चभकावैसाहो नाड़ी शिथिलहो तो मांसक्षय जानिये ॥

मेदक्षीण होनेसे तिल्ली बढ़जाय, संधिशिथिल पड़ जाय, शरीर रूक्षहो, चिकनाई पर रुचिहो ॥

अस्थियों में क्षीणता होनेसे हडफूटनहो, शरीर रूखा हो, दाँत और नख अधिक टूटै अर्थात् निर्बल होजायँ ॥

मज्जाकी क्षीणतामें वीर्यकी अल्पता संधियोंमें पीड़ा अस्थियोंमें शून्यता हो ॥

वीर्यमें क्षीणता होतो रतिमें (वार वार या थोड़ी २) शक्तिहो लिंग और अंडकोशमें व्यथा होने लगे और देरसे वीर्यपात हो और जब वीर्यपात होतो स्वल्पवीर्य हो तथा कभी २ कुछ रुधिर आजाय ॥

---

१ हृत्पीडा कंठशोषश्च त्वक्शून्या तृट्रसक्षये । शिरा श्लथा हिमाम्लेच्छा त्वक्पारुष्यं क्षयेसृजः ॥ गंडोष्ठकंधरास्कंधवक्षोजठरसंधिषु । उपस्थशोषः पिंडीषु शुष्कता गात्ररूक्षता॥ तोदो धमन्यः शिथिला भवेयुर्मांससंक्षये । प्लीहाभिवृद्धिः संधीनां शून्यता तनुरूक्षता ॥ प्रार्थना स्निग्ध मांसस्य लिंगं स्यान्मेदसः क्षये । अस्थिशूलस्तनौ रौक्ष्य नखदंत त्रुटिस्तथा ॥ अस्थिक्षये-शुक्राल्पत्वं पर्वभेदस्तोदः शून्यत्वमस्थिनि । मज्जासंक्षये-शुक्रक्षयेरतौ शक्तिर्व्यथा शेफसि मुष्कयोः । चिरेण शुक्रसेकः स्यात्सेके रक्ताल्पशुक्रता ॥ भावप्रकाशे ।

इस क्षीणतामें प्रायः यहभी देखा जाता है कि जिस २ प्रकारके द्रव्यों और रस आदिसे वह क्षीणता नाशहो अर्थात् जिस २ दोष या धातुकी शरीरमें स्वल्पता हो उसीके वर्द्धन करनेवाले पदार्थोंपर मनुष्यों की सत्य रुचि होती है–देखो भावप्रकाश जैसे ॥

वातक्षीण मनुष्यकी रूखे, कड़वे, कसैले, शीत, लघु पदार्थोंपर रुचिहोती है–तथा पित्तक्षीणकी रुचि तिल, माष, पिष्ट अन्न, तीक्ष्ण, लवण, दधि, अम्लरस, क्रोध, गरम देश और समयकी ओर अधिक होती है कफक्षीण पुरुष मीठारस, स्निग्ध भोजन, शीत, अम्ल, लवण, गरिष्ठभोजन, दधि, दुग्ध और दिनके सोनेको अधिक चाहते हैं, रसक्षीण–ठंढा पानी, रातमें निद्रा, मधुररस चाहतेहैं, रक्तक्षीण–इक्षु, मांस, रस, गुड़, शहद, घृत, द्राक्षा, अनार, नमकीन और चिकने भोजनमें रुचि रखतेहैं, मांसक्षीण–दधि, सिद्ध अन्न, संयाव(हलुवा)चूरमा, मधुर, स्निग्ध भोजनकी विशेष इच्छा करते हैं–मेदक्षीण पुरुषको घृत, वसा, तंडुल, पायसादि तथा क्षारवस्तुकी अभिलाषा होती है ॥

अस्थिक्षीणको दुग्ध अथवा मांस आदिकी रुचि होय, मज्जाके क्षयमें घृत माखन शिखरनकी रुचि होती है और वीर्यक्षयमें दुग्ध मिश्री माष तथा गोक्षुरादि पदार्थोंपर रुचि होतीहै ॥

उपरोक्त क्षयोंमें तत्तद्वर्धन जो द्रव्यादि ऊपर लिखे अथवा अन्य पदार्थ जिसमें कोई विशेष हानिका भय नहो तो गुणकारक भी होते हैं, इससे क्षीण मनुष्यको जिस वस्तुकी सत्य रुचि हो यथार्थ में वह उसकी परम औषध है परंतु मात्रामें बहुत थोड़ी २ देना योग्य है ❀ ॥

सब धातुवोंकी क्षीणतामें दुग्ध, विशेषकर सद्य गो-दुग्ध अथवा अजा (बकरी) का दूध बहुतही श्रेष्ट है॥ और मैथुन से बचना परम पथ्य है ॥

क्षय रोग ।

इसे राजयक्ष्मा तथा शोष रोग भी कहते हैं। इसम शरीरकी सब धातु सूखकर मनुष्य अत्यंत कृश (दुबला) और निर्बल होजाता है यह अनुलोमज तथा प्रतिलोमज भेदसे दो भाँतिका उत्पन्न होता है ॥

जिसमें मंदाग्नि–अजीर्ण–तथा विषमाग्नि अथवा विषम आसन (बैठे रहना) अनुचित या बहुत गरिष्टभोजन करना या अतिचिंता शोक आदिसे भोजनका ठीक परिपाक न होना आदिसे प्रथम रस बनाने वाली

❀ दोषधातुमलक्षीणो बलक्षीणोपि मानवः ॥ तत्तत्संवर्द्धनं यत्तदन्नपानं प्रकांक्षति ॥ १ ॥ यद्यदाहारजातं तु क्षीणः प्रार्थयते नरः ॥ तस्य तस्य न लाभेन तत्तत्क्षयमपोहति ॥ २ ॥ भा०प्र० ।

नाड़ियोंमें विगाड़ होने या रुक जानेसे भोजनादिका रस ठीक २ नहीं वनता और न रुधिर उससे वनकर शरीर पुष्टिका कारण होता किंतु रसके विगाड़ और क्षीण होनेसे रुधिरमें बिगाड़ और क्षीणता होगी फिर उससे मांस क्षीण होजायगा इसीभाँति मांस क्षीण होनेसे मेद क्षीणहोगी फिर उससे अस्थि, मज्जा और वीर्य यथाक्रम क्षीण होकर सूखजाते हैं—इसे अनुलोमज (सीधी क्षयी) कहते हैं ॥

तथा अत्यंत मैथुन करने—अथवा बुरे बुरे विचारों और उत्पातोंसे वीर्य नाश होने—अतितीक्ष्ण औषध सेवन करने स्तंभनकी लालसासे शोषणद्रव्योंका उपयोगकरने अति नशाकरने, वलवती, वृद्धा, क्षीणा,उपदंशादि रोगवती रजस्वलादि स्त्रियोंका संग करनेसे वीर्यमें क्षीणता होजाती है, फिर वीर्य क्षीण होनेसे मज्जामें क्षीणता होती है, फिर मज्जासे अस्थिमें तथा मेदा और मांस फिर रुधिर और रस यथाक्रम क्षीण होकर सूखने लगते हैं। इसे प्रतिलोमज (विपरीत) क्षयी कहते हैं वैद्यकमें इसके अनेक भेद कहे हैं इसके मुख्य लक्षण ये हैं कि भोजन शरीरको न लगे; देह गरम रहे, श्वास,

खाँसी, थूकमें रक्तता, स्वरभेद (१) दोषोंके अनुसार लक्षण (२)

शरीर बहुत रूखाहो, स्वरभंग (आवाज बैठी) हो, शरीरमें दरद रहे कंधे पसलीमें संकोचहो तो वातक्षयी है-शरीर गरम रहे दाह रहे दस्तहों मुहँसे रुधिर थूके तो पित्तकी राजयक्ष्मा जानिये ॥

शरीर ठंढा रहे, भारीसा रहे, भोजनमें रुचि नहो, श्वास खाँसी हो तो कफकी यक्ष्मा कहिये ॥

जिसमें सबके लक्षणहों तो सन्निपात क्षयी है ॥

विशेष कारणोंसे उत्पन्न हुए शोषके लक्षण।

अतिमैथुन-शोक-बुढ़ापा-व्यायाम-मार्गव्रण-और अभिघातन शोषके लक्षण ॥

अति मैथुनजन्य शुष्कतामें शुक्रका नाश, देह पीली पड़ना, अतिनिर्बलता आदि होते हैं ॥

शोकजन्य यक्ष्मामें उसी वस्तुका ध्यान अत्यन्त शिथिलता पांडुता होती है ॥

१-तीनो दोषोंमेंसे वायु रसवहा नाडियोंमे भरजाय अथवा पित्त उन्हें सुखादे तथा कफसे रुक जाय तो रक्तादि यथाक्रम नहीं बन सकते। २-भक्तद्वेषां ज्वरे श्वासः कासशोणितदर्शनम् ॥ स्वरभेदश्च जायेत षड्रूपे राजयक्ष्मणि ॥ १ ॥ भा. म.।

बृद्धावस्थाकी शुष्कतामें दुबलापन, बुद्धि, बल इंद्रियमंद शरीर और ग्रीवामें कंप, अंगोंमें प्रसुप्ति अधिक ये लक्षण होते हैं ॥

मार्गशीर्षमें थकानसी सदा रहती है ॥

व्रणजन्य यक्ष्मामें मनुष्यकी कांति घटजाय तृषा अधिक रहै ॥

क्षयीकी चिकित्सा ।

इसकी मुख्य चिकित्सा यह है कि यदि अनुलोमज क्षयी होतो जठराग्नि ठीक करने और भोजनका रस शरीरमें पहुँचानेवालीपाचन और दीपन औषधियों का उपयोग करना चाहिये जिससे रसकी शुद्धि और पुष्टि होकर फिर उससे शुद्धरक्त आदि उत्पन्न होकर वीर्य पर्यंत धातुवोंको पुष्टकरें । जैसे यथोक्त अदरक सेवन—अथवा लवंगादि चूर्ण या क्षुद्रादिक्षार ॥

और यदि प्रतिलोमज हो तो ऐसा यत्न करना चाहिये जिससे वीर्यकी पुष्टि होकर मज्जा आदि रसपर्यंत पुष्ट हों जैसे च्यवनप्रसा (एकभाँतिका आमलोंका अवलेह) अथवा कूष्मांडपाक अजादुग्ध ॥

सारांश यह है कि अनुलोमजकी औषधि प्रायः जठराग्निवर्द्धन पाचन और प्रतिलोमजकी पुष्टि ॥

परंतु ये निम्न लिखित प्रयोग सबप्रकारकी क्षयी में श्रेष्ठ हैं दालचीनी १ भाग, इलायची छोटी २ भाग, छोटी पीपल ४ भाग, वंशलोचन ८ भाग, मिश्री १६ भाग इनसबका आधा गोघृत और सबकी समान शहद मिलाकर अनुमान ४ से ६ मासेतक नित्य चाटे ऊपर बकरीका दूध पीवे ॥

अथवा इसके साथ पावरत्ती नित्य मालती वसंतरस या मृगांक या सुवर्णका वर्क सेवन करना बहुत श्रेष्ठ है ॥

पथ्य–अनुलोमजक्षयी में गरिष्टभोजन तथा वायु कफकारक वस्तुसे बचना और प्रतिलोमजमें रूखा भोजन अति गरम वस्तु परिश्रम तथा मैथुनका अवश्य पथ्य बचाव करना चाहिये ॥

कारण विशेषसे उत्पन्नहुए शोथका उपाय ।

अति मैथुनजन्य शोपमें स्निग्ध मांस रस घृत युक्त मधुरभोजन–ऐसा यत्न जिससे वीर्य पुष्ट हो–जैसे घृत मधुयुक्त दुग्ध और आनंदके वचन हित हैं और मैथुनका त्याग–

अति परिश्रमजन्य शोपमें शरीरमें बल देनेवाली वस्तु जैसे संयाव अथवा घृतपूप (पूवे) ॥

अध्वशोषमें थकान दूर होनेवाली वस्तु जैसे दुग्ध, दिवाशयन ॥

व्रणशोषमें घृत संयावादि स्निग्ध भोजन देना परंतु दुग्ध गुणकारक नहीं है ॥

शोकजन्यका यत्न संतोष और ज्ञानके वचन हैं तथा शोक भुलाना ॥

जराशोष बुढ़ापेकी क्षयी असाध्य होती है इसका यत्न ईश्वरस्मरणके सिवाय और क्या है ॥

प्रमेह रोग ।

हम प्रमेह (जरियान) कोभी इसी अध्यायमें लिखना उचित जानते हैं—

शरीरका वीर्य वहुत पतला होकर मूत्रके संग या पहले पीछे या और समय गिरे उसे प्रमेह रोग कहते हैं—प्रमेहरोग विषम आसन बैठे रहने, अधिक सोने, या पड़े रहने परिश्रम न करने—गुड़ दही मिठाई अधिक खाने, अथवा अति मद्य पीने, खारी कडुवा रस अथवा खटाई अत्यंत खाने, भोजनपर भोजन करने, अधिक परिश्रम तथा मैथुन करने, मैथुनका अधिक ध्यान रखने, अति गरम औषध और पदार्थ खाने आदिसे मनुष्योंको होता है ॥

प्रमेहका पूर्वरूप यह है कि जिह्वा दाँत मलीन हों

हाथ पाँव गरम और देह चिकनीसी हो तृषा अधिक लगे मुँह मीठा रहे ॥

प्रमेह २० प्रकारका होता है १० प्रकारके कफ प्रमेह ६ प्रकारके पित्तप्रमेह और ४ प्रकारके वात प्रमेह-इनके सिवाय १ मधु प्रमेह जो त्रिदोपसे होता है ॥

प्रमेहके लक्षण ।

(१) जिसमें सफ़ेद और ठंढा निर्गंध तथा अधिक अथवा बार बार जलके समान मूत्र आवे तो उदक प्रमेह जानो ॥

(२) ईखके रससमान मूत्र होतो इक्षुप्रमेह है ॥

(३) कुछ गाढासा (थोड़ी देर रखनेसे गाढा होजाय) ऐसा मूत्र होतो सांद्रप्रमेह है ॥

(४) मद्यके समान या (रखनेसे नीचे गाढा ऊपर पतला रहे) ऐसा मूत्र होतो सुरा प्रमेह है ॥

(५) पानीमें घुलीपीठीके समान तथा श्वेत और कुछ कष्टसे मूत्र आवे, मूत्र ठंढा हो और वेगके समय रोमांच हो तो पिष्टप्रमेह है ॥

(६) मूत्रके साथ शुक्र गिरे तो शुक्रप्रमेह है ॥

(७) जिसके मूत्रमें वालूरेतसी कफकी फुटक होंतो सिकताप्रमेह है ॥

(८) बहुतही ठंढा मूत्र होतो शीत प्रमेह जानो ॥

(९) वार २ थोड़ा २ मूत्र आवे तो शनैः प्रमेहहै ॥

(१०) जिसके मूत्रमें या पीछे तारसे छूटें उसे लाला प्रमेह कहते हैं ॥

ये उपरोक्त १० कफके प्रमेहहैं ॥

(११) जिसके मूत्रमें खारकीसी गंध तथा रंग होतो क्षार प्रमेहहै ॥

(१२) जिसके मूत्रका रंग नील वर्ण हो तो नील प्रमेहहै ॥

(१३) मूत्रका रंग श्याम होतो काल प्रमेह है ॥

(१४) हलदीके समान, दाहयुक्त कडुवा मूत्र हो तो हारिद्र प्रमेह है ॥

(१५) मजीठेके पानी समान दुर्गंधियुक्त मूत्र होतो मंजिष्ठ प्रमेह जानो ॥

(१६) जिसके मूत्रका रंग लाल अथवा रक्तसहित पीछे जलन हो तो रक्त प्रमेह समझो ये उक्त ६ पित्तके प्रमेह हैं ॥

(१७) वसा (चरबी) समान मूत्रहो तो वसाप्रमेहहै ॥

(१८) मज्जा समान चिकना मूत्र होतो मज्जा प्रमेह है ॥

(१९) कसैला रूखा मीठा मूत्र होतो क्षौद्र प्रमेह जानो

(२०) हस्तिके मद सम मूत्र हो वेग अधिक न हो तो हस्तिप्रमेह जानिये ये ४ वायुके प्रमेह हैं ॥

प्रमेहके उपद्रव ।

जब प्रमेह बढ़ने लगता है तब निम्न लिखित उपद्रव होजातेहैं जैसे कफके प्रमेहमें अरुचि, मंदाग्नि, अजीर्ण, छर्दि, निद्राधिक्य, खाँसी तथा पीनसहो और पित्तके प्रमेहमें इंद्रिय और पेडूमें जलन, ज्वर, दाह, प्यास, अधिक मूर्च्छा, चक्कर, अतीसार, खट्टीडकार आवें ॥

और वायुके प्रमेहमें विषमाग्नि, हृदय दूखना, शूल, कँपकँपी, निद्राकी अलपता, शुष्कता, श्वास तथा खाँसी आदि उपद्रव होते हैं ॥

कफप्रकृति अथवा मेदा अधिक जिनके शरीरमें हो (स्थूल) आदमियोंके कफ प्रमेह और पित्तप्रकृति (आतशी मिजाजों) के पित्त प्रमेह और सूखे रूखे दुबले वात प्रकृतियों के वायुके प्रमेह बहुधा होतेहैं ॥

प्रमेहका यत्न ।

कफ प्रमेह की चिकित्सा गरम रूक्ष प्रमेहरण रंग औषध और आहार विहार हैं ॥

पित्तप्रमेहकी रूक्ष शीतलता सहित प्रमेह नाशक औषध और आहार विहार हैं ॥

वायुके प्रमेह इसीलिये असाध्य हैं कि प्रमेह की औषधि प्रायः शोषण होती हैं जो वायुको उलटी बधावें और कोप करें इसीसे इसकी चिकित्सा टेढ़ी है अर्थात् स्निग्ध और प्रमेहनाशक क्रिया करनी कुछ अनुकूल होती है ॥

कफप्रमेहकी औषधि ।

(१) हर्रकी छाल—नागरमोथा—कायफल—लोध इनका क्वाथ कर शहदके संग पीना श्रेष्ठ है॥

(२) अथवा त्रिफला, दारुहलदी, नागरमोथा, देवदारु इनका क्वाथ मधुयुक्त पीना ॥

अथवा कुरय्या (कुड़ा) त्रिफला, दारुहलदी, मोथा, वीजवंध का क्वाथ मधुयुक्त अथवा त्रिफला शहदके संग सेवन करना अथवा त्रिफला चूर्ण गोक्षुरु (गोखरू) का चूर्ण दोनों समान ले शहद संग सेवन करना ॥

अथवा त्रिफलामोदक का सेवन करना अथवा दशमूलासवया देवदारु अरिष्ट या वर्बूलारिष्टका यथोक्त सेवन करना ॥

अथवा कीकरके फलों का चूर्ण ४ भाग गोखरू

(१) भावप्रकाशात् । (२) शार्ङ्गधरात् ।

१—२—३—४—त्रिफलामोदक तथा दशमूलासव व बब्बूलारिष्ट आदिकी क्रिया अगाडी संगृहीताध्यायमें होगी ॥

का चूर्ण २ भाग हर्र का चूर्ण १ भाग चक्र (दालचीनी) आधाभाग इन सबको एकत्र कर शहदके संग ६ मासा नित्यखाय तो श्रेष्टहै ॥

पित्तप्रमेहकी औपधि ।

खस, लोध, आँवला, हर्र इनका क्काथ मिश्री अथवा शहदके संग पीना ॥

मुलहटी, श्वेतचंदन और दाख (मुनक्का) इनका शीत कषाय मिश्रीके संग पीवे या इनका शरबत पकाकर उसमेंसे नित्यपीवे तो पित्तप्रमेह तथा रक्त-प्रमेह नष्ट होय ॥

अथवा गोखरूके चूर्णमें समान मिश्री मिला गोदुग्ध अथवा बकरीके दूधके संग लेना ॥

अथवा त्रिफला और गोखरू समान ले रात्रिमें भिगो प्रभात छानकर शहदके संग पीवे तो पित्तके प्रमेह दूरहों ॥

आँवलापाक (एकभाँतिकाजवारिश आँवलाभी) पित्त प्रमेहमें परम हित है ॥

वायुके प्रमेहकी औषधि ।

त्रिफला और गोखरूके चूर्णमें उसके समान गो घृत और सबकी समान शहद मिलाकर चाटना ॥

अथवा सिंहामृत घृत या धन्वंतर घृत श्रेष्ठ है ॥ अथवा त्रिफलाघृत सेवन करना ॥

ऐसी औषध जो साधारणतासे सब प्रमेहोंमें उपकारक हैं।

(१ गोखरूपाक का सेवन ॥

(२) सुपारी पाक ॥

(३) प्रमेहहरण या प्रमेहसेतु चूर्ण ॥

(४) विधिपूर्वक शुद्ध शिलाजतु (सलाजीत) का सेवन करना ॥

(५) भस्म लोह (सार)❀(कारबोंट आफ आइरन) तथा बंग या रूपरस किसी वैद्यकी सम्मति या डॉक्टर-की रायसे लेना ॥

मधुप्रमेह।

प्रमेहोंकी असाध्य और दारुण अवस्थामें मधुप्रमेह होताहै अर्थात् प्रमेहरोगवाला मनुष्य उचित उपाय न करे किंतु उलटा कुपथ्य करता रहे जिससे प्रमेह पुराना पड़कर त्रिदोषजन्य मधुप्रमेह होजाता है ॥

इसके लक्षण येहैं कि, मधुके समान मूत्र बारबार आवे मूत्रमें चीटियां लगने लगैं शरीर अत्यंत दुर्बल होजाय सब धातु उपधातु मूत्र मार्ग हो वहते वहते

❀ कारबोट ऑफ आइरन–अंग्रेजीमतसे फुकी हुई फौलादको कहते हैं–यह अंग्रेजी दवाफरोसोसे मिलती है ॥

मनुष्य बहुतही क्षीण होजाय बहुत बढ़ने पर मूत्रका ज्ञानभी न रहे ॥

इस मधुप्रमेह की सर्वोत्कृष्ट औषध शुद्ध शिला-जतु (सलाजीत) के समान और कोई नहीं है यथार्थ तो यह है कि प्रमेह मात्र कोईसा और कैसाही क्यों नहो सलाजीत सबके लिये बहुत श्रेष्ठ औषध है ॥

प्रमेह के पथ्य और अपथ्य ।

कफके प्रमेहमें दही, दूध, मक्खन, खोवा, नया गुड़, खटाई, पीठीकी वस्तु, डाबरका पानी आदि और कफकारक वस्तुवों से बचना उचितहै--तथा पित्त प्रमे-हमें; खटाई, गुड़, तेल, तिल, मधु, लालमिरच, लालश-क्कर, धूप, अग्निसेवासे परहेज रखना चाहिये तथा वा-युके प्रमेहमें रूखाअन्न नशा करना बारबार भोजन से बचना चाहिये ॥

और अनुचित गरिष्ठ भोजन नशा अधिक करना तथा स्त्रीसंगमका तो सभी प्रमेहमात्र में निषेध उचित है ॥

तथा प्रमेहवाले को चाहिये कि गेहूँ, चना, मूंग, अरहर आदि अन्न पुराना खाय अथवा यव और पुराना रक्तशालि खाय ॥

और जिन वस्तुवोंसे प्रमेहकी उत्पत्ति हो उनसे

अवश्य परहेज रखना चाहिये। जो प्रमेह रोगके आरं-भमें लिखे गयेहैं ॥

(३) नपुंसकाध्यायः।

जो मैथुन करनेकी सामर्थ्य न रखते हों उन्हें नपुं-सक अथवा क्लीब (हिजड़ा या मुखन्नस) कहतेहैं—वै-द्यक शास्त्रमें इस नपुंसकताके सात भेद कहेहैं ॥

(१) सहज (जो जन्मसे नपुंसक हो) ॥

(२) मानस जो मनकी शंका ग्लानि भयादिसे हो॥

(३) वीर्यके विकारसे हो ॥

(४) वीर्यकी क्षीणता और कमीसे हो ॥

(५) मेढ्र इंद्रियके दारुण रोगसे हो ॥

(६) वीर्यवाहिनी आदि शिराके छेदनादिसेहो ॥

(७) अति ब्रह्मचर्य (शुक्रकी स्थिरता) से हो ॥

सहज क्लीब।

(जो जन्मसे नपुंसक हो) देखो सुश्रुत तथा भाव-प्रकाश (१)

माता पिताके वीर्यदोष या गर्भविकार गर्भवतीके विपरीत और अयोग्य आहार विहार दौहृदकी अप्राप्ति अथवा पूर्वसंचितपाप आदिके कारण कई मनुष्य माताके गर्भहीसे क्लीव पैदा होतेहैं—बहुतोंके तो प्रत्यक्ष

१ जन्मप्रभृति यत्क्लैब्यं तत्क्लैब्य सहज स्मृतम्। (सुश्रुत.)

चिह्नही यथावत् नहीं होते जैसे हरनगरमें (जनखे या हीजड़े) प्रसिद्ध हैं इनमें कई पुरुषसंज्ञक क्लीव होते हैं कई स्त्रीसंज्ञक ॥

परंतु बहुतसे जन्म क्लीव ऐसेभी होतेहैं जिन्हें बाल अवस्थामें साधारण लोग नहीं जान सकते फिर ब्याह गौना होकर स्त्री संगमके समय भेद खुलता है तो दोनों ओर रोना पड़ता है बालविवाहमें यहभी एक बड़ा हानिकारक दोष है ॥

हमारे सुश्रुतादि ग्रन्थों में इनके कुंभक आदि कई भेद लिखे हैं जिनका वर्णन ग्रन्थबाहुल्य निष्प्रयोजनता और अश्लीलताके कारण नहीं कियागया ॥

ये जन्मक्लीब प्रायः तो असाध्यही होते हैं अर्थात् जिनके चिह्नही यथावत् नहीं होता उनके किसी यत्नसे चिह्न नहीं बन सकता परंतु यथा योग्य चिह्न और शिरा (नसें) हों तो जन्मक्लीव भी शायद सुधर सकते हैं पर उनके लिये ईश्वरकी कृपा और परिपूर्ण वैद्य और यथोचित सामग्रीका होना है ॥

(२) मानस क्लैब्य[1] ।

जो मनकी शंका ग्लानि भय आदिसे हो अर्थात् कभी अपनेसे बलवती (जबरदस्त) बड़ी या दुष्टा वैर

१—द्वेष्यस्त्रीसम्प्रयोगाच्च क्लैब्यं तन्मानसं स्मृतम् (सुश्रुत, भावप्र०)

रखने वाली, कुवचन कहने वाली, मलीन, वृद्धा या न-
वीन या रोगवाली आदि स्त्रियोंके संग समय तथा संग-
मके समय अति भय, रोग, लज्जा, शोक, ग्लानि आदि
के हेतु मनका वेग कामदेवकी ओर न हो तो उस स-
मय मनुष्य पुरुषार्थहीन होजाता है और फिर उस
बातकी शंका और ध्यान मनपर ऐसे छा जातेहैं कि
वह अपनेको नपुंसक मानलेता है और जब उसे
संभोगका काम पड़ता है तब वही मनका भ्रम उस
समयभी ऐसा छाजाताहै कि कुछनहीं बनपड़ता और
फिर वारंवार ऐसाही होताहै ॥

मानस क्लैव्यके लक्षण और उपाय ।

एकांत तथा निद्राके समय प्रायः कभी पुरुषार्थ
और चैतन्यताहो परं च स्त्री जनोंकेनिकट आतेही सब
कुछ उत्साहतक नष्ट होजाय ॥

इसका उपाय यहीहै कि ऐसे मनुष्यको तसल्लीदे
और भुलावेदे कि तुझे कुछ रोग नहीं है कुछ हिचका-
वट है सो तुरंत मिट जायगी संदेह मतकर—और
विशेषकर ऐसी बातें उसकी स्त्री कहनेसे बड़ा लाभ
होता है ॥

और यदि कोई मूर्ख या दुष्टा स्त्री उसे उलटा उल-
हना देने लगे तो यह हिचक और उपाधि औरभी

बढ़ जातीहै—पर हिचक निकलनेपर कुछ रोग नहीं रहता ॥

(३) वीर्यविकारजक्लैव्यं ।

जो वीर्यके बिगाड़ (अत्यंत पतला पड़ने) आदि विकारसे हो ॥

अर्थात् कटु रस, खटाई, लवण, अति गर्म, रूक्ष औषधि (पित्तके बहुतही बढ़ाने वाली) आहार विहार आदिके अधिक सेवन करनेसे पित्त बहुत ही बढ़कर सौम्य (वीर्य पैदा करनेवाली धातुवोंको क्षीणकर बिगाड़) देताहै जिससे वर्तमान वीर्य बिगड़ (अति द्रवहो) कर निकम्मा होजाता है आगामीके लिये शुद्ध वीर्य उत्पन्न होनेका क्रम नष्ट होजाताहै—जिससे मनुष्य नपुंसक होजाताहै ॥

वक्तव्य—इससमयके अति बलाकांक्षी पुरुष अनेक मूर्खलोगोंके कहनेपर अनेक अनुचित औषधियों (कच्ची पक्की अशुद्धधातु अथवा कुचला आदि विष या नशेके पदार्थ या और अत्यंततेज वस्तु) का उपयोग करते हैं या तीक्ष्ण तिला आदिका वर्त्ताव करते हैं जिससे यातो तुरतही बड़ी हानि होती है या थोड़े दिन

---

१ कटुकाम्लोष्णलवणैरतिमात्रोपसेवितैः । सौम्यधातुक्षमोदृष्टः क्लैव्यं तदपरं स्मृतम् । (सुश्रुतः)

के लिये कुछ तेजसी होकर फिर शीघ्रही बिल्कुल निकम्मे होजातेहैं ॥

लक्षण

वीर्य अत्यंतपतला जलके समान या छीछड़ेदार (फटाहुआसा) होजाय या वीर्य भस्म होजाय–मैथुनमें शीघ्रस्खलित हो अथवा चैतन्य होतेही गिरजाय या चैतन्यताहीन हो चित्तपर गरमी रहे और उदासी ॥

उपाय ।

इसका यही है कि प्रथम तो उपरोक्त वस्तु विशेष कर खटाई अतिगर्म वस्तु और औषध नसेके पदार्थ और स्तंभन (इमसाक) के अधिक वर्तावसे बचें बल्कि ऐसेसमय किसी अनाड़ीकी तेज दवा अथवा यद्वातद्वा धातु फौलाद (सार) आदिसे यह रोग और भी बढ़जाताहै इसीलिये कुछ उपाधिहो तो उसका सच्चा हाल कहकर किसी सुज्ञवैद्यसे निदानपूर्वक चिकित्सा करावें ॥

औषधि ।

इसकी औषधि प्रायःशीतल स्निग्धहैं जिनसे शरीर में सौम्यधातु बढ़ें और शुद्धहों ॥

---

१ अतिव्यवायशीलो यो न च वाजिक्रियारत । ध्वजभंगमवाप्नोति स शुक्रक्षयहेतुकम् । (सुश्रुतः)

(१) आँवलेंको आँवलेंके रसकी भावना दे सुखाकर चूर्णकर ६ मासा नित्य शहदके संग चाटकर सद्य गो दुग्ध पीना ॥

(२) विदारीकंद और गोखरू कूटकर समान मिश्रीमिला दश या बारहमासे नित्य फाँककर दूध मिश्री पीना ॥

(३) आंवलापाक, कूष्मांडपाक तथा सतावरी पाक भी श्रेष्ठ हैं ॥

(४) ईसबगोलकी भूसीमें बराबरकी मिश्री मिला दशमासे नित्य फंकी लेकर दूध पीना भी अच्छा है ॥

(४) वीर्य स्वल्पताजन्य क्लैव्य ।

जो वीर्यके क्षय होजाने या अल्पता (कमी) आदिसे हो ॥

अर्थात् जो मनुष्य वीर्यबढ़ानेवाले आहार औषधि करते या कर सकते नहीं या उनसे बन नहीं सकते और वे मैथुन शक्तिसे बढ़कर करतें है याकरनेकी इच्छा रखते हैं अथवा और किसी दुर्व्यसनसे शरीरके रत्नरूप वीर्यको अधिक निकालदेते हैं तो वीर्यकी कमीसे उन्हें नपुंसकता होती है अथवा ६० वर्षसे अधिक अवस्था होनेपर स्वयं वीर्य कम हो जाता है

लक्षण ।

थोड़ी चैतन्यताहो विना वीर्यगिरे शिथिलता हो-

जाय मैथुनमें देरसे वीर्य गिरे या विनाही वीर्यगिरे कभी चैतन्यता जातीरहे वीर्य थोड़ा गिरे प्रायः गाढ़ाहो--इस रोगमें थोड़ी चैतन्यतासी होकर भंग होजाती है इससे इसे ध्वजभंग भी कहते हैं--परंतु जब वीर्य अत्यन्तही स्वल्प होता है तो चैतन्यता होतीही नहीं॥

उपाय।

इसका यही, है कि पुष्ट वीर्य बढ़ानेवाले भोजन दूध, मलाई, रबड़ी, खोवा और घृत आदि खाना और मैथुन से बचे रहना या बहुतही कम करना-

रूखी गरम वस्तु तथा नसेके पदार्थ और स्तंभनसे इसमेंभी बचे रहना श्रेष्ठ है॥

औषधि।

इसकी प्रायः तर गरमवायुनाशक और वीर्य बढ़ाने वाली हैं। जैसे उड़द--अश्वगंधा (असगंध) इत्यादि अथवा॥

(१) आम्रपाक (हलवे आँव)

(२) मूसलीपाक या असगंधपाक

(३) बादामपाक या नारियलपाक

अथवा दूधकेसंग मीठे आँव चूसना अथवा उड़दकी खीर बनाकर खाना अथवा धातुसंजीवनी कस्तूरी-गुटिका अथवा मलाईका हलुवा खाना या बादामका

हरीरा परंतु इसमें दो चार दिनकी दवासे लाभ नहीं होता बहुत दिनतक वीर्यवर्द्धक भोजन करना और मैथुन पथ्य करना चाहिये ॥

हां (यद्वा तद्वा) फुकी धातु या प्रमेहनाशक औषधि इस रोगमें कभी सेवन नहीं करनी चाहिये ॥

(५) मेढ्र इंद्रियके दारुण रोगजन्य नपुंसकता ।

जो मेढ्र[1] इंद्रियके दारुण रोग अर्थात् घोर उपदंश या फिरंग (गरमी) तथा कृच्छ्र (सुजाक) या शूकरोग आदिसे अथवा कुयोनिसंग, पुरुषमैथुन तथा हस्त क्रीड़ा आदिसे स्नायु शिथिल या निर्बल होजाय या उनमें जल भरजाय या मुड़ तुड़जाय या स्पर्शज्ञान जातारहै इत्यादि अनेक कारणोंसे (मेढ्रही की उपाधिके हेतु) नपुंसकता हो जाती है ॥

शूक[2]रोग उसे कहते हैं कि जो मूर्खलोग लिंगेन्द्रियकी वृद्धि स्थूलता दृढ़ता आदिके लिये यद्वा तद्वा तेज औषध (विषआदि) तथा कोई तिला जो अनुचित हो मूर्खोंके कहनेसे लगा बैठते हैं उससे इंद्रिय पक-

१ महता मेढ्ररोगेण नराणां क्लीबता भवेत् । २ अक्रमाच्छेफसो वृद्धिं योभिवांछति मूढधीः । व्याधयस्तस्य जायंते दश चाष्टौ च शूकजाः ॥

जाती है या सूख जाती है और कोई घोर उपाधि हो जातीहै (जिसके वैद्यकमें १८ भेद लिखेहैं) यहांतक कि असाध्यतामें इंद्रिय गलकर गिर जानेपरभी समाप्ति न होकर मृत्युही हो जाती है ॥

उपरोक्त उपाधियोंसे जो क्लीबता होती है उसके लक्षण भी उनके कारणोंके अनुसार अनेक प्रकारके होते हैं ॥

इनके कारण।

घोर उपदंश और फिरंगमें मेढ़्के ऊपर तथा अन्य शरीरतक व्रण होते हैं, कृच्छ्र सुजाकमें भीतर घाव होते हैं, हस्तक्रीड़ा आदिसे या तो स्पर्शज्ञान कम हो जाता है या शिथिलता होती है या नसोंमें मलीन जल भर जाता है या नस मुड़ने आदिसे मेढ़में वाँकापन हो जाता है या ठीक २ चैतन्यता नहीं होती ये रोग जब बढ़ जाते हैं तो मनुष्य क्लीब हो जाता है ॥

उपदंश रोग अतिउष्ण भोजन रजस्वलागमन इंद्रियको न धोने आदिसे होता है ॥

और फिरंग रोग (आतशक) अपनेसे विरुद्ध

---

१ फिरंगिरोग संसर्गात् फिरंगिन्याः प्रसंगत । व्याधिरागन्तुजो दोषनाशाभ्यंतरभेदन. ॥

प्रकृति वा अन्य देशकी स्त्रियोंके संगमसे होता है इसका प्रथम हेतु अन्य देशीय स्त्रीसंगही है, फिर संक्रामकलासे बहुधा फैल गया है इसीसे चरक और सुश्रुतमें यह उपदंशसे अलग नहीं लिखा परंतु भावप्रकाशके समय (अन्य देशीय स्त्री संगसे) इसका प्रादुर्भाव हुआ तो अलग लिखा ॥

चिकित्सा ।

उपदंश फिरंग (गरमी) तथा कृच्छ्रकी औषध विशेष हम नहीं लिखते किसी वैद्यसे इलाज करना चाहिये परंतु हां इतना जरूर लिखते हैं कि उपदंश और फिरंग की औषध रक्त शोधिनी है । जैसे मंजिष्टादि क्काथ या उशबेका अरक अथवा यथोचित रसकपूरका सेवन तथा कृच्छ्र (सुजाक) की दवा, गंधे पिरोजेका तेल या अन्य मूत्रल औषधि हैं ॥

(२) यदि लिंगेंद्रिय सूखीसी हो तो उसके लिये लवंग या दालचीनीका तेल मलना उचित है ॥

(३) यदि स्पर्शका ज्ञान कम हो या शिथिलता हो तो लोबानका तेल बहुत श्रेष्ठ है अर्थात् लोबानका तेल लगाकर पान बांधना ॥

(४) यदि नसोंमें पानी भर गयाहो तो उचित है कि मालकाँगनी पावभर, जमालगोटा आधपाव

जायफल जावित्री लौंग दालचीन एक एक छटाँक इसी हिसाबसे जितनी चाहै दवालेके तेल खींचले फिर अग्रभाग और सीवन छोड़कर तीन दिन मले जब फुंसी निकल आवैं तो रोपणी मलहम लगावें ॥

(५) यदि इंद्रिय में खम पड़गयाहो तो चाहिये कि चमेलीके पत्तोंका रस ३ तोले, कूट और सुहागा और मैनसिल तीनों एक २ तोले ले तिलोंके ६ तोला तेलमें पकाकर तेल मात्र रहजाय उसे शीशीमें रक्खें इसे ४२ दिनमें २१ बार तीसरे दिन एक २ बार लगावें एक दिन बीचका खाली छोंडे तो बाँकपन निकले और इंद्रिय दृढ़ और पुष्ट होजाय ॥

(१) यदि इंद्रिय ठंढी पड़गई हो तो उचित है कि, अकरकरा, जावित्री, जायफल, कूट हरेक छह छह मासे अरंडके बीज, तिल, पुरानागुड़, बिनोलेकी गिरी एक एक तोले–पुराना खोपरा एक तोले, शहद दो तोले सबको कूट एक पोटली बनावे और कोई एक छटाक बकरीका दूध हलकी आँचपर रख उसमें पोटली डुबो २ कर नित्य सातदिनतक सेंक करे ॥

(६) वीर्यवाहिनी शिरा आदि छेदन जन्य क्लीबता।

वीर्यवाहिनी[1] नाड़ियों और मर्मस्थानोंके छे-

[1] वीर्यवाहीशिराछेदान्मर्मच्छेदन वा पुनः। एतत्क्लैब्य तु षष्ठं स्यात्कष्टं पुंस्त्वोपघातकम् ॥

प्रकृति वा अन्य देशकी स्त्रियोंके संगमसे होता है इसका प्रथम हेतु अन्य देशीय स्त्रीसंगही है, फिर संक्रामकलासे बहुधा फैल गया है इसीसे चरक और सुश्रुतमें यह उपदंशसे अलग नहीं लिखा परंतु भावप्रकाशके समय (अन्य देशीय स्त्री संगसे) इसका प्रादुर्भाव हुआ तो अलग लिखा ॥

चिकित्सा ।

उपदंश फिरंग (गरमी) तथा कृच्छ्रकी औषध विशेष हम नहीं लिखते किसी वैद्यसे इलाज करना चाहिये परंतु हां इतना जरूर लिखते हैं कि उपदंश और फिरंग की औषध रक्त शोधिनी है । जैसे मंजिष्टादि क्वाथ या उशबेका अरक अथवा यथोचित रसकपूरका सेवन तथा कृच्छ्र (सुजाक) की दवा, गंधे पिरोजेका तेल या अन्य मूत्रल औषधि हैं ॥

(२) यदि लिंगेंद्रिय सूखीसी हो तो उसके लिये लवंग या दालचीनीका तेल मलना उचित है ॥

(३) यदि स्पर्शका ज्ञान कम हो या शिथिलता हो तो लोबानका तेल बहुत श्रेष्ठ है अर्थात् लोबानका तेल लगाकर पान बांधना ॥

(४) यदि नसोंमें पानी भर गयाहो तो उचित है कि मालकाँगनी पावभर, जमालगोटा आधपाव

जायफल जावित्री लौंग दालचीन एक एक छटाँक इसी हिसाबसे जितनी चाहै दवालेके तेल खींचले फिर अग्रभाग और सीवन छोड़कर तीन दिन मले जब फुंसी निकल आवैं तो रोपणी मलहम लगावें ॥

(५) यदि इंद्रिय में खम पड़गयाहो तो चाहिये कि चमेलीके पत्तोंका रस ३ तोले, कूट और सुहागा और मैनासिल तीनों एक २ तोले ले तिलोंके ६ तोला तेलमें पकाकर तेल मात्र रहजाय उसे शीशीमें रक्खें इसे ४२ दिनमें २१ बार तीसरे दिन एक २ बार लगावें एक दिन बीचका खाली छोंडे तो बाँकपन निकले और इंद्रिय दृढ़ और पुष्ट होजाय ॥

(१) यदि इंद्रिय ठंढी पड़गई हो तो उचित है कि, अकरकरा, जावित्री, जायफल, कूट हरेक छह छह मासे अरंडके बीज, तिल, पुरानागुड़, बिनोलेकी गिरी एक एक तोले—पुराना खोपरा एक तोले, शहद दो तोले सबको कूट एक पोटली बनावे और कोई एक छटाक बकरीका दूध हलकी आँचपर रख उसमें पोटली डुबो २ कर नित्य सातदिनतक सेंक करे ॥

(६) वीर्यवाहिनी शिरा आदि छेदन जन्य क्लीवता ।

वीर्यवाहिनी[1] नाड़ियों और मर्मस्थानोंके

[1] वीर्यवाहीशिराछेदान्मर्मच्छेदेन वा पुनः । एतत्क्लैब्यं तु षष्ठं ... णां पुन्त्वोपघातकम् ॥

दन (कटने कुचले जाने या टूट फट जाने) आदिसेभी मनुष्य नपुंसक होजाता है ॥

जैसे अंडकोशके कुचलजाने या कटने अथवा गुदा और अंडकोशके बीच जो मोटी पुरुषार्थ रूप नाड़ी है उसके कट जाने या तीव्र व्रण (नासूर) हो जाने अथवा कानके पीछे एक नस है उसके कट जाने आदि या और मर्मच्छेदन आदिसे मनुष्य बिलकुल नपुंसक होजाता है (जैसे इनका उदाहरण बधिया बैल और आख्ता घोडोंकी क्लीवता है) ये क्लीव प्रायः असाध्य (१) होते हैं यदि कोई इनसे कष्टसाध्यभी होतो ईश्वरकी दयाही उसकी दवा है ॥

(७) शुक्रकी स्थिरताजन्य क्लैव्य ।

जो अत्यंत ब्रह्मचर्य आदि शुक्रकी स्थिरतासे हो ॥

अर्थात् स्त्रीसंगम करनेवाले पुरुष जो बहुत दिनतक (कई महीनों और बरसों) स्त्रीसंग और स्त्रियोंका ध्यान और विचारतक न करें या न करसकें और हास्य विनोद स्त्रियोंकी बातों और दर्शन स्पर्शनादिसे वंचित रहैं और मैथुनका ख्यालभी प्रायः नकरें तो उनका वीर्य स्थिर होजाता है (जमजाता है) जिससे उन्हें उमगही नहीं होता

---

१ असाध्यं सहजं क्लैव्यं मर्मच्छेदाच्च यद्भवेत् । (भावप्रकाशे)

लक्षण ।

मनुष्यका शरीर हृष्ट पुष्ट हो माथेमें तेज (चंदगी) हो । परस्त्रीकी चाह न हो ॥

उपाय ।

सुंदर स्त्रियोंके दर्शन उनकी मधुर वाणी सुनना राग रंग गीत श्रवण करना सुगंध सूंघना मित्रोंके संग हास्य विनोद करना ॥

सुन्दर स्त्रियोंका हाव भाव कटाक्ष तथा नृत्य आदि देखना उचित है जिससे मनका उमंग बढ़े और वीर्य द्रव होकर अपना स्थान छोड़े ऐसे यत्न करने और उचित रीतिसे थोड़ा आसव पीनाभी श्रेष्ठ है तथा मनोहर किस्से कहानी और रसीले काव्य पढ़ना स्वरूप चित्र देखना आदि उचित है ॥

(४) जराध्यायः ।

इस अध्यायमें जराव्याधियों बुढ़ापेके रोगों पलित (शरीरमें सलवट पड़ना बाल, सफेद होना) दाँतोंका हिलना आँखोंका त्यौर कम होना; गोड़े और कमर दुखना, श्वास आदि व्याधियोंका प्रतीकार वर्णन होगा ॥

---

१ बलिन. क्षुब्धमनसो निरोधाद्ब्रह्मचर्यतः । एतत्क्लैब्यं स्मृत तत्तु शुक्रस्थैर्यनिमित्तकम् ।

दन (कटने कुचले जाने या टूट फट जाने) आदिसेभी मनुष्य नपुंसक होजाता है ॥

जैसे अंडकोशके कुचलजाने या कटने अथवा गुदा और अंडकोशके बीच जो मोटी पुरुषार्थ रूप नाड़ी है उसके कट जाने या तीव्र व्रण (नासूर) हो जाने अथवा कानके पीछे एक नस है उसके कट जाने आदि या और मर्मच्छेदन आदिसे मनुष्य बिलकुल नपुंसक होजाता है (जैसे इनका उदाहरण बधिया बैल और आख्ता घोडोकी क्लीवता है) ये क्लीव प्रायः असाध्य (१) होते हैं यदि कोई इनसे कष्टसाध्यभी होतो ईश्वरकी दयाही उसकी दवा है ॥

(७) शुक्रकी स्थिरताजन्य क्लैब्य ।

जो अत्यंत ब्रह्मचर्य आदि शुक्रकी स्थिरतासे हो ॥

अर्थात् स्त्रीसंगम करनेवाले पुरुष जो बहुत दिनतक (कई महीनों और बरसों) स्त्रीसंग और स्त्रियोंका ध्यान और विचारतक न करें या न करसकें और हास्य विनोद स्त्रियोंकी बातों और दर्शन स्पर्शनादिसे वंचित रहें और मैथुनका ख्यालभी प्रायः नकरें तो उनका वीर्य स्थिर होजाता है (जमजाता है) जिससे उन्हें उमगही नहीं होता

१ असाध्यं सहजं क्लैब्यं मर्मच्छेदाच्च यद्भवेत् । (भावप्रकाशे)

लक्षण ।

मनुष्यका शरीर हृष्ट पुष्ट हो माथेमें तेज (चंदगी) हो । परस्त्रीकी चाह न हो ॥

उपाय ।

सुंदर स्त्रियोंके दर्शन उनकी मधुर वाणी सुनना राग रंग गीत श्रवण करना सुगंध सूंघना मित्रोंके संग हास्य विनोद करना ॥

सुन्दर स्त्रियोंका हाव भाव कटाक्ष तथा नृत्य आदि देखना उचित है जिससे मनका उमंग बढ़े और वीर्य द्रव होकर अपना स्थान छोड़े ऐसे यत्न करने और उचित रीतिसे थोड़ा आसव पीनाभी श्रेष्ठ है तथा मनोहर किस्से कहानी और रसीले काव्य पढ़ना स्वरूप चित्र देखना आदि उचित है ॥

(४) जराध्यायः ।

इस अध्यायमें जराव्याधियों बुढ़ापेके रोगों पलित (शरीरमें सलवट पड़ना बाल, सफेद होना) दाँतोंका हिलना आँखोंका त्यौर कम होना; गोड़े और कमर दुखना, श्वास आदि व्याधियोंका प्रतीकार वर्णन होगा ॥

---

१ बलिनः क्षुब्धमनसो निरोधाद्ब्रह्मचर्यतः । एतत्क्लैब्यं स्मृतं तत्तु शुक्रस्थैर्यनिमित्तकम् ।

बुढ़ापा ।

वृद्धावस्था । (बुढ़ापा) वह अवस्था है कि कनेक प्रकारका सुख और उत्तम स्निग्ध बलदायक खान पान करते करते और अनेक भांति यत्नसे रहते २ भी शरीर क्षीण बलहीन होताही जाता है वाल सफेद या पीले, दृष्टि मंद, दांत हिल हिलाते बल्कि टूटही जाते हैं नाड़ हिलने लगती है, चलने फिरने कीभी बहुत शक्ति नहींरहती शरीर ढीलाही क्या त्वचा हाड़ोंको छोड़कर लटक जाती है । हाय ! देखते देखते मनुष्य यह दशा होने परभी माया मोह नहीं छोड़ता मृत्युके दिन बहुत निकट होते हैं जो भलाई बने करलो इसकी दवा भी ईश्वरका स्मरण मात्रही है ॥

वृद्धावस्थामें वायुकी अधिकतासे भोजनका रस शरीरको नहीं लगता इससे जहाँतकहो स्निग्ध वायुनाशक पदार्थ इस अवस्थामें हितकारक हैं जैसे गरम दूध, घृत, संयाव हलुवा आदि ॥

बस यदि बहुतही बुढ़ापेमें उपरोक्त व्याधियां हों तो प्रायः उनका यत्न सफल नहीं होता परंतु इस समय अति बुढ़ापा न होनेपर भी बहुतोंको बुढ़ापेकी उपाधियाँ घेर लेती हैं जिनका यत्न करनेसे मनुष्योंको बहुत सुख हो सकता है ॥

(पलित) बाल सफ़ेद[1] होना ।

पित्तकी अधिकता अति उष्ण आहार विहार अति मैथुन अनुचित बर्तावसे अनेक देशांतर भ्रमण आदिसे (शारीरिक उष्मा) बहुत बढ़कर जब शांत होने लगती है तो वायु प्रबल होके बालोंको श्वेत करने लगती है इसी हेतु पित्तप्रकृति मनुष्योंके बाल शीघ्र श्वेत होते हैं--इससे इसकी औषधि भी वायुनाशक और कफवर्द्धक हैं क्योंकि कफप्रकृति मनुष्योंके बाल देरसे श्वेत होते हैं ॥

उपाय ।

(१) असगंध आधसेर, विधायरा आधसेर दोनोंका महीन चूर्णकर दसमासे नित्य छटांक भर सद्य गोदुग्धमें घोलकर ८० दिन पीनेसे बुढ़ापेमेंभी बालसफ़ेद नहीं होते और शरीरमें घुरी नहीं पड़ती तथा यह योग बहुत पुष्टभी है--पर यदि अधिक गुण चाहें तो स्त्रीसंग और लवण खटाईका पथ्य करे ॥

(२) तथा निबोलीकी गिरीको भंगरेके रसकी भावना फिर लहसुनके रसकी भावनादे फिर उसका

---

[1] प्रायः यूनानीवाले और साधारण लोग बालसफ़ेद होनेका हेतु नज़ल (शारीरिक बाष्प) भी बताते हैं ॥

बुढ़ापा ।

वृद्धावस्था । (बुढ़ापा) वह अवस्था है कि कनेक प्रकारका सुख और उत्तम स्निग्ध बलदायक खान पान करते करते और अनेक भांति यत्नसे रहते २ भी शरीर क्षीण बलहीन होताही जाता है बाल सफेद या पीले, दृष्टि मंद, दांत हिल हिलाते बल्कि टूटही जाते हैं नाड़ हिलने लगती है, चलने फिरने कीभी बहुत शक्ति नहींरहती शरीर ढीलाही क्या त्वचा हाड़ोंको छोड़कर लटक जाती है । हाय ! देखते देखते मनुष्य यह दशा होने परभी माया मोह नहीं छोड़ता मृत्युके दिन बहुत निकट होते हैं जो भलाई बने करलो इसकी दवा भी ईश्वरका स्मरण मात्रही है ॥

वृद्धावस्थामें वायुकी अधिकतासे भोजनका रस शरीरको नहीं लगता इससे जहाँतकहो स्निग्ध वायुनाशक पदार्थ इस अवस्थामें हितकारक हैं जैसे गरम दूध, घृत, संयाव हलुवा आदि ॥

बस यदि बहुतही बुढ़ापेमें उपरोक्त व्याधियां हों तो प्रायः उनका यत्न सफल नहीं होता परंतु इस समय अति बुढ़ापा न होनेपर भी बहुतोंको बुढ़ापेकी उपाधियाँ घेर लेती हैं जिनका यत्न करनेसे मनुष्योंको बहुत सुख हो सकता है ॥

(पलित) बाल सफ़ेद होना ।

पित्तकी अधिकता अति उष्ण आहार विहार और मैथुन अनुचित वर्तावसे अनेक देशांतर भ्रमण आदिसे (शारीरिक उष्मा) बहुत बढ़कर जब शांत होने लगती है तो वायु प्रबल होके बालोंको श्वेत करने लगती है इसी हेतु पित्तप्रकृति मनुष्योंके बाल शीघ्र श्वेत होते हैं—इससे इसकी औषधि भी वायुनाशक और कफवर्द्धक हैं क्योंकि कफप्रकृति मनुष्योंके बाल देरसे श्वेत होते हैं ॥

उपाय ।

(१) असगंध आधसेर, विधायरा आधसेर दोनोंका महीन चूर्णकर दसमासे नित्य छटांक भर मस्त्र गोदुग्धमें घोलकर ८० दिन पीनेसे वृद्धापेमभी बालसफ़ेद नहीं होते और शरीरमें झुरी नहीं पड़ती तथा यह योग बहुत पुष्टभी है—पर यदि अधिक गुण चाहै तो स्त्रीसंग और लवण खटाईका पथ्य करे ॥

(२) तथा निबोलीकी गिरीको भंगरेके रसकी भावना फिर लहसुनके रसकी भावनादे फिर उसका

प्रायः यूनानीवाले और साधारण लोग बालसफ़ेद होनेका हेतु नज़ला (शारीरिक बाष्प) भी बताते हैं ॥

तेल निकाल नास लेनेसे बाल श्वेत न हों इसपर प्रायः दुग्ध चावल भोजन करना उचित है ॥

श्वेतबाल काले होने का तेल ।

भंगरेकेरसमें लोहचून और त्रिफला सारिवा इनका कल्क कर तेलमें पकावे इसके लगानेसे बाल कालेहों तथा खाज और इंद्रलुप्त (कुरा) मिटे ॥

दाँतोंकी दृढ़ता ।

बहुत गरम २ भोजन खाने, पित्तकी अधिकता तथा गरम खानेपर ठंढाजल पीने तेज (उष्ण प्रकृति) वृक्षकी दँतोन करने–बहुतही गरम जलसे कुल्ली-करने आदिसे दंतमूल (मसूढों) का मांस ढीला होजाता है जिससे बुढ़ापे के पहलेभी दाँत हिलने लगते हैं और गिरजाते हैं ॥

तथा जूँठन या मैल अधिक लगा रहनेसे दाँत गिरने लगते हैं या उनमें कृमि होजाते हैं ॥

तथा बहुत ठंढाजल या हिम (बर्फ) या अधिक खटाई से दाँतों में दुःख होता है ॥

दाँतोंके दृढ़ रखनेकी विधि ।

(१) जो बातें ऊपर लिखी हैं जिनसे दाँतोंको हानि पहुँचे उनसे बचेरहनेसे दाँत दृढ़ रहते हैं ॥

(२) डाढ़ी मूछोंके बाल बनवाने (क्षौर) के पीछे तत्काल ठंढापानी न लावें बल्कि उसी समय तेल लगाना उपकारक है ॥

(३) बबूल (कीकर) के बकले में अष्टमांश भुनी फिटकड़ी तथा सेंधानमक और सोलहवां भाग अकर करा लौंग मिलाकर नित्य या दूसरे चौथेदिन मलाकरें फिर जलसे धोडालें इस मंजनसे दाँत बहुत दृढ़ होते हैं रुधिर जाताहो तो भी श्रेष्ठ है और मैलभी साफ़हो ॥

(४) तेजवंती तथा खदिर एवं बबूल की दँतोन कियाकरे या कभी २ इनका बकला चबावे ॥

(५) यदि दाँतों में दरद होतो कुरंट पियाबासेके पत्ते मलें--इससे भी दरद नाश होता है और दाँत भी दृढ़ होते हैं ॥

नेत्रोंकी ज्योति कायम रखना ।

नेत्रों तथा दृष्टिसंबंधी अनेकरोग हैं जिनका विस्तृत वर्णन इस छोटीसी पुस्तक में समस्त नहीं होसका परंतु ऐसी साधारण युक्ति इसमें वर्णन करते हैं जिन के अनुसार करनेसे कोई उपाधिही नहो तथा वृद्ध अवस्थातक दृष्टि मंद होही नहीं ॥

नंबर ३ का मंजन तथा बबूलका बकला कभी २ चबाते रहना बहुतही श्रेष्ठ है—इसकी हजारो बार परीक्षा हुई है इससे बुढापे तक दाँत मजबूत रहते हैं ।

नेत्रोंकी ज्योति मंद होनेके कारण प्रायः ये होते हैं इनसे बचे रहना श्रेष्ठ है ॥

(१) मूर्द्धा (दिमाग़) को विशेप गरमी या सरदी पहुँचना ॥

(२) अधिक धूप, अग्नि, रोशनीको विशेप देखना ॥

(३) बहुत गरम २ जल शिरपर अधिक डालना ॥

(४) नेत्रोंको बहुत गरम सरद तेज हवाके झोके लगना ॥

(५) नेत्रों में अधिक धुवां और भाफ लगना विशेषकर जहरीली वस्तुवोंकी भाफ बहुतही बुरी है ॥

(६) बहुत बारीक वस्तु बार २ देखना तथा बहुतही नन्हे अक्षर लिखना या पढ़ना विशेष संध्यासमय या क्षुधाके समय ॥

(७) बहुत सफेद या और कोई तेज रंग अधिक देखना ॥

(८) रूखा भोजन और शिरपर तेल न लगाना ॥

(९) लेटे २ गाना या पढ़ना या लिखना ॥

(१०) मिट्टीके तेलकी उघाड़ी रोशनी ॥

(११) अति मैथुन और अति परिश्रम शोक ॥

(१२) तेज औषध कुचला अधिक कुनैन आदि

तथा अन्य गरम तीक्ष्ण औषधि विशेष खाना अथवा गरम रूक्ष अन्य वस्तु सेवन ॥

(१३) मल मूत्र आदिके वेग रोकना विशेषकर अश्रु (आंसू) रोकना ॥

(१४) निकम्मी, या ऐसी ऐनक लगाना जिसमें बहुत बड़ा आकार दीखे ॥

नेत्रोपकारक बर्ताव।

निम्न लिखित बातें नेत्रोंके लिये परम हित और बहुत गुणकारक हैं ॥

(१) आँखों और मुँहको नित्य ठंढे पानीसे धोना ॥

(२) चौथे आठवें दिन त्रिफलाके जलसे धोना विशेष कर वसंत ऋतुमें ॥

(३) नित्य नयनामृत अंजन या कोई और योग्य अंजन डालना ॥

(४) ऋतुवोंके अनुसार मस्तक पर अनुलेपन लगाना ॥

(५) शिरपर तैलाभ्यंग नित्य करना विशेषकर क्षौरके पीछे तत्काल ॥

यह बर्ताव स्वस्थ (तन्दुरुस्त) के लिये है यदि कोई रोग होतो वैद्यसे पूछ लेना या हमारे आरोग्यसुधाकर मासिक पत्रमें विस्तारपूर्वक देखलेना ज्वर जखममे शिरमे तेल लगाना वर्जित है और भोजनके पीछे अंजन इत्यादि।

(६) नवनीत (माखन) या ताजा घी एक तोला मिश्री १ तोला बादामकी गिरी पाँच स्याहमिर्चें १५ सबको मिलाकर होसके तो नित्य खाना ॥

(७) गोघृत २ तोला इसमें ४ रत्ती केशर अथवा एक रत्ती कस्तूरी मिला रखना इसमें से नित्य नास लेना ॥

(८) त्रिफलापाक (अतरीफल) दोतोले नित्य वसंत (फाल्गुन चैत्रमें) ४० दिन हरसाल खाना ॥

(९) अनुमान आठवें दसवें दिन रसांजन (रसोत) आदिसे आँखोंका मलीनजल और मैल निकाल देना ॥

(१०) दो चार छह महीनेमें एक दो वार किसी उत्तम नस्य (नास) से मूर्द्धादि मार्गकी सफाई कर लेनी ॥

गोड़ों और कमर आदिका दुखना ।

यह बात पहले वर्णन हो चुकी है कि वृद्ध अवस्था में और निर्बलतामें वायुकी प्रबलता बहुत हो जाती है बस वायुहीके कारण गोड़े (घुटने) कमर आदि अंग दूखते हैं इनका कारण उस समय थोड़ीसी सरदी या पवन ठंढापानी विषम आसन आदि होते हैं ॥

उपाय ।

(१) अदरककापाक सरदीके समय खानेसे गोड़ों और कमरके दुखनेमें बड़ा लाभ होता है ॥

(२) असगंध पाक या लहसनपाक (जो खाये तो)

(३) मेथीपाक सरदीमें खाना—परंतु कइयोंको नेत्रोंकेलिये हानिकारक होता है—इसे देखलेना चाहिये

(४) सहँजनेके गोंदको घीमें तलकर खांड (चौ-गुनी) डालकर मेवा आदि मिलाकर सरदीमें खाना.

(५) यदि गोड़े अधिक दूखते हों तो नित्य थोड़ी दूरटहलकर निवाया दूध शहदके संग खड़े २ पीना ॥

(६) तीन चार मासा सोंठका चूर्ण फाँककर गरम दूध पीना ॥

वक्तव्य—उपरोक्त उपाधियों (जरा व्याधियों) के लिये जो ये उपाय वर्णन किये एक दो दिनमें बहुत कुछ गुण नहीं कर सकते इससे महीना दो महीनातक निरंतर यत्न करना उचित है ॥

बहुत लोग कुचला आदिके टुकड़े या लड्डूबना कर खाते हैं—हमारी समझमें उचित नहीं क्योंकि बहुत रूक्ष गरम और नेत्रोंके लिये हानिकारक हैं ॥

श्वास ।

बुढ़ापेमें क्षीणतासे बहुतोंको पहले खांसी और

यदि तरुण अवस्थामें कोई अंग वायुआदिसे दूखे तो नारायण तैल या लोबानका तैल मलना और छठे नंबरका यत्न करना ही बहुत अच्छा है ।

फिर श्वास (दमा) हो जाता है--इसकी औषध प्रायः तर गरम और क्षीणता नाशक है ॥

वक्तव्य इसमें यह है कि यह बात इसमें विचारना अवश्य चाहिये कि गरमीसे या सरदीसे मुख्य लक्षणये हैं कि गरमीके श्वासमें कंठकी १ नली चौड़ी होजाती है जिससे हौंकनी सी लग जाती है और सरदीके श्वासमें नली सुकड़ जाती है जिसे रुक २ और टूटकर दम लिया जाताहै गरमीके श्वासकी दवा सरद तर और सरदीके श्वासकी गरमतर औषध है--इन बातोंकी व्याधि होने पर किसी वैद्यसे सलाह लेनीभी उचित है--पर बुढ़ापेमें श्वास विशेष सरदीसे ही होता है ॥

परंतु वृद्ध अवस्था का श्वास प्रायः असाध्य ही होता है इसके लिये प्रायः ये वस्तु उपकारक होती हैं ॥

(१) बादाम और खशखशका हरीरा ॥

(२ गरम २ संयाव हलुवा ॥

(३) हरे बेदाना अंगूर ॥

(४) यदि किसी योग्यवैद्यके हाथका यथोचित बना होतो कृष्णाभ्रककी निश्चंद्रिका भस्म यथायोग्य अनुपानके संग सेवन करना श्रेष्ठ है ॥

---

१ श्वास ५ प्रकारके वैद्यकमे लिखे हैं पर बहुधा मनुष्योंको तमक श्वास होता है शरदीसे तमक श्वास होताहै और गरमीसे इसके विपरीत प्रतमक श्वास देखो (भा० प्र०)

बुढ़ापे की साधारण (योग्य) खुराक।

(१) निवाया २ दूध ॥

(२) संयाव (हलुवा) या हरीरा ॥

(३) चूरमा (मलीदा) ॥

(५) संगृहीताध्याय।

इस अध्यायमें पूर्व लिखित पाकों और अन्य औषधियोंके बनाने आदिकी विधि तथा इतर फुटकर बातें होंगी और ग्रंथ समाप्ति ॥

लवंगादि चूर्ण।

लवंग शुद्धकपूर इलायची नागकेसर जायफल खश सोंठ स्याहजीरा कृष्णअगुरु वंशलोचन जटामांसी नीलकमल पीपली चंदन तगर सुगंधवाला कंकोल सबका चूर्ण कर सबसे आधी मिश्री मिला ६ मासे नित्य खानेसे यक्ष्मा (क्षयी तमक) श्वास खाँसी अति सार प्रमेह अरुचि संग्रहणी आदिको हित है यह चूर्ण दीपन और पाचन है ॥

(पाक)

कूष्मांड पाक (पेठापाक)

पकेपेठेका गूदा पावसेर दूने जलमें डाल मंदी आँचसे गलावे आधाजल रहनेपर निचोड़े धूपमें कुछ

सुखा पिट्ठी बनावे तीन पाव घृत डालकर उसे फिर भूने जब लाल रंग होजाय उसमें निम्नलिखित औषध डाले पीपली सोंठ जीरा दो दो टकेभर, धनियाँ तेजपात इलायची स्याहमिरच दालचीनी ये सब एक २ तोला फिर पाँचसेर मिश्रीकी चासनीमें डालकर पाक बनावे और डेढ़पाव शहद डाले चांदीके वरक तीनमासा इसे एक छटांक नित्य खानेसे क्षयी क्षीणता रक्तपित्त प्रदर वीर्यविकार क्लीवता नाश हो शरीर पुष्ट हो ॥

गोखरूपाक ।

गोखरूका चूर्ण १ सेरले ४ सेर दूधमें डाल खोवा बनावे फिर जावित्री लौंग लोध मिरच भीमसेनीकपूर नागरमोथा संभलकागोंद आँवला पीपल केशर दाल-चीनी पत्रज इलायची नागकेशर कँवचबीज अजवा-यन इन औषधोंमें सब एक २ तोला केशर ६ मासा कपूरभीमसेनी ३ मासे डाले और १ छटाँक भांग धोई हुई डाले फिर खोवा और ये सब वस्तु ले, २ सेर घीमें मंदाग्निसे भूने फिर पाँच सेर मिश्री या खाँडकी चासनी कर पाक बनावे चांदीके पत्र यथोचित लगा चारतोला नित्य खाय बड़ा बलकारी है प्रमेहमें बड़ा गुण करता है तथा बवासीर और क्षयी क्षीणतामें बहुत हित है ॥

सुपारी पाक।

दक्षिणी सुपारीका चूर्ण आधसेर भिगो सुखा महीन पीस बराबरके घीमें मरकोय अठगुने दूधमें पकाकर मावा बनावे फिर ४ सेर मिश्रीकी चासनीकर मावा डालकर पाक बनावे ये औषध पहले डालदे इलायची खरेंटी गँगेरणकी छाल लवंग जायफल जावित्री पत्रज सोंठ शतावर मूसली कवँचके बीज विदारीकंद गोखरू सालममिसरी वंशलोचन असगंध चंदन अगर ये औषध सब एक २ टकेभर कस्तूरी मासा २॥ भीमसेनी कपूर मासे २॥ फिर एक टके भर नित्य खाय तो सब प्रमेह दूर हों नपुंसकता जाय मैथुनशक्ति बढ़े यह पाक अतिपुष्ट बाजीकरण है स्त्रियों-कोभी हित है॥

शतावरी पाक।

इसकी क्रिया गोखरूपाकके समान है यहपाक वीर्य बढ़ानेवाला धातु उत्पन्न करनेवाला पित्तप्रमेह और वीर्यकी क्षीणताजन्य क्लीबतामें परम हित है परंतु इसमें भाँग और लोध नहीं डालनी चाहिये॥

मूसली पाक।

सफेद मूसलीका चूर्ण आधसेर पावसेर घीमें मरकोय पाँच सेर दूधमें खोवा बनावे फिर बबूलका गोंद पाव

भरले घीमें भून खोवेमें मिलावे फिर ढाईसेर मिश्रीकी चासनी बनाकर पाक बनावे और बादामकी गिरी चिरौंजी खोपरा आध २ पाव डाले और लौंग जायफल दालचीनी पत्रज छोटी इलायची जावित्री नागकेशर सोंठ मिरच पीपल सब औषध एक २ तोला शुद्ध वंग हो तो १ तोला चांदी अथवा सुवर्णके वरक ६ मासा डाल आधी २ छटाँक के लड्डू बनावे एक या दो यथाबल नित्य खाय यह पाक वाजीकरणमें सबसे श्रेष्ठ है बहुतही पुष्ट है इससे क्षीणता क्लीवता कमजोरी मंदाग्नि प्रमेह सब नष्टहों यह पाक पुरुषोंको अवश्य प्रति वर्ष खाना श्रेष्ठ है ॥

असगंध पाक ।

असगंध आधासेर उससे आधी सोंठ सोंठसे आधी पीपल पीपलसे आधी मिरच सबका चूर्ण ८ सेर दूध का खोवा बना चूर्ण डाल घी सेर १ में भून ४ सेर मिश्रीकी चासनीमें पाक बना शहद १ सेर डाले ॥ और तज पत्रज इलायची नागकेशर पीपलामूल लौंग तगर जायफल नेत्रवाला चंदन नागरमोथा वंशलोचन आँवले खैरसार चित्रक शतावरी इनको छः छः मासे डालकर उतारले सरदीकी ऋतुमें दो तोले नित्य खाय तो शिथिल पुरुष तीव्रहो तथा आमवात गठिया

श्वास खाँसी शूल बादीके रोग सब नष्टहों इसकी प्रकृति गरम है इससे शीत समय प्रभात खाना और कफ वादी प्रकृति पुरुषको हित है वृद्धकोभी तरुण करता है पर पित्तप्रकृति मनुष्य न खाय ॥

आम्र पाक ।

पके हुए मीठे आंबका रस १६ सेर, मिश्री ४ सेर घी १ सेर इन्हें मिट्टीके पात्रमें पका चासनी कर गाढ़ा होनेपर ये औषध डाले सोंठ मिरच पीपल धनियाँ जीरा चित्रक तज पत्रज इलायची नागकेशर सब दो दो तोले लौंग जायफल जावित्री एक २ तोला केशर ६ मासा कस्तूरी ३ मासा और शहद पावसेर सब एकत्र कर चीनीके पात्रमें रक्खे सरदीके समय दो तोले नित्य खाकर दूध पीवे तो धातुवृद्धि हो और बहुत पुष्टता हो नपुंसकता क्षीणता रहै नहीं यह पाकभी कुछ २ गरम है वातप्रकृति रूखे पुरुषोंको हित है तथा क्षयी ग्रहणी पांडुमें श्रेष्ठ है ॥

बादाम पाक ।

पावसेर बादामकी गिरी गरम जलमें भिगो छिलका उतार पिट्ठी पीसले चार सेर दूधमें उसका खोवा बना दो सेर कंद या मिश्रीकी चासनीमें पाक बनाकर पि-

स्ते खोपरा एक २ छटाँक इलायची जावित्री जायफल एक २ तोला लौंग छःमासा केशर अकरकरा तीन २ मासा कस्तूरी डेढ़ मासे वरक चांदीके ३ मासा डाल हलुवासा बना चीनीके पात्रमें रखले दो तोला नित्य सरदीमें खाय मूर्धा दिमाग़ को बहुत पुष्ट करता है वीर्य बल बढ़ाता है अमीरोंके लायक उम्दह चीज़ है ॥

नारियल खोपरा पाक ।

दूध एकसेर खोपरा १ जावित्री जायफल केशर छः २ मासे इसबगोलकी भूसी एकतोला ॥
छुहारे चिरौंजी अखरोटकी गिरी बादामकी गिरी एक २ छटाँक मिश्री १ सेर ॥

चारों दवा खोपरेमें भर दे फिर खोपरा और मेवा दूधमें पकावे फिर सबकी पिट्ठी बना दूधका खोवा करले फिर पावभर घीमें इसे भूने और पिसी मिश्री मिलाकर एक २ छटाँकके लड्डू बना ले यह बहुत पुष्ट है बहुत बलकर्ता है ॥

प्रमेह तथा धातुका पतला पड़ना इनमें बहुतही गुणदायक है पुष्टता सहित स्तंभनभी है और ग्राही है ॥

आँवला पाक ।

पावभर आँवलोंको दूधमें भिगोकर मावा निकाले

उस मावेमें दोसेर कंद या मिश्री डालकर चासनी पकावे और पेठापाकोक्त औषधि डालें और चांदीके वरक ३ मासा डालकर हलुवासा बना चीनीके पात्रमें रखले दो तोले नित्य बसंत या गरमीमें खाय धातुको पैदा करता और बढ़ाता है दीपन और पाचनहै यह ठंढा है पित्तप्रकृतियोंको तथा पित्तप्रमेहमें बहुत अच्छा है रक्तपित्त और दस्तोंमें गुणकारी है जिगरकी गरमीको खोता है ॥

आर्द्रकपाक ।

एकसेर आर्द्रक छील पिट्ठी बनावे फिर २ सेर दूधमें खोवा करे और आधासेर घी डालकर उसे भूनले फिर २ सेर कंद या चीनीकी चासनी कर पाक बनावे पीपली पिपलामूलं मिरच चित्रक मोथा नागकेशर दालचीनी पत्रज सब एक २ तोला डाले दो तोलासे छटाँक तक नित्य खाय तो कमर और गोडोंका दुखना बंद हो तथा शीत पित्त (पित्ति) श्वास खाँसी वातरक्त गुल्म क्षीणतामेंहित है दीपन पाचन है बल और जठ-राग्निवर्द्धक है ॥

लहसन पाक ।

जो लोग लहसन खाते हैं उन्हें चाहिये कि १सेर लहसन

निस्तुषकर पिट्ठी * बना चारसेर दूधमें खोवा करे-और घी पावभर डालकर भूने-और ये औषध डाले रास्ना वासा शतावरी गिलोय सोंठ देवदारु वृद्धदारु (विधायरा) अजवायन चित्रक सौंफ त्रिफला पीपल विडंग सब एक २ तोला सबके समान मिश्रीदे पाक बनावे शहद पावभर डाले ॥

इस एक तोलासे ३ तोला तक यथाबल खाय तो गोडे कमरका दुखना अकड़ना संधिपीड़ा (गठिया) वातव्याधि बुढ़ापेके सब वायुरोग नष्ट हों तथा ऊरुस्तंभ हनुग्रहआदि सब (८४) वातव्याधि नाशहों बल पुष्टिबढ़े ॥

मेथी पाक।

प्रायः देहाती लोग इसे बहुत पसंद करते हैं मेथीका चूर्ण १ सेर तेल १ सेरमें एक महीनाभिगोवे फिर ४ सेर गुड़ या मीजां खांडकी चासनी करे मेथीको मंदी आँचपर उसी तेलमें भूनकर चासनीमें डालदे और भूना हुआ गोंद पावभर सोंठ मिरच पीपल दो २ तोले डाले इसमेंसे दो तोलेसे ४ तोले तक अति सरदीमें खावे कमर और गोडों (घुटनों) का दुखना अकड़ना आदि सब वायुके रोग जायँ यह पाक बहुत गरम है ॥

---

* गिलोय और कोई गीली दवा पहले लहसनकी पिट्ठीमें पीसले ।

कई लोग इसमें बराबरका गेहूँका आटा घीमें भूनकर डालते हैं और लड्डू बना लेते हैं ॥

त्रिफला पाक।

आधपाव त्रिफला चूर्ण१ पावभरजलमें भिगो पावभर घीमें मंद अग्निसे सेंके फिर एकसेर मिश्रीकी चासनी में डाले पुष्करमूल चित्रक मिरच सोंठ पीपल इलायची मोथा तज पत्रज सब आठ २ मासे निस्तुष धनियाँ दो तोला शुद्ध शिलाजीत और केशर छह २ मासे शहद पावभर डाले—इसमेंसे दो तोलेसे चार तोला तक नित्य या दो २ तोला दोनों समय खाय तो सब प्रकारका प्रमेह जाय शिरके सब रोग नेत्राभिस्यंद पानीबहना (प्रतिश्याय) जुकाम खून फिसाद सबमें हित है ॥

च्यवनप्राश्यावलेह।

अरणी खँभारी पाठला बिल्व अरलू गोखरू. क्षुद्रा पीपल काकड़ासिंगी मुनक्का गिलोय हर्र खरेंटी दो दो मासा वाराहीकंद विदारीकंद मोथा पुष्करमूल वनमाष वनमूंग असगंध कमलफल मुलहटी इलायची अगर श्वेतचंदन सब पल २ भर और पक्के आँवले

१ एक भाग हर्र दो भाग बहेडा चार भाग आँवला यह ऐसे लेना।

५०० ले मिट्टीपात्रमें २० सेर जलमें सबको उ-बाले अष्टमांश जल रहे तब निचोड़ ले आँवलोंकी गु-ठली निकाल पिट्ठी बनावे और अधासेर घीमें भूने फिर उस पूर्वोक्त निचोड़े क्काथमें २ ॥ सेर मिश्रीकी चासनी कर पिट्ठी डाले और डेढ़ पाव शहद दे अवलेह बनावे तज पत्रज इलायची बंशलोचन चार २ मासे दे—इसे २ तोलासे चार तक नित्य खाय तो महाक्षीणता निर्बलता क्षयी रक्तपित्त वीर्यदोष सब मिटें कहते हैं च्यवन ऋषि वृद्ध इसीसे पुनः तरुण हुएथे ॥

आसव और अरिष्ट ।

औषधोंको अधिक जलादिमें डाल मिट्टीके पात्रमें भर मुँह बंदकर (खाम) एक महीना रक्खे (या पृ-थ्वीमें गाड़ दे) फिर छानकर बोतलोंमें भरले इसे आसव कहते हैं ॥

तथा औषधियोंको उनके क्काथमें पूर्वोक्त रीतिसे एक मास तक साधन करे तो वह अरिष्ट कहलाता है इनकी एक बार पीनेकी मात्रा १ छटाँकके लगभग है ॥

इस समय के सफाईपसंद लोग आसवको भभकेसे खींच लेते हैं पर शायद गुणमें कुछ फरक होजाय ॥

दशमूलारिष्ट ।

दशमूल चित्रक पुष्करमूल पचीस २ छटाँक, लो-

ध गिलोय २० छ०, आँवला १६ छ०, जवासा १२ छ०, हर्र खैर बिजैसार आठ २ छ०, कूट मजीठ देवदारु विडंग भारंगी बहेड़ा चव्य जटामांसी स्याहजीरा निशोथ रास्ना पीपल सुपारी दोनों हलदी सौंफ पद्माख नागकेशर मोथा इंद्रयव सोंठ दोनों कसेली सब दो २ छ० सबको अठगुणे जलमें क्काथ करे चतुर्थांश रहे उतार ले और ४ सेर मुनक्का १६ सेर पानीमें उबाले १२सेर रहे उतारले छानकर दोनों क्काथ मिलादे फिर २ सेर शहद, पुराना गुड या मिश्री १६ सेर डाले धायके फूल सरदचीनी खश चंदन जायफल लौंग दालचीनी इलायची पत्रज एक २ छ० केशर २ तोला कस्तूरी ४ मासा डाल संधित कर गाड दे एक मास पीछे निर्मलकर पीवे सब प्रमेह नाशहों शरीर महापुष्टहो क्षय आदि सब रोग नष्टहों रूप सुंदर हो॥

दवदारु अरिष्ट।

२॥ सेर देवदारु १। सेर रूसा (वासा) मँजीठ इंद्रयव दँतून तगर दोनों हलदी रास्ना विडंग मोथा सिरस खैर अर्जुन आध २ सेर अजवायन कुरा चंदन गिलोय कुटकी चित्रकभी आध २ सेर ४ मन जलमें पकावे १ मन रहे धायफूल १ सेर शहद १५ सेर त्रिकु

टा २ छ० तज पत्रज इलायची एक २ छ० नागकेशर २ छ० दे साधन करे इससे प्रमेह मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) बवासीर नष्टहो ॥

बबूलारिष्ट ।

बबूल का बकला ५ सेर १ मन जलमें पकावे १० सेर जल रहने पर २॥ सेर गुड़ धायके फूल ८ छ० पीपल २ छ० जायफल सीतलचीनी तज पत्रज लोंग मिर्चे केशर एक २ छ० डाल संधित करे इससे क्षयी क्षीणता (यक्ष्मा) कुष्ठ दाद खाज प्रमेह दूर हों ॥

द्राक्षासव ।

मुनक्का २॥ सेर मिश्री १० सेर बेरीकी जड़ १। सेर धायके फूल ढाई पाव सुपारी ५ छ० जावित्री जायफल लौंग एक २ छ० त्रिफला ३ छ० सौंफ दालचीनी इलायची पत्रज दो २ छ० सोंठ मिर्चे पीपल एक २ छ० नागकेशर २ छ० अकरकरा कूट एक २ छटाँक केशर १ तोला कस्तूरी ३ मासा ।

पहले मुनक्काको १६ गुने पानीमें उबाले आधारहे सब औषध डालकर संधितकरे इसके पीनेसे शरीर बलिष्ठहो पुष्ट हो धातुबढ़े सुंदर रूपहो मल शुद्ध हो यह आसव अमीरोंको परम सुख देता है ॥

घृत साधन ।

सिंहामृतघृतम् ।

कटैली और गिलोय ढाई २ सेर कूटकर १ मन जलमें क्काथ करे १० सेर रहे १। सेर घृतले और त्रिकुटा त्रिफला विडंग चित्रक खँभारी सब एक २ तोला ले क्काथ करे फिर दोनों क्काथ ले घृत डाल मंदी आँचसे पकावे घृतमात्र शेष रहे उसमेंसे १ तोलाके अनुमान नित्य खानेसे वायुका असाध्य प्रमेह नाश हो शरीर पुष्टहो ॥

धन्वंतरिघृतम् ।

दशमूल करंज देवदारु हरं वर्षाभू वरुणा दंती चिकत्र सटी सुधापीन कदंब बिल्व कचूर पुष्कर-मूल पिपलामूल सब एक २ छटाँक यव कोल कुलथी एक सेर पूर्वोक्त औषधोंका क्काथ अलग करे धान्यों-को अलग उबाले ॥

तथा सोंठ विडंग चव्य कंपिल्ल त्रिफला भारंगी रुहेड़ा गजपीपल इन्हें अलग सिद्ध करे सबका क्काथ एकत्रित कर एक सेर घी सिद्धकरे घृतमात्र शेष रहे एक तोलासे दो तोला तक नित्य खाय तो प्रमेह कुष्ठ गुल्म वातरक्त प्लीहा उदररोग बवासीर और मृगी-रोग नष्ट हों ॥

त्रिफलाघृतम् ।

त्रिफला आधसेर, त्रिकुटा ३ छटाँक चित्रक १ छ० गोखरू १ छ० दारु हरिद्रा १ छ० देवदारु १ छ० गिलोय १ छ० सबको १६ गुने जलमें क्राथ कर चौथाई रहे एकसे घृत साधन करे घृतमात्र रहे १ से दोतोला तक नित्य खाय तो सब प्रमेह विशेष कर (वायुके प्रमेह) भी नष्टहों मूर्द्धा (दिमाग़) में बलहो शिरके रोग और नेत्र के रोग जायँ ॥

बादामका हरीरा ।

बादामकी गिरी पिस्ते चिलगोजेकी गिरी अखरोटकी गिरी एक २ तोला, सफ़ेद खशखश तीन तोला सूखा निशास्ता तीन तोला घी ३ तोला मिश्री आधपाव खशखशको रातभर भिगोदे सवेरे पीसकर आधसेर जलमें मावा निकालले और गिरियोंको भी पीसले निशास्तेको घीमें भूनले फिर गिरी और खशखशका शीरा और मिश्री पिसी डालकर मंदी आँचसे हरीरा पकावे ॥ इसे बलके अनुसार खाये तो मूर्द्धा (दिमाग़) को बहुत ताकत हो चेहरेका रूखापन शिरमें घूमनी चक्कर आने मिटैं बहुत बल वीर्य बढ़े ॥

बादामका हलुवा ।

आधसेर बूराकी चासनीमें छिले हुए बादामोंकी

पिसी पिट्ठी डालदे और हिलाते रहे खूब मिलजाय तब अनुमानका गरम २ घी डालकर पकाले और इलायची चाँदीके वरक आदि मसाला डाले ॥

यह हलुवा बहुत बलदायी वीर्य बढ़ानेवाला बहुत रूप देनेवाला अमीरोंके लायक है सरदीमें आधपाव रोज तक खा सकते हैं ॥

मलाईका हलुवा ।

पावभर मलाईमें आधसेर कंद डालकर मंदी आँच-पर रक्खे और हिलावे जब मिलजाय पावभर घी गरम करके डालदे और हलुवा बनजाय तब मेवा इलायची चाँदीके वरक डालकर उतारले बहुत पुष्टाई करता है वीर्यको पैदा करता और बढ़ाता है अमीरोंके लायक है इसे १ छटाँकसे आधपावतक खा सकते हैं ॥

कस्तूरी गुटिका ।

कस्तूरी २ भाग सुवर्णके वरक एक भाग चाँदीके वरक ३ भाग केशर ४ भाग छोटी इलायची के बीज ५ भाग जायफल ६ भाग वंशलोचन ७ भाग जावित्री ८ भाग इन सबको बकरीके दूधमें व पानके रसमें ३ दिन खरलकर एक २ रत्तीकी गोली बनावे ॥

इनमेंसे एक या दो गोली नित्य (यदि धातु सूख गईहो या नष्ट होगई हो तो मलाईके संग या उपरोक्त

मलाईके हलवेके संग) और प्रमेह क्षयीमें शहदके संग शिथिलतामें पानके संग खाना उचित हैं इससे सूखी और मृतधातुभी पुनर्जीवित हो जाती है इससे इसे धातु संजीवनी कहतेहैं ॥

नयनामृत अंजन ।

उत्तम शीशाले गला गलाकर तैल छाँछ गोमूत्र कांजी कुलथी क्वाथ और त्रिफला क्वाथ इन सबमें तीन तीन बार बुझावे ॥

फिर सिंगरफको नींबूके रसमें घोट हँडियाके पेंदे मेंलगा ऊपर दूसरी हँडिया औंधी रख मुँह मूँद नीचे आँच जलावे ऊपर गीला कपड़ा रक्खे जब सिंगरफका पारा ऊपर जालगे उतार ठंढाकर धोले ॥

और सुरमेको तपा २ नीबूमें सातवार बुझावे ॥ तथा मिलसकेतो स्त्रीके दूधकी ७ भावनादे इस भाँति जब तीनों शुद्ध होजायँ तब एक तोला शुद्ध शीशा उसमें एक तोला उक्त पारा मिलावे फिर दो तोले शुद्ध सुरमामिला ७ दिन खरल करै और दशवाँ भाग भीमसेनी कपूर ले—इस अंजनसे नेत्रके सब विकार मिटें और दिव्य दृष्टि रहे ॥

शिलाजतुशोधनादि ।

यद्यपि सब धातुओंकी शिलाजतु होती है परंतु

लोहज सबमें श्रेष्ठ है पर्वतसे गरमीमें टपकती है रंगत रक्तता लिये कालीहो गोमूत्रगंधिहो अधिक श्रेष्ठ लोहज हो तो चुंबकसे चिपक जाय ॥

शोधन।

शिलाजीतको चूराकर जलमें डालकर औटावे फिर २ प्रहर रख छोडे जो ऊपर मलाईसी हो उतारले फिर इसी प्रकार करे ऐसे ३० वारकर सब बार मलाई इकट्ठी करता जाय शुद्ध शिलाजीत यही है ॥

विना शुद्ध शिलाजीत कभी न बरते क्योंकि इसमें कई भाँतिके मल होते हैं ॥

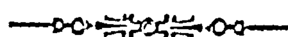
यद्यपि इसके शोधनके औरभी कई प्रकार हैं पर यह सबसे श्रेष्ठ है ॥

यह शिलाजीत प्रमेहकी बड़ीही सिद्ध और श्रेष्ठ औषध है कैसाही प्रमेह हो यह सबको गुणकारी है और यथोचित अनुपानसे सब रोग हरती है ॥



पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् यन्त्रालय-बंबई.

☞ क्रय्यपुस्तकोंकी संक्षिप्त-सूची. ☜



नाम.	की. रु. आ.
वैद्यक ग्रंथाः।	
चिकित्साधातुसार भाषा	०-५
रसराजमहोदधिभाषा प्रथमभाग—वैद्यक यूनानी हिकमत और यूनानीदवा और फकीरोंकी जडी बूटी और सन्तोंके पुस्तकोंका संग्रह है	०-१२
रसराजमहोदधि दूसराभाग (उपरोक्त सर्वालंकारों समेत छपकर तय्यार है)	०-१२
अमृतसागर कोषसहित (हिन्दुस्थानी भाषामें) सर्वदेशोपकारक	२-४
डॉक्टरी-चिकित्सासार भाषा (अं. दे वै.) ...	०-१०
व्यंजनप्रकाश (नैमित्तिक भोजनके समस्त पदार्थ अचारादि बनानेकी सुगमता और और गुण)	०-८
शालिहोत्र नकुलकृत (घोडोंके शुभाशुभ लक्षण और उनके रोगोंकी औषधि)	०-८
पशुचिकित्सा अर्थात् वृषकल्पद्रुम छन्दबद्ध (इस में बैल, गऊ, भैंसोंके शुभाशुभ लक्षण यंत्र चिकित्सा पहिचान भलीभाँति लिखी है)...	१-०
करिकल्पलता (हाथियोंकीपहँचान तथा दवा)	१-४
तिब्बअकबर (हिन्दीभाषा)	७-०
योगमहोदधि भाषा	०-३
चक्षुरक्षक ... ..., ...	०-२

॥ श्रीः ॥

श्रीयुतउमाद्रिविरचित—

कामकौतूहल.

भाषाटीकासमेत ।



खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस—खेतवाड़ी,

बंबई.

श्रीः ।



श्रीयुतहेमाद्रिविरचित—

कामकौतूहल

(वैद्यकग्रन्थ.)

मुरादाबादनिवासिआयुर्वेदोद्धारकशालिग्राम-
जीवैश्यकृतभाषानुवादसमेत ।

जिसको
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बंबई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९५८, शके १८२३

प्रस्तावना।



शम्भुस्वयंभुहरयो हरिणेक्षणानां
येनाक्रियन्त सततं गृहकर्मदासाः ॥
वाचामगोचरचरित्रविचित्रिताय
तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय ॥ १ ॥

अर्थ–जिसने अपने कर्तव्यसे शिव ब्रह्मा और विष्णुकोभी स्त्रियोंके गृहका कार्य्य करनेके लिये दास बनारक्खाहै, और विचित्र चरित्रमें परम चतुर और विलक्षण है जिसकी चतुरता का वर्णन नहीं होसकता, ऐसे भगवान् पञ्चशर कामदेवको वारंवार नमस्कार है। जब ऐसे ऐसे बलवान् और ज्ञानवान् पुरुषोंहीको नाँच नचादिया तो हम तुच्छ मनुष्योंकी क्या गणना है ?

प्रियवर! विचार करके देखिये कि, इस असार संसारमें परमात्माने अनेक प्रकारके कर्तव्य और कौतूहल रचेहै, परन्तु कलिकालके लोग कामकौतूहलमें मतवाले हो भामिनीके भोग और गिरहके वियोगहीको सार समझतेहै. देखो ! कामदेवकी कैसी विलक्षण महिमा है कि, जिसने प्रत्येक स्त्रीपुरुषको अपने अधीन कररक्खाहै और वह लोगभी उसपर ऐसे आसक्त है कि, क्षणमात्रको उसे नहीं भूलते और वारंवार यही कहतेहै कि, कामदेवके समान बलवान् और सामर्थ्यवान जगत्में कोई नहीं है, जिसके प्रभावसे परमसुन्दर सन्तान और विषयका आनन्द प्राप्त होताहै, इससे बढ़कर परमहितकारी और आनन्दविहारी कौन है ? धन्य है उस निर्विकार जगदाधार परमेश्वरको जिसने संसारके उपकारार्थ सब पदार्थोंको मथकर ऐसे मनोहर मन्मथको उत्पन्न किया, और संसारमें बड़े बड़े ऋषि मुनि प्रगट हुए उन सबने ज्ञान ध्यानहीमें अपनी अवस्था व्यतीत की, परन्तु विषयानन्दके सुखसे विमुख रहे, उस स्वादको नहीं जाना बड़े बड़े ग्रन्थकार वारंवार यही कहतेहै कि, संसारमें रसिकजनोंके लिये कामिनीही सब कामकी सिद्ध करनेवाली है।

द्रष्टव्येषु किमुत्तमं मृगदृशां प्रेमप्रसन्नं मुखम्
घ्रातव्येष्वपि किं तदास्यपवनः श्राव्येषु किं तद्वचः ॥
किं स्वाद्येषु तदोष्ठपल्लवरसः स्पृश्येषु किं तत्तनु-
र्ध्येयं किं नवयौवनं सुहृदयैः सर्वत्र तद्विभ्रमः ॥१॥

अर्थ–संसारमें रसिकजनोंके देखनेयोग्य पदार्थोंमें उत्तम पदार्थ क्या है ? मृगनयनी पिकवयनी स्त्रियोंका परमानुरागसहित पूर्णचन्द्रवत् प्रसन्न वदन, सूँघनेके लिये महासुगन्धित मुखारविन्दकी सुगन्धि, सुननेके लिये कोकिलकंठवत् मधुर वाणी, स्वादलेनेके लिये उनके अधरामृतका स्वरस, स्पर्शके लिये कोमलांगियोंकी कोमल तनु और ध्यान करनेके लिये उनका नवयौवन और कामकौतूहल, जब सर्वसिद्धिदायक ऐसी मनोरमा कृशोदरियोंको छोड़कर जो लोग योगकरतेहैं उनका संसारमें जन्म लेना वृथा है ।

मित्रगण ! भोगमें आनन्द तो अनेक प्रकारके हैं परन्तु मूर्खोंके लिये विकारभी अपारही हैं, इस कारण उन लोगोंको चाहिये कि, इसका उपाय सदैव करते रहें, और यत्न नहीं करते वह मूर्ख शीघ्रही नपुंसक होजातेहैं, अब किञ्चित चित्त लगाकर विचार कीजिये कि, जब पुरुष नपुंसक होजाताहै और उसके घरमें परमसुन्दरी सुकुमार नवयौवना स्त्री होतीहै तो उस पुरुषके चित्तमें कितना क्लेश होताहै, इस विषयमे सहस्रों विषयी विष खाखाकर मरगये, उन लोगोंका मरण सुन और अनेक नपुसकोको दुःखी देख, श्रीमान् वैश्यवंशावतंस सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी मुम्बईनिवासीने बड़े परिश्रमसे "कामकौतूहल" नामक ग्रन्थ मँगाकर भाषानुवाद करनेके लिये मेरे पास भेजा, उसमें एकसे एक उत्तम नपुंसकोंके अनेक उपाय थे, मैंने उस ग्रन्थको परमोपकारी जान "नपुंसकसंजीविनी" नाम टीका रचकर श्रीमान् सेठजीकी सेवामें समर्पण किया । शुभमस्तु.

श्रावणशुक्ला १३, संवत् १९५५. } आपका परमहितकारी–शालिग्राम वैश्य, मुरादाबाद–सिटी.



श्रीराधागोविन्दाभ्यां नमः ।

अथ कामकौतूहलम्.

भाषाटीकासमेतम्.

सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकम् ।
अनंगरंगसागरं नमामि कृष्णनागरम् ॥
समस्तगोपनायकं निकामकामदायकम् ।
दृगन्तचारुसायकं नमामि वेणुगायकम् ॥ १ ॥

क्लीबत्वनाशनोपायं वाजीकरणकं तथा ।
वीर्यरोधं लिंगवृद्धिं स्थूलीकरणमेव च ॥
शुक्रवृद्धिं बलं पुष्टिं तथा कामप्रदीपनम् ।
भगद्रावणवंध्यत्वे पुष्पनाशमनुक्रमात् ॥
पुरुषस्त्रीषु ये रोगाः प्रमेहप्रदरादयः ।
वन्ध्यापुत्रकरं यत्तु पुरुषो वीर्यवान्भवेत् ॥
सर्वाण्येतानि यत्नेन कथ्यन्ते तु विनिश्चयात् ।
नानाग्रंथमतं वीक्ष्य विचार्य च पुनः पुनः ॥
तेषु सर्वविचारेषु लिखते मेहनाथकः ॥ १ ॥

अर्थ—इस ग्रन्थमें नपुंसकताके नष्ट करनेका उपाय, वाजीकरण, वीर्यस्तम्भन, लिंगवृद्धिकरण, स्थूलीकरण, शुक्रवृद्धि, बलवृद्धि, पुष्टिकरण, कामदेवको दीपन करनेकी विधि, योनिद्रावण, वन्ध्याकरण, पुष्पनिवारण, तथा स्त्री पुरुषोंके प्रमेहप्रदरादिक रोग, वन्ध्याके पुत्र उत्पन्न करनेकी विधि और पुरुषोंके अत्यन्त वीर्य्य के बढानेकी विधि इन सबको बड़े यत्नोंसे

कहैंगे । अनेक ग्रंथों के मतोंको देखकर और वारंवार इन ग्रंथोंको विचारकर मैं मेहनाथ यह "कामकौतूहल" नामक ग्रंथ रचताहूं ॥ १ ॥

इति प्रथमः प्रकाशः ।

अथ नपुंसकनिदानम् ।

हस्तकर्मरता ये च दुष्टेन्द्रियकुयोनिषु ।
रमंते योनिरोगासु वृद्धस्त्रीषु च ये नराः ॥
मलिनांग्या च गुर्विण्या ऋतुमत्या तथैव च ।
मेदस्व्यनूपजाताभी रूक्षशीतलभोजनैः ॥
तेषु तेषु प्रपद्यन्ते केचिद्रोगास्तु देहिनाम् ।
क्षीणधातुश्च क्लीबत्वकारणं सुश्रुतं मतम् ॥
उपदंशप्रमेहाश्च पिडिकाश्च भगन्दरः ।
इन्द्रियं मैथुनरतं पीडचते क्लीवसम्भवः ॥
वातपित्तकफैश्चैव वीर्यमार्गेण पीडचते ।
कृच्छ्राश्मरी भवेदाढचा षंडत्वकारणं परम् ॥ १ ॥

अर्थ—हस्तमैथुन करनेवाले मनुष्योंके, दुष्टयोनिवाली स्त्रियोंके साथ मैथुन करनेसे, अथवा पशु आदिक (गाय, भैस, घोड़ी, कुतिया) के साथ, या पुंमैथुन करनेसे, वृद्धा स्त्रियोंके साथ मैथुन करनेसे, या योनिरोगवाली स्त्रियोंके साथ मैथुन करनेसे,मलिन अंगवाली स्त्रियोंके साथ मैथुन करनेसे,गर्भिणी स्त्रियोंके साथ मैथुन करनेसे,ऋतुमती अथवा जिन्होंने तत्काल ऋतुस्नान कियाहो उनके साथ मैथुन करनेसे,अधिक स्थूल शरीरवाली स्त्रियोंके साथ मैथुन करनेसे, अनूपदेश (शीतल देश या खादर) में उत्पन्न होनेवाली स्त्रियोंके

साथ मैथुन करनेसे और रूखे तथा शीतल भोजन करनेसे मनुष्योंको नपुंसकता उत्पन्न होतीहै । धातुका क्षीण होना नपुंसकताका कारण है ऐसा सुश्रुतका मत है । तथा उपदंश, प्रमेह, प्रमेहपिडका और भगन्दर रोगयुक्त होनेपर जो मनुष्य मैथुन करतेहैं, उनको नपुंसकता उत्पन्न होतीहै । वात, पित्त, कफके कोपसे वीर्यके मार्गसे पीडित होतेहैं । तथा मूत्रकृच्छ्र और पथरी आदिभी नपुंसकताका कारण है ॥ १ ॥

देहिनां विविधा चेष्टा सर्वरोगविकाशिनी ।
घृतक्षीरसिता सेव्या मधुराहारभक्षिता ॥
गोधूममाषशालीनां शृंगाटककसेरुकम् ।
श्वेतवृंताकखर्बूजं कन्दमूलानि यानि च ॥
मधूकं शाल्मलीपुष्पं खर्जूरं नारिकेलकम् ।
वदामं भक्षितं नित्यं वाजीकरणकं भवेत् ॥ २ ॥

अर्थ—मनुष्योंके शरीरमें सर्वरोगोंको प्रकाशितकरनेवाली अनेक प्रकारकी चेष्टा हैं । सदैव घी, दूध और मिश्री इनका सेवन, मधुर आहारका भक्षण, तथा गेहूं, उड़द, शालिचावल, सिंगाडे, कसेरू, सफेदकटेरी, खर्बूजा, पुष्टिकारक कंदमूल, महुआ (या मुलैठी) सेमलके फूल, खजूर, नारियल और वादाम, इनका भक्षण यह सब वाजीकरण हैं ॥ २ ॥

अथ वाजीकरणद्रव्यम् ।

तिलेक्षु मुशलीद्राक्षा मधुयष्टी पुनर्नवा ।
शतमूलीमर्कटजं वीजं गोक्षुरमेव च ॥

कोकिलाक्षमश्वगंधा वाराहीकन्दमेव च ।
कन्दं मार्जारिकायाश्च करहाटं तथैव च ॥
जातीफलं जातिकोशं लवंगं वंशलोचनम् ।
सुधा धात्री खाखसं च मस्तंगी मोचरसस्तथा ॥
पिप्पली नागरं मुस्ता यवानी पारसी तथा ।
वृष्याण्येतानि कथ्यन्ते बहुधानामग्रंथतः ॥ ३ ॥

अर्थ—तिल, ईख, मुसली, दाख, मुलेठी, पुनर्नवा, शतावर, कौंचके बीज, गोखरू; तालमखाना, असगंध, वाराहीकंद, विदारीकंद, अकरकरा, जायफल, जावित्री, लौंग, वंशलोचन, सालममिश्री, आमले, खसखस, मस्तगी, मोचरस, पीपल, सोंठ, नागरमोथा और खुरासानी अजवायन, इन सबको वाजीकरण द्रव्य कहते हैं ॥ ३ ॥

वाजीवीर्यकरं पुष्टिभोगिनां भोगकारकम् ।
मद्यमांसानि सर्वाणि भृंगाहिफेनमोदकम् ॥
रागं सुगंधं ताडागं श्वेतवस्त्राविधारणम् ।
स्वर्णं तारं च ताम्रं च नागं वंगं च लौहिकम् ॥
अभ्रकं तालसत्वं च हिंगुलं पारदं तथा ।
रसधातूनि सर्वाणि धातुवाजीषु कारणम् ॥
रोगाश्च सर्वे नश्यन्ति तथा वीर्यकराणि च ।
बाला स्त्री दुग्धताम्बूलं मर्दनं तिलतैलजम् ॥
मधुराहारभोज्यानि स्नानमुष्णोदकेन तु ।

नित्यकर्म्म बलं पुष्टिं षंढत्वनाशनं परम् ॥ स॰
सर्वाण्येतानि कथ्यन्ते मनोत्साहो मनस्विनः ॥ ४ ॥

अर्थ–यह वाजीकरण–वीर्यजनक, पुष्टिकारक, और भोगी मनुष्योंको अत्यन्तकामको देनेवालाहै । एवं सर्वप्रकारकी मदिरा और मांस, भंग, अफीम, कंद (एक प्रकारकी मिश्री), विविध प्रकारके राग (गाना इत्यादि), अनेक प्रकारके सुगंधि, सुंदर निर्मल जलवाले सरोवर, सफेद वस्त्रोंका धारण, तथा सोना चांदी तांबा, सीसा, वंग, लोहा, अभ्रक, हरतालका सत्व, सिंग्रफ, पारा और सर्व प्रकारके रस, धातू, रत्न आदिकी भस्म यह सब उत्तम वाजीकरणहैं । यह–सर्व प्रकारके रोगोंको हरनेवाले और अत्यन्त वीर्यको करनेवाले हैं । बाला स्त्री, दूध, ताम्बूल, तिलके तैलकी मालिस, मधुर आहारोंका भोजन और उष्ण जलसे स्नान, इनको सदैव सेवन करनेसे बल और पुष्टि होतीहै तथा नपुंसकताका नाश होताहै । यह सब मनुष्योंके मनमें उत्साह करनेवाले हैं, अथवा मनमें कामको उत्पन्न करनेवाले हैं ॥ ४ ॥

इति द्वितीयप्रकाशः ।

अथ चूर्णाधिकारः ।

अथ गोक्षुरादिचूर्णम् ।

गोक्षुरकः क्षुरकः शतमूली वानरी नागवलातिवला च ।
चूर्णमिदं पयसा निशि पीतं यस्य गृहे प्रमदाशतमस्ति ॥१॥

अर्थ–गोखुरू, तालमखाना, शतावर, कौंचके बीज, गंगेरन और कंघी, इनको एकत्र पीस चूर्ण करके दूधके साथ रात्रिके समय वह मनुष्य पीवै जिसके घरमें १०० सौ स्त्री होवैं ॥ १ ॥

अथ द्वितीयं गोक्षुरादिचूर्णम् ।

त्रिकंटकात्मगुप्तानां बीजचूर्णं सशर्करम् ।
क्षीरेण यः पिबेद्गच्छेद्दशदारं निरंतरम् ॥ २ ॥

अर्थ—गोखुरू और कौंचके बीज, इनके चूर्णको मिश्री मिले दूधके साथ सेवन करनेसे दश स्त्रियोंके पास जासक्ता है ॥ २ ॥

अथ मुसलीचूर्णम् ।

मुशलीकन्दचूर्णस्य गुडूचीसत्वसंयुतम् ।
वानरीगोक्षुराभ्यां च शाल्मलीशर्करामलैः ॥
आलोड्य घृतदुग्धाभ्यां भक्षयेत्कामवृद्धये ॥ ३ ॥

अर्थ—मुसलीका चूर्ण, गिलोयका सत्व, कौंछके बीजोंका चूर्ण, गोखरू,सेमलकी जडका चूर्ण और चीनी इन सबको एकत्रित करकै घी और दूधमें मिलाकर कामदेवको बढानेके लिये सेवन करै ॥ ३ ॥

अथ वाराहीकन्दचूर्णम् ।

वाराहीकन्दभृंगाभ्यां पलं षोडश चूर्णितम् ।
किंचिदाज्येन भृष्टं च सितायुक्तं च कारयेत् ॥
त्वक्पत्रनागपुष्पाभ्यां केसरं मधुयाष्टिका ।
एतानि पलमात्राणि शर्करा सममेव च ॥
आलोड्य घृतदुग्धाभ्यां पिबेत्कामं निशामुखे ।
वीर्यवृद्धिकरं पुंसां बहुरामासु रम्यते ॥ ४ ॥

अर्थ—वाराहीकंद का चूर्ण और भांगरेका चूर्ण सोलह पल लेकर किंचित् घीमें भूनकर मिश्री मिलाके सेवन करे, यह अत्य-

न्त कामदेव को बढ़ावैहै, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, केसर, और मुलैठी यह प्रत्येक चार चार तोले लेवै और सबकी बराबर चीनी लेवै, सबको एकत्र पीसकर घी और दूधमें मिलाकर संध्या-समय सेवनकरै । यह अत्यन्त वीर्यको बढ़ावै और अनेक स्त्रियोंमें विषय करनेकी शक्तिको उत्पन्न करेहै ॥ ४ ॥

अथ शतावरीचूर्णम् ।

शतावरीगोक्षुरवंगदर्भशृंगाटकानागबलात्मगुप्ताम् ।
सितासमानं निशि चूर्णमेषां दुग्धेन पीतं प्रकरोति कामम्॥
प्रमेहनाशं च करोति शीघ्रं कृच्छ्राश्मरीनाशनमुख्यमेव॥५॥

अर्थ–शतावर, गोखरू, वंगकी भस्म, डाभी, सिंघाडे, गंगेरन, और कौंचके बीज इन सबका चूर्ण समानभाग और सबकी बराबर मिश्री मिलावै, इसको रात्रिके समय दूधके साथ सेवन करनेसे कामदेव अत्यन्त प्रबल होताहै, तथा प्रमेहको दूरकरै और पथरी एवं मूत्रकृच्छ्रको दूर करै है ॥ ५ ॥

अथ मदनप्रकाशचूर्णम् ।

कोकिलाक्षस्य बीजानि मुसलीकन्दनागरम् ।
वाजिगंधा कपीबीजं शाल्मलीपुष्पमेव च ॥
बला शतावरी मूलं मोचाह्वं च त्रिकंटकम् ।
जातीफलं च माखन्नं मातुलानी तुगा तथा ॥
एतानि समभागानि सिता सर्वसमानिका ।
पयोमध्ये पिबेद्रात्रौ कर्षयुग्मं च नित्यशः ॥

बलवीर्यकरं पुंसां प्रमेहव्याधिनाशनम् ।
मदनोदयप्रदीपं च प्रौढानां द्रावणं परम् ॥ ६ ॥

अर्थ—तालमखानेके बीज, मुसली, सोंठ, असगंध, कौंचके बीज, सेमलके फूल, खिरेंटी, शतावर, मोचरस, गोखरू, जायफल, मखाने, भांग और वंशलोचन, यह सब समान भाग और सबकी बराबर मिश्री लेवै, सबको एकत्र पीसकर प्रतिदिन इसमेंसे दो तोले प्रमाण रात्रिके समय दूधके साथ सेवनकरे यह अत्यन्तबल और वीर्य्यकारक, प्रमेहनाशक है. इसको मदनोदयप्रदीप कहते हैं । यह प्रौढ़ा स्त्रियोंको द्रावण करनेवाला है ॥ ६ ॥

अथ कपित्थमज्जादिचूर्णम् ।

कपित्थफलबीजं च त्वचारहितचूर्णितम् ।
पलार्द्धन्तु पिबेन्नित्यं शर्करा दुग्धमेव च ।
क्लीबत्वनाशनं श्रेष्ठं वीर्यवृद्धिकरं परम् ॥ ७ ॥

अर्थ—कैथके छिलेहुए बीजोंको पीसकर दो तोले प्रमाण मिश्री मिले दूधके साथ पान करनेसे नपुंसकता दूर होती है, तथा अत्यन्त वीर्य्यकी वृद्धि होतीहै ॥ ७ ॥

अथ बृहद्वाराहीकंदचूर्णम् ।

वाराहीकंदशृंगाटं कन्दमार्जारमेव च ।
चूर्णं सूक्ष्मं कृतं सर्वं पलमानं पृथक्पृथक् ॥
घृतभृष्टं तु तच्चूर्णं पश्चादेतन्महौषधम् ।
चातुर्जातं लवंगं च पिप्पली नागरं तुगा ॥
एतान्द्विपलिकान्भागान्सिता सर्वसमानिका ।

पलार्द्धं भक्षयेन्नित्यं षट्पलं महिषीपयः ॥
दिनांते च पिबेन्नित्यं क्लीबत्वनाशनं परम् ।
प्रमेहव्याधिशमनं वीर्यरोधं च कारयेत् ॥ ८ ॥

अर्थ–वाराहीकन्द, सिंगाडे, और विदारीकंद, प्रत्येकका चूर्ण चार चार तोले लेकर घीमें भून लेवै, फिर इसमें दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, लौंग, पीपल, सोंठ और वंशलोचन, यह सब आठ तोले और सबकी बराबर मिश्री लेवै, प्रतिदिन दो तोले यह औषधि छेः पल भैंसके दूधके साथ संध्या समय सेवन करै तो नपुंसकता और प्रमेहरोग दूर होवै और वीर्य्यस्तम्भन होता है ॥ ८ ॥

अथ माषचूर्णम् ।

त्रिपलं माषचूर्णन्तु तत्समा श्वेतशर्करा ।
आलोड्य मधुसर्पिभ्यां पलार्द्धं भक्षयेन्नरः ॥
क्लीबत्वं जायते यस्य स वीर्यबलवान्भवेत् ।
धातुवृद्धिकरं शीघ्रं वलीपलितनाशनम् ॥ ९ ॥

अर्थ–उड़दोंका चूर्ण ३ पल और सफेद मिश्री ३ पल, इनको सहत और घीमें मिलाकर प्रतिदिन दो तोले प्रमाण भक्षण करै, इसको सेवन करनेसे नपुंसक मनुष्य अत्यन्त वीर्यवान् और बलवान् होतेहैं, धातुवर्द्धक और शीघ्र वलीपलित रोग दूर होताहै ॥ ९ ॥

अथ मधुयष्ट्यादिचूर्णम् ।

मधुयष्टी तुगाक्षीरी धात्री गोक्षुरकं तथा ।
एतानि समभागानि सूक्ष्मचूर्णन्तु कारयेत् ॥

कर्षमानं च भक्ष्यं तु पलार्द्धं मधुना सह ।
वीर्यवृद्धिकरं पुंसां क्लीवत्वनाशनं परम् ॥
कृच्छ्राश्मरीं प्रमेहं च नाशयेत्परमौषधम् ॥ १० ॥

अर्थ—मुलैठी, वंशलोचन, आमले, गोखुरू, यह सब समान भाग लेकर बारीक चूर्ण करले, प्रतिदिन इसमेंसे एक तोले प्रमाण दो तोले सहतके साथ भक्षण करै । यह अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक, नपुंसकतानाशक, तथा मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी और प्रमेहरोग को दूर करेहै ॥ १० ॥

अथ गगनादिचूर्णम् ।

पलार्द्धमभ्रकं श्रेष्ठं पलार्द्धं सारमेव च ।
पलैकं गोक्षुरं चूर्णं तत्समं शतमूलिका ॥
शाणमात्रं पिबेन्नित्यं तप्तदुग्धं च माहिषम् ।
सप्तरात्रप्रयोगेण रमते रमणीशतम् ।
वीर्यवृद्धिकरं पुंसां बलवाजीकरं परम् ॥ ११ ॥

अर्थ—उत्तम अभ्रककी भस्म दो तोले कांतिसार दो तोले गोखुरोंका चूर्ण चार तोले और शतावर चार तोले, इन सबको एकत्र पीसकर चूर्ण करले, प्रतिदिन इसमेंसे छेःमासे खाय, ऊपरसे भैंसका गरम दूध पीवै, इसके सातदिन सेवन करनेसे सौ स्त्रियों से रमसक्ता है, तथा वीर्य्य अत्यन्त बढताहै, बलकी वृद्धि होती है और यह औषधि परम वाजीकरण है ॥ ११ ॥

अथेक्ष्वादि चूर्णम ।

इक्षुशुष्ककृतं चूर्णं यवगोधूमतंडुलम् ।
माषाणां तु तिलानां च समानं सर्वमेव च ॥

घृतभृष्टं च तच्चूर्णं पलमानं तु भक्षितम् ।
षट्पलं च पिबेन्नित्यं तप्तं च सुरभीपयः ॥
क्लीबत्वनाशनं श्रेष्ठं प्रमेहप्रदरं तथा ।
वीर्यवृद्धिकरं पुंसां बालानां चाङ्गवर्द्धनम् ॥ १२ ॥

अर्थ—सूखी ईखका चूर्ण, जौ, गेहूँ, चावल, उड़द और तिल यह सब समानभाग लेकर बारीक पीसकर चूर्ण करले, पश्चात् इस चूर्णको घीमें भूनकर इसमेंसे प्रतिदिन चार तोले खाय और ऊपरसे छै पल गायका गरमदूध पीवै । यह नपुंसकतानाशक,तथा प्रमेह और प्रदररोग दूर करै है । वीर्य्यवर्द्धक और बालकोंके अंगको बढ़ानेवाला है ॥ १२ ॥

अथाश्वगंधादिचूर्णम् ।

अश्वगंधा तिलाः कृष्णाः समानं सूक्ष्मचूर्णकम् ।
आलोड्य मधुसर्पिभ्यां पाययेच्च पलार्द्धकम् ॥
वृद्धिवाजीवीर्यकरं क्लीबत्वनाशनं परम् ॥ १३ ॥

अर्थ—असगंध, कालेतिल, इन दोनोंको बराबर लेकर बारीक चूर्ण करके घी और सहतमें मिलाकर प्रतिदिन दो तोले प्रमाण सेवनकरै, यह परम वाजीकरण, वीर्य्यवर्द्धक और नपुंसकतानाशक है ॥ १३ ॥

अथ सामचूर्णम् ।

श्वेतसाम समादाय पुष्पभारविवारकम् ।
गोदुग्धं षट्पलं पक्वं कर्षमानं पिबेन्निशि ॥
क्लीबत्वनाशनं श्रेष्ठं स्तम्भनं परमं स्मृतम् ।

प्रमेहव्याधिशमनं वाजीकरणमुत्तमम् ॥
बलपुष्टिकरं नृणां स्त्रीणां प्रदरनाशनम् ॥ १४ ॥

अर्थ—सफ़ेद सतोनेकी छालको गायके छै पल दूधमें औटाकर रात्रिके समय एक कर्ष प्रमाण पान करनेसे नपुंसकता दूर होतीहै, वीर्यस्तम्भन होताहै, प्रमेहरोग दूर होवै, उत्तम वाजीकरण, बल और पुष्टिकारक और स्त्रियोंका प्रदर रोग दूर होताहै ॥ १४ ॥

अथ करवीरादिचूर्णम् ।

करवीरस्य मूलानि जटा वानरिकं समम् ।
सूक्ष्मचूर्णं कृतं सर्वं शाणमानं पिबेन्निशि ॥
घृतदुग्धेन आलोड्य मानिनीमानछेदनम् ॥ १५ ॥

अर्थ—कनेरकी जड़, और कौंचके बीज इन दोनोंको बारीक पीसकर प्रतिदिन चारमासे इस औषधिको घी दूधमें मिलाकर रात्रिमें खाय, इससे—बड़ी बड़ी गर्ववती स्त्रियोंका मानभंग होता है ॥ १५ ॥

इति तृतीयः प्रकाशः समाप्तः ।

अथ पाकाधिकारः ।

अथ गोक्षुरादिवटी ।

गोक्षुरं वानरीबीजं गंगावत्याश्च बीजकम् ।
एतच्च षट्पलं योज्यं वाराहीद्विपलं तथा ॥
शतावर्याः पलैकं तु कंदौ तौ पलपंचकम् ।
द्विपलं कर्कटीबीजं वाजिगंधाचतुःपलम् ॥

मुसल्याः पलसप्तं च जटा शाल्मलिकं तथा ।
द्विपलं तु जटा दर्भं सर्वमेकत्र चूर्णयेत् ॥
घृतं च द्विगुणं प्रोक्तं भृष्टं तु मृदुपावकम् ।
पश्चादौषधमेतत्तु युक्तभागं तु मानकम् ॥
सूक्ष्मैलापत्रकं कृष्णा धात्री नागस्य केशरम् ।
वंशजातं सोमवल्ली नागरं मरिचं तथा ॥
लवंगं केशरं वंगमभ्रकं सारमेव च ।
जातीफलं जातिपुष्पं रक्तचंदनकं तथा ॥
एतानि समभागानि चूर्णभागानि दापयेत् ।
शृंगाटकं कसेरूं च बादामं नारिकेलकम् ॥
पृथक्चतुःपलं योज्यं द्विपलं च शिलाजतु ।
सिता श्वेता च द्विगुणा मधुना च चतुष्पलम् ॥
कूष्माण्डपलविंशत्या पाकं कृत्वा विचक्षणः ।
पलार्द्धं तु गुटीं खादेत्सिद्धगोरक्षनिर्मिताम् ॥
तस्योपरि पिबेद्दुग्धं क्लीबत्वनाशनं परम् ।
प्रमेहविंशतिश्चैव मूत्रकृच्छ्रस्य चाष्टकम् ॥
शुक्रदोषं रजोदोषं मूत्राघातांस्त्रयोदश ।
एतेषां नाशनं श्रेष्ठं बलकामाग्निदीपनम् ॥ १ ॥

अर्थ–गोखुरू, कौंचके बीज, गंगापत्रीके बीज, यह सब छैः
ः पल, वाराहीकन्द दो पल, शतावर एक पल, विदारीकंद और
रविदारीकंद ५ पल, ककड़ीके बीज दो पल, असगंध चार
. मुसली सात पल, सेमरकी जड़ सात पल और डाभकी

जड़ दो पल लेवै, सबको एकत्र पीसकर दुगुने घीमें भूनकर दूधमें डालकर मंद मंद अग्निसे पकावै, फिर छोटी इलायची, तेजपात, पीपल, आमले, नागकेशर, वंशलोचन, वापची, सोंठ, काली मिरच, लौंग, केशर, वंग, अभ्रकसार, जायफल, जावित्री, लाल चन्दन, इन सबको समान भाग लेकर वारीक पीसकर चूर्ण करकै उपरोक्तमें मिलादेवै. सिंघाड़े, कसेरू, वादाम, नारियल, यह प्रत्येक चार चार पल, शिलाजीत दो पल, सफेद मिश्री सबसे दुगुनी, सहत चार पल और पेठा वीसपल, इन सबको एकत्र मिलाकर यथाविधिसे पकावै दोदो तोलेकी गोलियां बनालेवै, प्रतिदिन एक गोली खाय और ऊपरसे दूध पीवै यह वटी—श्रीमान् गोरक्षसिद्धने निर्माण करी है यह गोली—नपुंसकतानाशक; तथा वीसप्रकारके प्रमेह,आठ प्रकारका मूत्रकृच्छ्र, वीर्यदोष, रजोदोष; तेरहप्रकार का मूत्राघात इन सबको नष्ट करै है, एवं वल और कामाग्निको दीपन करैहै ॥ १ ॥

अथ माषाद्यवलेह ।

मसूरमाषौ संयोज्य महिपीदुग्धपाचनम् ।
गोघृतेन समालोड्य द्विपलं नित्यमेव च ॥
एतस्याभ्यासतः पुंसां क्लीवत्वनाशनं परम् ॥२॥

अर्थ—मसूर और उडदोंके चूनको भैंसके दूधमें पकाकर गायके घीमें मिलाकर नित्य दो पल खाय, इसके अभ्याससे नपुंसकता दूर होतीहै ॥ २ ॥

अथाश्वगंधादिचूर्णम् ।

अश्वगंधा पलं पंच गोक्षुरं द्विपलं तथा ।
मोचाह्वं पलमेकन्तु पलैकं कोकिलाक्षकम् ॥
पलैकं कृष्णमाषाश्च मधुयष्टी पलद्वयम् ।
एतच्छतावरीमूलं मुसल्यौ द्वे चतुष्पलम् ॥
एतानि सूक्ष्मचूर्णानि गालितं शुभ्रवस्त्रके ।
द्विद्रोणमहिषीदुग्धे पाचयेन्मृदुवन्हिना ॥
घनीभूते तु पयसि चूर्णमेतद्विनिक्षिपेत् ।
पश्चादेतान्यौषधानि दापयेत्सुविचक्षणः ॥
शुद्धं रसं बलिं शुद्धं पलैकं तु विनिक्षिपेत् ।
मस्तकी केसरं वंगमभ्रकं लोहमेव च ॥
जातीफलं जातिकोशं लवंगं वंशलोचनम् ।
पिप्पली नागरैला च पलमानं पृथक्पृथक् ॥
गोघृतं प्रस्थमानं तु शर्करा द्विगुणा मता ।
एतत्पाककृता चाथ गुटिका तु पलार्द्धकम् ॥
प्रातः सायं च यः खादेत्कामोद्दीपनकं भवेत् ।
वीर्यवृद्धिकरं पुंसां षंढत्वनाशनं परम् ॥
प्रमेहव्याधिशमनं वाजीकरणमुत्तमम् ।
वातजा व्याधयः सर्वे नश्यंत्येव न संशयः ॥ ३ ॥

अर्थ—असगंध पांच पल, गोखुरू दो पल, मोचरस एक पल, तालमखाना एक पल, काले उडद एक पल, मुलैठी दो पल, सतावर दो पल, मुसली और काली मुसली दो पल, इन सबको एकत्र

कर बारीक कपडेमें छानलेवै फिर इसको भैंसके दो द्रोण दूधमें डालकर पकावै, जब पकते पकते गाढ़ा होजाय, तब निम्नलिखित औषधि मिला देवे, शुद्धपारा चार तोले, शुद्ध गंधक चार तोले, मस्तंगी, केशर, वंग, अभ्रक, लोहेकी भस्म, जायफल, जावित्री, लाग, वंशलोचन, पीपल, सोंठ और इलायची प्रत्येक चार चार तोले, गायका घी एक प्रस्थ (६४ तोले) चीनी दो प्रस्थ (१२८ तोले) इन सबको मिलादेवै, इन सबको एकत्र पकाकर दो दो तोलेकी गोली बनालेवै, प्रतिदिन एक गोली, प्रातःकाल और संध्यासमय सेवन करै, यह अत्यन्त कामको दीपन करनेवाला, अत्यंत वीर्यको बढ़ानेवाला, नपुंसकतानाशक, प्रमेहरोगनिवारक, उत्तम वाजीकरण और सर्व प्रकारकी वातव्याधियोंको निश्चय दूरकरताहै ॥ ३ ॥

अथ मानिनीमानच्छेदगुटिका ।

श्वेतवृंताकबीजानि बीजं तु कंटकारिका ।
मातुलानी अब्धिशोषं सहोरीबीजमेवच ॥
माकल्लं केसरं चैव जातीफलं च मस्तकी ।
कूर्चालं च तथा माजू पारसी तु यवानिका ॥
एतानि समभागानि सूक्ष्माणि कारयेद्बुधः ।
वटदुग्धेन तच्चूर्णं खल्वे कृत्वा विचक्षणः ॥
शाणमात्रां गुटीं खादेत्पिबेद्दुग्धं तथोपरि ।
यामैकं स्तम्भनं वीर्ये वाजीकरणकं भवेत् ॥
क्लीबत्वनाशनं श्रेष्ठं बलपुष्टिकरं नृणाम् ॥ ४ ॥

अर्थ—सफेद कटेरीके बीज, कटेरीके बीज, बिजोरेनींबू के बीज, समुद्र शोष, छुहारा, मखाना, केसर, जायफल, मस्तंगी, पाढ, माजूफल, खुरासानी अजवायन इन सबको समानभाग लेकर बारीक पीसकर बड़के दूधमें विधिपूर्वक खरल करै, फिर चार चार मासेकी गोली बनालेवै, प्रतिदिन एक गोली खाय और ऊपरसे दूधपान करै, इससे एक प्रहर वीर्य्यस्तम्भन रहता है, तथा यह वटी उत्तम वाजीकरण है । नपुंसकता नाशक और बल एवं पुष्टिको करनेवाली है ॥ ४ ॥

अथ कामिनीविलास गुटी ।

बहुफली मोचरसं मुसल्यौ माकलं तथा ।
अठीफलस्थवी जानि बीजं च कोकिलाक्षकम् ॥
वानरीगोक्षुरकुटजमस्तंगीसिंधुशोषकम् ।
उटंकणस्य बीजानि पारसीकयवानिका ॥
जातीफलं तुगा माजू ज्योतिष्मत्या कुचीलकम् ।
जातीपत्रमश्वगंधा स्थूलजीरकवापची ॥
वरासत्त्वं लोहसारं विजयाबीजमुन्नतम् ।
एतानि समभागानि कर्षमाणं पृथक्पृथक् ॥
सूक्ष्माणि सर्वचूर्णानि गोदुग्धं च तुलां पचेत् ।
घनीभूतं च तं दृष्ट्वा शाणमात्रं गुटीकृतम् ॥
एकैकं भक्षितं पुंसां क्लीवत्वे परमौषधम् ।
प्रमेहं शुष्कगात्रत्वं फिरंगं शुक्रदोषजम् ॥
कासं श्वासं जयत्याशु वाजीकरणमुत्तमम् ।

मूत्रकृच्छ्रगदांश्चैव वीर्यप्रासरकं तथा ॥
सर्वाण्येतानि नश्यन्ति तिमिराणि यथा रविः ॥ ५ ॥

अर्थ—बहुफली (बबूरके बीज), मोचरस, मुसली, स्याहमुसली, मखाने, अठीफल (कैथके बीज), तालमखानेके बीज, कौंछके बीज, गोखुरू, इन्द्रजौ, मस्तंगी, समुद्रशोष, उटंगण के बीज, खुरासानी अजवायन, जायफल, वंशलोचन, माजू, मालकांगनी, पाठ, जावित्री, असगंध, काला जीरा, बापची, गिलोयका सत, लोहसार, भांगके बीज, यह प्रत्येक एक एक तोले लेकर सबको एकत्र पीसकर १२॥ सेर गायके दूधमें पकावै, जब पकते पकते गाढ़ा होजाय तब उतारकर चार चार मासे की गोलियां बनालेवै, प्रतिदिन एक गोली खाय तो अवश्य नपुंसकता दूर हो. तथा प्रमेह, शरीरका सूखना, फिरंगरोग, शुक्रदोषज खाँसी, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, वीर्यकी चंचलता यह सब दूर होतेहैं । यह उत्तम वाजीकरण है ॥ ५ ॥

अथ वल्लभा गुटी ।

बहुफली मोचरसं मुसल्यौ करहाटकम् ।
तुगा च मर्कटीबीजं कोकिलाक्षमुटंगणम् ॥
गोक्षुरं ह्यमृतासत्त्वं जपापुष्पं लिसोरकम् ।
मस्तंगी जातिकोशं च लवंगं वंशजातकम् ॥
एतानि समभागानि सिता च द्विगुणा भवेत् ।
पाकं कृत्वा गुटीं बद्ध्वा कोलमात्रं तु भक्षयेत् ॥

सायंकाले रतांतेच पिबेद्दुग्धं तदोपरि ।
नपुंसकत्वरोगघ्नं वीर्यवृद्धिकरं नृणाम् ॥
प्रमेहं प्रदरं कृच्छ्रं शुक्रदोषं च मेदसि ।
एतत्सर्वं निहन्त्याशु वाजीकरणमेव च ॥ ६ ॥

अर्थ—बहुफली(बबूरके बीज)मोचरस,मुसली, काली मुसली, अकरकरा, वंशलोचन, कौंचके बीज, तालमखाना, उटंगण, गोखुरू, गिलोयका सत्त्व, जपाके फूल, लिसोड़े, मस्तंगी, जावित्री, लोंग और वंशलोचन यह सब समान भाग और सबसे दुगुनी चीनी लेवै सबको यथाविधिसे मिलाकर पकावै,फिर जब पाक समाप्त होजाय तब बेरकी बराबर गोलियां बनालेवै, प्रतिदिन संध्याके समय एक गोली खाकर मैथुन करै, मैथुनके अंतमें दूध पीवै, यह नपुंसकतानाशक, वीर्यवर्द्धक, तथा प्रमेह, प्रदर, मूत्रकृच्छ्र, शुक्र-दोष और मेददोषको नष्ट करै है एवं उत्तम वाजीकरणहै ॥ ६ ॥

अथ वाजीकरणगुटी ।

करवीरस्य बीजानि बृहतीफलमेव च ।
वृद्धदारस्य बीजानि वानरी बीजमूलकम् ॥
एतानि समभागानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ।
तांबूलरससंमर्द्यं वटीवल्लयुगं कृतम् ॥
एकैकं भक्षितं पुंसां नपुंसकगदापहम् ।
वीर्यवृद्धिकरं पुष्टं बलवाजीकरं परम् ॥ ७ ॥

अर्थ—कनेरके बीज, कटेरीके फल, विधारेके बीज और कौंछके बीज, यह सब समानभाग लेकर बारीक पीस लेवै, इसको

पानों के रसमें खरल करके आठ आठ रत्तीकी गोली बनावै। इसमेंसे प्रतिदिन एक गोली खाय तो नपुंसकता अवश्य दूर हो। यह अत्यन्त वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, बलकारक और उत्तम वाजीकरण है ॥ ७ ॥

अथ वाजीकरणमोदकः ।

वानरीबीजमादाय निस्तुषीकृत शोषितम् ।
प्रस्थमात्रं सूक्ष्मचूर्णं गोदुग्धं घृतप्रस्थकम् ॥
पचेन्मन्दाग्निना सम्यग यावल्लपासिका भवेत् ।
शुष्कं मर्द्यं ततश्चूर्णं पश्चादौषधयोजितम् ॥
मुसल्याः प्रस्थमात्रं तु यवानीपारसीकुडम् ।
करहाटं पलैकं तु गृंजनं बीजपट्पलम् ॥
प्रस्थमात्रं खाखसं च शणमूलं च प्रस्थकम् ॥
त्रिकण्टकः प्रस्थमात्रमुटंगणतदर्धकम् ॥
मोचरसं षट्पलं च द्वादशं नारिकेलजम् ।
सूक्ष्मचूर्णीकृतं सर्वं घृतप्रस्थे च भर्जितम् ॥
गुडं सर्वसमं योज्यं मोदकं पलमात्रकम् ।
भक्षितं च दिनान्ते तु पयः पीत्वा तदोपरि ॥
क्लीवत्वनाशनं श्रेष्ठं बलपुष्टिप्रदायकम् ।
वीर्यवृद्धिं करोत्याशु वाजीकरणमुत्तमम् ॥ ८ ॥

अर्थ-कौंछके बीजोंको पानीमें भिजोदेवै, पश्चात् उनके छिलके अलग करके सुखादेवै, फिर बारीक पीसकर कपड़ेमें छानलेवै, एक प्रस्थ इस चूर्णको एक प्रस्थ गायके दूध और घीमें

डालकर मंद मंद अग्निसे पकावै जब पकते पकते गाढ़ा होजाय तव उतार लेवै, फिर इसमें मुसली एक प्रस्थ (६४ तोले) खुरासानी अजवायन एक कुड़व (३२ तोले) कनक धतूरेके बीज चारतोले, गाजरके बीज छैपल, खसखसका फल एक प्रस्थ (६४ तोले) सनकी जड़ एक कुड़व (३२ तोले) गोखुरू एक प्रस्थ, उटंगणके बीज ३२ तोले, मोचरस छैपल, नारियलकी गिरी १२ पल, इन सबको एकत्र पीसकर एक प्रस्थ घीमें भून-लेवै, फिर सबकी बराबर गुड़लेवै, इनको एकत्र मिलाकर चार चार तोलेके मोदक वनालेवै, प्रतिदिन एक मोदक संध्या समय भक्षण करै और ऊपरसे दूध पीवै, यह वाजीकरणमोदक, नपुं-सकतानाशक, बलपुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक और उत्तम वाजीकरण है ॥ ८ ॥

अथ कामसुन्दरी वटी ।

कन्दमार्जारवाराही शृंगाटं च कसेरुकम् ।
प्रस्थमेकं तु संयोज्यं चूर्णंतु घृततत्समम् ॥
मंदाग्निना पचेद्विद्वान् यावत्पक्कं विनिर्दिशेत् ॥
तत्पश्चादौषधं देयं तुगापत्रं लवंगकम् ॥
पिप्पलीनागपुष्पाणि पलमानं पृथक्पृथक् ।
सिता च द्विगुणा योज्या पाकःकार्यो गुटीकृतम् ॥
पलार्धं भक्षितं नित्यं दुग्धं पीत्वा तदोपरि ।
वीर्यवृद्धिकरं पुंसां क्लीवत्वं नाशनं परम् ॥
शुक्रस्तम्भं करोत्याशु प्रमेहप्रदरापहः ॥ ९ ॥

अर्थ–विदारीकंद, वाराहीकन्द, सिंघाड़े और कसेरू, यह प्रत्येक एक एक प्रस्थ लेकर वारीक पीसकर चूर्ण करले और सब चूर्णकी बराबर घी मिलावै, इसको मंद मंद अग्निसे पकावै जब पाक समाप्त होजाय तब वंशलोचन, तेजपात, लौंग, पीपल और नागकेशर, प्रत्येक चार चार तोले और सब चूर्णसे दूनी मिश्री डालकर दो दो तोलेकी गोली बना लेवे, प्रतिदिन एक गोली खाय ऊपरसे दूध पीवै। यह "कामसुंदरी वटी"–वीर्यवर्द्धक, नपुंसकतानाशक, वीर्यस्तम्भक, और प्रमेह तथा प्रदरादि समस्त रोगोंको हरनेवाली है ॥ ९ ॥

अथ कामकुतूहलवटी ।

वानरी तालमूली च कुलिंजं पिप्पली तुगा ।
जातीफलं जातिकोशं मस्तंगी च कवाचिनी ॥
सूक्ष्मैला देवकुसुमं गोक्षुरं पुष्पपंचकम् ।
मेदा शतावरीमूलं माकल्लं कोकिलाक्षकम् ॥
अब्धिशोषं जटामांसी कंकोलं नागरं तथा ।
एतानि समभागानि सूक्ष्मचूर्णकृतानि वै ॥
मृगांडजा च कर्पूरं शाणमानं तु दापयेत् ।
काश्मीररससंमर्द्य गुटिकाशाणमानकम् ॥
एकैकं भक्षितं पुंसां सायंकाले तु नित्यशः ।
तस्योपरि पिबेद्दुग्धं मधुराहारसेवितम् ॥
मानिनीगर्वविध्वंसो वीर्यस्तम्भं करोति सः ।
कासश्वासप्रमेहं च फिरंगं नाशयेद्ध्रुवम् ॥ १० ॥

अर्थ—कौंछके बीज, मुसली, कुलिंजन, पीपल, वंशलोचन, जायफल, जावित्री, मस्तंगी, कबाबचीनी (शीतलचीनी) छोटी इलायची, लौंग, गोखुरू, पुष्पपंचक (गुलाब, मोतिया, बेला; चमेली, मदनबाण यह पाँच प्रकारके फूल) अथवा केवल केतकी के फूल, मेदा, सतावर, मखाना, तालमखाना, समुद्रशोष, बालछड़, कंकोल और सोंठ, यह सब समानभाग लेकर बारीक पीसलेवै, कस्तूरी और कपूर, प्रत्येक चार चार मासे, इनको एकत्र पीसकर केसरके रसमें खरल करके चार चार मासेकी गोलियाँ बनालेवै, प्रतिदिन संध्याके समय एक गोली खाय और ऊपरसे दूध पीवै । इसपै मधुर आहार भक्षण करै । यह "कामकुतूहलवटी" बड़ी गर्ववाली स्त्रियोंके मानको भंग करैहै, तथा वीर्यको स्तम्भन करैहै, एवं खांसी, श्वास प्रमेह और फिरंग रोगको दूर करैहै ॥ १० ॥

अथ कामविनोदगुटी ।

मुसलीद्वयमाकल्लं कवाचीनी च मस्तगी ।
जातीफलात्मगुप्ता च कोकिलाक्षं च मागधी ॥
गोक्षुरामृतवल्ली च ज्योतिष्मत्या बहूफली ।
अश्वगंधामूलबीजं खाखसं चाऽप्युटंगणम् ॥
नागवल्लीक्षुरं चैव गंधारी च कुलिंजकम् ।
नागफेनं तथा माजूबीजं कनकवल्लभा ॥
पलार्धमानं सर्वेषां सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ।
चातुर्जातं च गोदुग्धे कल्कीकृत्वा विचक्षणः ॥

प्रभातेषु शिलापिष्टं सितासर्पिःसमं भवेत् ।
गुटिकाकोलमानं च सायंकाले च भक्षितम् ॥
यामैकस्तंभनं वीर्ये वाजीकरणमेव च ।
बिंदुच्युतिं निहंत्याशु क्लीवत्वनाशनं परम् ॥
प्रमेहनाशनं श्रेष्ठं विनोदं कामसुंदरी ॥ ११ ॥

अर्थ–मुसली, कालीमुसली, मखाना, कवाबचीनी, मस्तंगी, जायफल, कौंछके बीज, तालमखाना, पीपल, गोखरू, गिलोय, मालकांगनी,बहुफली,असगंधकी जड़,खसखसके बीज, उटंगणके बीज, पान, तालमखाना, कपूरकचरी, कुलिंजन, अफीम, माजूफल, कनकधतूरेके बीज, और फूलप्रियंगू, प्रत्येक दो दो तोले लेकर बारीक पीसकर चूर्णकरले, एवं चातुर्जातक (दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर)दो तोले लेवै, सबको एकत्र गायके दूधमें शिलपै पीसलेवै,फिर उसमें मिश्री और घी बराबर मिलाकर बेरकी बराबर गोलियाँ बनालेवै, प्रतिदिन संध्या समय एक गोली खाय, पश्चात् मैथुनकरै तो वीर्य्य एक प्रहर स्तम्भन होताहै। यह उत्तम वाजीकरण वीर्य्यका बूँद बूँद करके निकलना, नपुंसकता और प्रमेहादि रोगोंको दूर करैहै ॥ ११ ॥

अथ बलवीर्यमानगुटी ।

पलैकं कनकं बीजं वृंताकस्य त्रिभिः पलैः ।
विदारी खाखसं बीजं मुसलीद्वयचव्यकम् ॥
अश्वगंधबलाबीजं माकन्दं वंशजातकम् ।

त्वगेला च लवंगं चाऽप्यब्धिशोषं च पिप्पली ॥
जातीफलं जातिकोशं तुगा धान्यं च कट्फलम् ।
यवानी पारसी धारा कोकिलाक्षं च गोक्षुरम् ॥
तिलशृंगाटकं कोलं पलार्द्धं च पृथक्पृथक् ।
चतुर्थांशं मोचरसं सूक्ष्मं चूर्णं तु कारयेत् ॥
शाल्मल्याश्च शिखा देया च चतुर्भागं च तत्समम् ।
गोदुग्धं च तुलामानं पाचितं मृदु वह्निना ॥
घनीभूतं पयो दृष्ट्वा त्वौषधं तद्विनिःक्षिपेत् ।
घृतं च षट्पलं योज्यं क्षौद्रंच षट्पलं क्षिपेत् ॥
सितापलद्वादशकं सर्वमेकत्र मर्दितम् ॥
पलार्द्धं गुटिकां कृत्वा दिनांते भक्षितं नृणाम् ।
दुग्धोदनं भोजनं च मधुराहारसेविता ॥
रतिका सन्मुखं दीपं दृश्यते यदि मैथुने ।
तावन्नमुच्यते वीर्यं यावद्दीपं न शांतयेत् ॥
नपुंसकं वीर्यकरं पुष्टं वाजी करं स्थिरम् ।
प्रमेह नाशनं शुष्कगात्रस्य परमौषधम् ॥ १२ ॥

अर्थ–कनक धतूरेके बीज चार तोले, कटेरीके बीज तीन-पल, विदारी कन्द, खसखसके बीज, मुसली, काली मुसली, चव्य, असगंध, खिरैंटीके बीज, मखाने, वंशलोचन, दालचीनी, इलायची, लोंग, समुद्र शोष, पीपल, जायफल, जावित्री वंशलोचन धनियाँ, कायफल खुरासानी, अजवायन, गिलोयका सत, ताल-मखाने, गोखुरू, तिल, सिंघाड़े और कंकोल, प्रत्येक दो दो तोले

और चौथाईभाग मोचरस लेवै, सबको एकत्र पीसलेवै तथा सेमलकी मुसलीका चूर्ण चारभाग लेवै, इसको साढे बारह सेर गायके दूधमें डालकर मंद मंद अग्निसे पकावै, जब पकते पकते दूध गाढ़ा होजाय तब उसमें छै पल घी, छै पल सहत, बारह पल मिश्री मिलाकर खूब मर्दनकरै,फिर दो दो तोले की गोली बनाकर संध्यासमय एक गोली खाय। इसपै दूधके साथ भोजनकरै और मधुर आहार भक्षण करै। इसको सेवन करकै मैथुनकरै, परन्तु मैथुन घरमें एकदीपक बालके रखलेवै. जबतक वह दीपक शान्त न होगा तबतक वीर्य नहीं छूटैगा। यह योग नपुंसकोंके वीर्यको उत्पन्न करनेवाला, पुष्टिकारक, वाजीकरण वीर्यको स्थिरकरनेवाला, तथा प्रमेह और शरीरकी शुष्कताको दूरकरै है॥ १२॥

अथ सिंहावर्णगुटी।

काश्मीरं च लवंगं च पत्रं जातीफलं तथा।
शर्करा शाल्मली माजू कारवी चाब्धिशोपकम्
तालमूली च माकह्लाशिफावर्बुरसर्जकम्।
कुचीलं मस्तगी दर्दमहिफेनं च वत्सकम्॥
एतानि षाणकं मानं सर्वं चूर्णं पृथक्पृथक्।
कस्तूरिका च कर्पूरं शाणार्द्धं दीयते बुधैः॥
समं च मधुना योज्या माषद्वयवटी कृता
सायं काले तु यः खादेत्पयः पीत्वा तदोपरि॥
वीर्यस्तम्भकरं पुंसां प्रहरैकं न संशयः।
वीर्यप्रभृतिये रोगा क्लीवत्वं नाशयेद्ध्रुवम्॥ १३॥

अर्थ—केशर, लोंग, जावित्री, जायफल, चीनी, सेमलकी मुसली, माजूफल, काला जीरा, समुद्र शोष, मुसली, मखाने, बबूरकी कौंपल, राल, पाढ, मस्तंगी, शुद्धसिंग्रफ, अफीम, इन्द्रयव यह प्रत्येक चार चार मासे, कस्तूरी और कपूर प्रत्येक दो दो मासे लेकर सबको एकत्र पीस लेवै, तथा सबकी बराबर सहत लेवै, उक्त चूर्णको सहतमें मिलाकर दो दो मासेकी गोली बनालेवै, प्रतिदिन संध्या समय एक गोली खाय और ऊपरसे दूध पीवै, इसको सेवन करनेसे वीर्य एक प्रहर तक स्तम्भन रहता है, तथा सर्व प्रकारके वीर्य्य विकार और सर्व प्रकारकी नपुंसकता दूर होतीहै, इसको सिंहावर्णगुटिका कहते हैं ॥ १३ ॥

अथ वीर्यवर्द्धन गुटी ।

विदारीगोक्षुरे क्षूरं शतमूली कुलिंजकम् ।
कदलीकन्दकं चैव पलमानं पृथक्पृथक् ॥
वानरीबीजमुत्तुंगं बलाबीजं तथैव च ।
एतान्द्विपलकान्भागानश्वगंधापलत्रयम् ॥
त्रिजातं च तमालं च कणा धात्री लवंगकम् ।
देवदारं नागपुष्पं तालमूली छडं तथा ॥
गुडूची वंशजातं च शाणमानं पृथक्पृथक् ।
सूक्ष्मंचूर्णं कृतं सर्वं निंबुनीरेषु भावितम् ॥
दर्भरसैश्च संमर्द्य शुष्कचूर्णं तु कारयेत् ।
समा च शर्करा योज्या पाकः कार्यो भिषग्वरैः ॥
पलार्धगुटिकां कृत्वा सायंकाले तु भक्षयेत् ।

नास्तिवीर्यं यस्य पुंसः स वीर्यबलवान् भवेत् ॥
सप्तनारीषु संभोगो वाजीकरणं च नित्यशः ।
वीर्यस्तम्भकरं पुंसां प्रमेहकृच्छ्रनाशनम् ॥ १४ ॥

अर्थ—विदारीकंद, गोखुरू, तालमखाना, सतावर, कुलिंजन, केलेका कंद, यह प्रत्येक चार चार तोले, कौंछके बीज, उटंगण के बीज, खिरैंटीके बीज, यह प्रत्येक दो दो पल, असगंध तीनपल, दालचीनी, इलायची, तेजपात, तमाल, पीपल, आमले, लौंग, देवदारू, नागकेशर, मुसली, बालछड़, गिलोयका सत और वंशलोचन, प्रत्येक चार चार मासे, इन सबको एकत्र बारीक पीस कर नीबूके रसमें खरल करै, फिर डाभके रसमें खरल करकै उस को सुखालेवै, सब चूर्णकी समान मिश्री मिलाकर मंद मंद अग्निसे पकावै, जब पाक समाप्त होजाय, तब दो दो तोलेकी गोलियाँ बनालेवै । प्रतिदिन संध्याके समय एक गोली खाय। यह वीर्यवर्द्धनवटी—वीर्यहीन पुरुषोंके वीर्यको उत्पन्न करेहै तथा बलको उत्पन्न करेहै । इसको सेवन करनेवाला मनुष्य सात स्त्रियोंके साथ भोग करसक्ताहै और यह उत्तम वाजीकरण है यह वीर्यस्तम्भक तथा प्रमेह और मूत्रकृच्छ्रको नष्ट करेहै॥ १४॥

अथ संमोहनी वटी।

लवंगजातीफलजातिकोशाः कंकोलमाकल्लकुबेरकंच ।
सर्वं समानं विजयार्धभागं तदर्धभागः खलु वत्सनागः ॥
विषार्धभागं त्वहिफेनकं च दद्याद्द्विपक् सर्वमिदं विभागम् ।
संमर्द्य चूर्णं हिसुसूक्ष्ममेतद्भृंगद्रवे यामचतुष्टयं च ॥

माषद्वयं भक्षित मित्थमत्र संमोहिनी नामवटी विधेया ॥
वीर्यं करोति प्रहरैकबद्धं वाजीकरं कामबलं विधत्ते ।
सश्वासकासं विनिहन्ति शीघ्रं सर्वं प्रमेहं च निराकरोति ॥
क्लीबत्वनाशं च करोति पुंसां सर्वान्गदान्हन्ति यथार्थमेव॥१५॥

अर्थ—लौंग, जायफल, जावित्री, कंकोल, मखाने, तुन, यह सब समानभाग और भांग, यह सब औषधियोंसे आधाभाग और भांगसे आधाभाग वत्सनाभ (मीठाविष) वत्सनाभसे आधाभाग अफीम लेवै. सबको एकत्र बारीक पीसकर भाँगरेके रस में चार प्रहरतक खरल करै, इसमें से प्रतिदिन दोमासे खाय इसको सम्मोहिनीवटी कहते हैं । इसके सेवन करनेसे वीर्य एक प्रहर तक स्तम्भन होताहै, उत्तम वाजीकरण, काम और बलको बढ़ाने वाली है । तथा श्वास, खाँसी, प्रमेह, नंपुसकता और नानाप्रकारके रोग दूर होतेहैं ॥ १५ ॥

अथ कनकसुन्दरी वटी ।

कनकबीजविमर्दितपारदं तदनु संक्षिपते बलि शुद्धकम् ।
तृतीयभागमितं ह्यहिफेनकं चतुरभाग मितं फलजातिकम्॥
द्विगुणबीज विमर्दितखाखसं चतुर्यामरसैः सह पेषितम् ।
यवचतुष्टयमानगुटी कृता सुरतकालसुभक्षितमानुपा ॥
तदनु मुंचति वीर्यं सयामकं हरतिमेहमहासुखकारकम्॥१६॥

अर्थ—कनकधतूरेके बीजोंके रसमें खरल किया हुवा पारा एकभाग, शुद्ध गंधक २ भाग, शुद्ध अफीम ३ भाग, और जायफल ४ भागलेवै, सबको एकत्र पीसकर दूने खसखसके रसमें खरलकरे

फिर चार चार जौकी गोली बनालेवै; प्रतिदिन रतिकालमें एक गोलीको भक्षण करै इससे एक प्रहरतक वीर्य स्तम्भन होताहै, तथा सर्व प्रकारके प्रमेहादि रोग दूर होतेहैं और महासुख उत्पन्न होताहै ॥ १६ ॥

अथ मदनवासगुटी।

भुजगफेनविषं विधु केशरं मृगमदं सकणा जल शोषकम्।
कनक बीज महौषध वंशजं फलजजातिक जातिपत्रकम्॥
रसजंबीर विमर्दित यामकं चणकमानगुटी भिषजा कृता।
रतिकाल सुभक्षित पर्णकं ललनया रतियोग सुखावहम्॥
हरति विंशतिमेहमहागदं कसनश्वास हृतं ग्रहणी गदम्।
मदनवास गुटीमभिधेयकं कथितनाथ सुवैद्य विचारकम् १७

अर्थ—अफीम, विष, कपूर, कस्तूरी, पीपल, समुद्र शोष, कनक धतूरेके बीज, सोंठ, वंशलोचन, जायफल, जावित्री, इन सब को समान भाग लेकर जम्भीरी नींबूके रसमें एक प्रहरतक खरल करै, फिर चनेकी बराबर गोलियां बनालेवै, प्रतिदिन मैथुनके समय पानमें रखकर गोली खाय. यह मदनवटी—अत्यन्त सुखकारक तथा वीस प्रकारके प्रमेह, खाँसी, श्वास और संग्रहणी रोगको नष्ट करै है ॥ १७ ॥

अथ वाजीकरणमोदकः।

शरेक्षुदर्भमूलानि काण्डेक्षुरक वालके।
शतावरी गोक्षुरं च विदारी कंटकारिका॥
जीवंती जीवको मेदा ऋषभो नागको वला।

मुशलीऋद्धिको रास्ना सात्मगुप्ता पुनर्नवा ॥
एषां त्रिपलिकान्भागान् माषाणा माटकं तथा ।
जलद्रोणे विपक्तव्यं अष्टभागावशेषितम् ॥
तत्र पेष्यन्ति मधुकं द्राक्षा खर्जूर पिप्पली ।
प्रियालबीज नैत्रैव वाराहीमश्वगंधकम् ॥
विदार्यामलकेक्षूणां रसस्य च पृथक्पृथक् ।
सर्पिषश्चाढकं दत्वा क्षीरद्रोणे च तद्भिषक् ॥
साधयेद्धृतशेषं तु पूतं योजनयेत्सुधीः ।
शर्करायास्तु गोक्षीर्याः प्रस्थोन्मितैः पृथक्पृथक् ॥
पलैश्चतुर्भिर्मागध्याः पलेन मरिचस्य च ।
त्वगेला केसराणां च चूर्णैरर्धपलोन्मितैः ॥
मधुना कुडवान् वाच्यं द्वाभ्यां तत्कारयेद्भिषक् ।
पलिकां गुटिकां कृत्वा यथाग्नि भक्षयेन्नरः ॥
एष वृष्यतमो योगो बृंहणो बलवर्धनः ।
अनेन सेव्यमानेन बलवाजीकरं परम् ॥
रमते रमणीर्बह्वीः कामरूपो भवेन्नरः ।
युवा भवति शुक्राढ्यो क्षीणवीर्यस्तुयोनरः ॥
प्रमेहमेदसीरोगान् पंढत्वनाशनं परम् ॥
संवत्सरप्रयोगेण वृद्धोपि तरुणायते ॥ १८ ॥

अर्थ—रामसर, ईख और डाभकी जड़, ईखकी गांठैं, तालम-
खाने, सुगंधवाला, सतावर, गोखुरू, विदारीकन्द, कटेरी, जीवंती,
जीवक, मेदा, ऋषभक, गंगेरन, मुसली, ऋद्धि, रायसन, कौंछ,

पुनर्नवा, यह प्रत्येक तीन तीन पल, उड़दोंका चूर्ण एक आढ़क प्रमाण, इन सबको एकत्र मिलाकर एक द्रोण जलमें पकावै, जब आठवाँ भाग जलशेष रहै तब उतार लेवै, फिर मुलेठी, दाख, खजूर, पीपल, चिरौंजीके बीज, वाराहीकन्द, असगंध, विदारीकन्द, आमले और ईखका रस प्रत्येक आठ आठ पल, घी एक आढक प्रमाण और उत्तम दूध एक द्रोण मिलाकर पकावै, जब पाक समाप्त होजाय तब उतारलेवै, पश्चात् उसमें सफेद मिश्री और गायका दूध प्रत्येक एक एक प्रस्थ, पीपल चार पल, काली मिरच एक पल, दालचीनी, इलायची और नागकेशर प्रत्येक दो दो तोले और सहत दो सेर मिलादेवै, फिर खूब मल एकम एक करकै चारचार तोलेकी गोलियाँ बनालेवै। अग्निका बलाबल विचारकर इसको भक्षण करै, यह अत्यन्त वृष्य है, तथा पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, इसको सेवन करनेसे अतिशय बल और कामदेव बढता है, तथा बहुतसी स्त्रियोंसे विषय करनेकी शक्ति उत्पन्न होती है, शरीर साक्षात् कामदेवके समान होजाता है, क्षीणवीर्य मनुष्य अधिक शुक्रवान् और जवान होजाते है । इसको एकवर्ष पर्यन्त सेवन करनेसे वृद्ध मनुष्य भी तरुण होजाता है ॥ १८ ॥

अथ तिलशष्कुली ।

तिलाश्वगंधाकपिकच्छुमूलैर्विदारिकाषष्टिकपिष्टयोगः ॥
आजेन पिष्टःपयसा घृतेन पक्का भवेच्छष्कुलिकाऽतिवृष्या १९॥

अर्थ-तिल, असगंध, कौंचके बीज, विदारीकंद, और साठी चावल इन सबको एकत्र बकरीके दूधमें पीसकर घीमें पूरी बनावै। वह पूरी-अत्यंत वृष्य होती है अर्थात् उन पूरियोंको सेवन करनेसे अत्यंत वीर्य्यकी वृद्धि होती है, कामाग्नि संदीपन होती है, बल और पुष्टि उत्पन्न होती है ॥ १९ ॥

अथ केलिशष्कुली।

तंदुलैः कोकिलाक्षस्य सतिलैः क्षौद्रसंयुतैः।
घृतेन शष्कुली कार्या सद्यः कामविवर्धना ॥ २० ॥

अर्थ-तालमखानेके चावल और तिल इनको सहत में पीसकर घीके द्वारा शष्कुली बनाकर सेवन करनेसे अत्यन्त कामकी वृद्धि होती है ॥ २० ॥

अथ कामिनीदर्पहंता मोदकः।

घृते शतावरीक्षीरे दशगुणे विपाचयेत्।
पिप्पली चाश्वगंधा च तालमूली च गोक्षुरम् ॥
एतान् द्विपलिकान् भागांश्चूर्णं देयं पृथक् पृथक् ॥
घृतं चतुःपलं गव्यं शर्करा दशभिः पलम्।
संमर्द्य मोदकं कृत्वा पलमानं तु निश्चितम् ॥
भक्षितं रतिकाले तु पयः पीत्वा तदोपरि।
कामश्च वर्धते पुंसां बलपुष्टिप्रदायकम् ॥
जयेत कामिनीदर्पं वीर्यस्तम्भं करोति सः ॥ २१ ॥

अर्थ-सतावरको दशगुने दूध और घीमें पकावै, पकते समय पीपल, असगंध, मुसली, गोखुरू, इन प्रत्येकका चूर्ण दो दो पल,

गायका घी चार पल, और मिश्री १० पल मिलादेवै, जब शीतल होजाय तब खूब मलकर चार चार तोलेके लड्डू बनालेवै, रति के समय एक मोदक खाय और ऊपरसे दूध पीवै। इससे अत्यन्त कामकी वृद्धि होतीहै, तथा बल और पुष्टि उत्पन्न होती है, स्त्रियोंका गर्व भंग होताहै और वीर्यस्तम्भन होताहै ॥ २१ ॥

अथ रतिविनोदमोदकः।

शितोपलाशतं दद्यात्तदर्धेन च सर्पिषः।
क्षौद्रपादेन संयुक्तं पयो गव्यं च सार्धकम् ॥
गोधूमशुभ्रचूर्णं च सर्वमेकत्र मेलयेत् ॥
पक्वं तु मृदु वह्नौ च पलमानं च भक्षितम् ॥
रात्रौ च वर्धते कामं स्त्रीणां चाति सुखं भवेत् ॥ २२॥

अर्थ–सफेद चीनी १०० पल, घी ५० पल, सहत २५ पल. गायका दूध ५० पल, और उत्तम सफेद गेहूंका चूर्ण १०० पल लेवै, सबको एकत्र मिलाकर मंद मंद अग्निसे पकावै, जब पाक सामप्त होजाय तब चार चार तोलेके मोदक बनालेवै, प्रतिदिन रात्रिके समय एक मोदक खाय, इससे अत्यन्त कामकी वृद्धि होती है, और स्त्रियोंको अत्यन्त सुख उत्पन्न होताहै ॥ २२ ॥

अथ जातीफलादि वटी।

जातीफलानि करहाटक वंगशुण्ठी–
कंकोलकुंकुमकणा हरिचंदनानि।
एतैः समानमहिफेनकमेव तुल्यं
चूर्णं विधाय मधुना च वटीर्विदध्यात् ॥

माषद्वयोन्मितनरैर्निशिभक्षणीयाः
कुर्वन्ति कामिषु जरां न च बिंदुपातम् ॥
जातीफलादिवटिकाश्च प्रमेहमुख्यान् ।
हत्वातिसारग्रहणीप्रदरान् स्त्रियाः स्यात् ॥ २३ ॥

अर्थ—जायफल, अकरकरा, वंग, सोंठ, शीतलचीनी, केसर, पीपल, हरिचंदन, यह सब समान भाग, और सबकी बराबर अफीम लेवै, इनको एकत्र सहतमें खरलकरकै दो दो मासेकी गोलियां बनावै । प्रतिदिन रात्रिके समय एक गोली खाय। इससे वीर्यस्तम्भन होताहै, तथा बिन्दुपातदोष और जरा दूर होतीहै । यह जातीफलादि वटिका प्रमेह, अतिसार, संग्रहणी, और प्रदरादि रोगोंको दूरकरैहै ॥ २३ ॥

अथ सुरतवर्धनमोदकः ।

मुशली कंदर्पदर्स्य गुडूची सत्वसंयुतम् ।
वानरी गोक्षुराभ्यां च शाल्मलीशर्करामलैः ॥
एतैश्चतुष्पलं योज्यं चूर्णं चैव पृथक् पृथक् ।
मोदकं च पलार्धं च भक्षितं कामवर्द्धनम् ॥
नपुंसकगदं हन्ति प्रमेहमखिलं हरेत् ।
घृतदुग्धं च कुंडवं पाकं कृत्वा विचक्षणः ॥ २४ ॥

अर्थ—मुसली, गिलोय का सत, कौंछके बीज, गोखरू, सेमलकी जड, मिश्री और आमले, यह प्रत्येक चार चार पल लेकर बारीक पीसलेवै, फिर इसको एक कुडव (१६ तोले) घी

और दूधमें डालकर मंद मंद अग्निसे पकावै, जब शीतल होजाय तब दो दो तोलेके लड्डू बनालेवै। यह अत्यन्त कामको बढावै, नपुंसकतानाशक, और प्रमेहादि रोगोंको दूर करैहै ॥ २४ ॥

अथ कामकौशल्यमोदकः।

पलयुगलं वाराहिकंदजं त्रिफलसहितं किंचित्।
आज्ये तद्भृष्टं क्षुरकः गोक्षुरपुष्पं वरीत्वक् ॥
कृष्णजाती च पुष्पं फलमपि सहितं केसराणां पलं च।
सिता सर्वैःसमाना पयसि दशगुणे साधु पक्त्वा महिष्याः॥
कामोद्बोधाय कार्या पलमितवटिका कामकौशल्य कारी
सेव्यो रात्रीषु नित्यं द्रवणमथ करोत्याशु प्रौढांगनानाम् २५

अर्थ-दो पल वाराहीकन्द और त्रिफलेको किंचित भूनलेवै तथा तालमखाने, गोखुरू, लोंग, सतावर,दालचीनी,पीपल, जावित्री जायफल, और केसर प्रत्येक चार चार तोले, और सबकी बराबर मिश्री लेकर भैंसके दशगुणे दूधसें पकावै, जब पाक तैयार होजाय तब चार चार तोलेके वटक बनालेवै, प्रतिदिन एक वटक रात्रिमें खाय। यह अत्यन्त कामको दीपन करने वाले और प्रौढास्त्रियोंको द्रावित करनेवाले हैं ॥ २५ ॥

अथ शतावर्यावलेहः।

वीराक्षीर विदारिका च कुडवं श्वेताढका धीढकं
प्रस्थं शाल्मलिमूलवासरसतो नीत्वा तथाग्नौ पचेत्।
चातुर्जातपलान्वितो मधुयुतः कार्यापलं शुक्रलो
लेहायं पलिकां कितोबलकरः ख्यातो वलीनाशनः २६॥

अर्थ—सतावर, विदारीकंद, और क्षीरविदारीकन्द, प्रत्येक एक एक कुडव, चीनी १॥ आढ़क, सेमल और अडूसेका रस प्रत्येक एक एक प्रस्थ, इनको एकत्र करके मंद मंद अग्निसे पकावै चातुर्जात (दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर) का चूर्ण चार तोले और सहत आठ पल लेवै, सबको मिलाकर मंद मंद अग्निसे पकावै । यह शतावर्य्यवलेह—शुक्रजनक, बलकारक और वलिनाशक है ॥ २६ ॥

अथ कामसुंदरी गुटी ।

पलाशी देवपुष्पं च त्रैजातं नलदं बला ।
ग्रंथिपर्णी नागपुष्पं शैलेयं कुंकुमं घनम् ॥
पाठामुशीरं पद्मं च वानरी च त्रिकंटकम् ।
अश्वगंधामृतासत्त्वं कंदक्षीरविदारिका ॥
मुसलीश्वेतमूली च मर्कटीवीजवंशजा ।
खरगंधा कटुत्रीणि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ॥
यावंत्येतानि चूर्णानि तावन्मात्रं तदौषधम् ।
क्षीरं चतुर्गुणं दद्यात्क्षीरशेषं च कारयेत् ॥
पुनः शुष्कं तदा कृत्वा पुनश्चूर्णं तु कारयेत् ।
समं च शर्करा योज्या गुटिका कामसुंदरी ॥
एषा कामप्रबोधार्थं श्रीकृष्णेन च भाषिता ।
तेन रम्यं वलं स्त्रीणां सहस्राहं वले निशि ॥
शतैकं भुज्यते बालप्रौढानां द्रावणं परम् ।

कामाग्निर्वर्धते सम्यग् रोगाणां हननं परम् ॥
नष्टशुक्रगतं वीर्यं सर्वरोगांगनापहम् ।
कृष्णकेशत्वमायाति वयः स्थापनकं दृढम् ॥
पलार्धं भक्षितं नित्यं मधुराहारसेवितम् ॥ २७ ॥

अर्थ—पनरी, लौंग, दालचीनी, इलायची, तेजपात, वालछड़ खिरैटी, गठिवन, नागकेशर, भूरिछरीला, केसर, नागरमोथा. पाढ, खस, पद्माख, कौंछके वीज, गोखुरू, असगंध, गिलोयका सत, क्षीरविदारी, मुसली, सालम मिश्री, कौंछके वीज, वंशलोचन, गंगरेन और त्रिकुटा, इन सबको एकत्र पीसकर बारीक चूर्ण करले, यह सब औषधि समान भाग लेनी चाहियें, इस चूर्णको चौगुने दूधमें पकावै, जब पकते पकते दूध गाढ़ा होजाय तब उतारकर सुखालेवै, फिर खूब दोनों हाथोंमेंसे मर्दन करै, फिर बराबर की चीनी मिलाकर गोलियां बनालेवै, यह कामसुंदरी गुटिका—कामदेवको चैतन्य करनेके लिये श्रीकृष्ण देवने निर्माण की है। इसको रात्रिमें सेवन करै, इससे अत्यन्त बलकी वृद्धि होती है, तथा अनेक स्त्रियोंको भोगने की शक्ति उत्पन्न होतीहै। इसके प्रभावसे १००सौ बालास्त्रियों को भोगताहै, । तथा प्रौढ़ा स्त्री द्रवीभूत होतीहै कामाग्नि संदीपन होतीहै, और सम्पूर्ण रोग शोकादि दूर दोते हैं, शुक्रगतरोग और वीर्यकी क्षीणता दूर होतीहै एवं बाल काले होते हैं, और अवस्था स्थापन होतीहै इसको प्रति दिन दोतोले प्रमाण खाय,और मधुर आहार भक्षण करै ॥ २७॥

अथ कामोद्दीपनगुटिका ।

दरदं कुंकुमं शुण्ठी जातीफललवंगकम् ।
कोकिलाक्षस्य बीजानि कपिकच्छू स्तथैव च ॥
मस्तगी च तुगा चैव यवानी पारसी तथा ।
तुंबूरू करहाटं च जातीपत्रविभागकम् ॥
सर्वमेकत्रकं चूर्ण महिफेनैकभागकम् ।
मातंगीद्रवसंमर्द्य गुटिकाशाणमानकम् ॥
संध्याकालेषु येः पुंभी रतिमध्ये च भक्षिता ।
रमते रमणीर्बह्वीर्वीर्यवाजीकरं परम् ॥
प्रमेहमुपदंशं च नाशनं ग्रहणीगदम् ॥ २८ ॥

अर्थ–शुद्धसिंग्रफ, केसर, सोंठ,जायफल, लोंग, तालमखाना कौंछके बीज, मस्तगी, वंशलोचन, खुरासानी अजवायन, तुम्बुरु, करहार (अकरकरा) और जावित्री, यह सब समानभाग और एक भाग अफीम लेवै, इन सबको एकत्र पीसकर भांगके रसमें खरल करकै चार चार मासेकी गोलियां बनालेवै, संध्या समय मैथुन कालमें एक गोली खाय तौ अनेकवार स्त्रीप्रसंग करनेकी सामर्थ्य उत्पन्न होवै, तथा यह उत्तम वाजीकरणहै, एवं प्रमेह, उपदंश, और सर्व प्रकारकी संग्रहणीको दूर करैहै ॥ २८ ॥

अथ रतिप्रिया वटी ।

उर्वारुबीजकरहाटककेसराणि पुष्पं जटा शाल्मलिमश्वगंधा ।
सर्वौषधीनां च समानचूर्णं सितासमानं मधु मर्दितं च ॥
कृष्णापि कृच्छ्रस्य टटंगणं च ग्राह्यं च मानं हि समानमेव ।
कृत्वा गुटीनामपि भागकानां रतिप्रियानामवटी विधेया ॥

विंदुप्रसारा सितवर्धवीर्य्यमेहापहा कृच्छ्रहरा नराणाम्॥२९॥

अर्थ–ककड़ीके बीज, मैनफल, नागकेशर, लौंग, बालछड़, सेमल और असंगध, यह सब औषधि समान भाग लेकर बारीक पीस लेवै, और सब चूर्णके समान मिश्री लेवै, इसको एकत्र खरल करै, फिर इसम पीपल, और उटंगणका चूर्ण समानभाग मिलाकर गोली बनालेवै, इन गोलियों को रतिप्रिया कहतेहैं। यह गोली–वीर्यको स्तम्भन करै तथा अत्यन्त बढावै है, एवं प्रमेह और मूत्रकच्छ्ररोगोंको दूर करैहै ॥ २९ ॥

अथ काश्मीरवटी।

सकेसरं सैलायची सपारदं यवानिका।
सकुष्ठ मूलभागकं सौजीर कृष्णवंशजा॥
सर्वौषधं मौसलचूर्णमार्द्रकं रसा।
सचार्द्धतिंदुका वटी प्रसारविंदुनाशिनी॥
सधातुवीर्यकारका मनोविलासकामदा।
समासमेक भक्षिता सवातरोग हंतिसा॥
सकृच्छ्र चाश्मरी हरी समोदकारिणीतमा।
सकासश्वासनाशिनी सकामशीघ्रकारिणी॥ ३०॥

अर्थ–केसर, इलायची, पारा, अजवायन, कूठ, कालाजीरा, वंशलोचन, यह सब औषधि समान भाग और सबकी बराबर मुसलीका चूर्णलेवै, सबको एकत्र पीसकर एक एक तोलकी गोलियां बनालेवै, यह गोली वीर्यको स्तम्भन करै है, धातुवर्द्धक मनोल्लासक, कामको दीपन करनेवाली, इसको एक महिने भक्षण

करनेसे सर्व प्रकारके वातरोग दूर होते हैं, तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी खाँसी और श्वासको नष्ट करै है, आनन्दजनक, और कामदेवको शीघ्रही चैतन्य करनेवाली है ॥ ३० ॥

अथ कपिकच्छू गुटी ।

कपिकच्छुः कोकिलाक्षः गोक्षुरः सममेव च ।
सिता चैव समायोज्या पलार्द्धं गुटिका कृता ॥
प्रभाते भक्षिता नृणां धातुपुष्टिबलप्रदा ।
विंदुप्रसृतिनाशं च प्रमेहकृच्छ्रनाशनम् ॥ ३१ ॥

अर्थ–कौंछकेबीज, तालमखाना, और गोखुरू, यह सब समानभाग और सबके बराबर मिश्री लेवै, सबको एकत्र पीसकर दोदो तोलेकी गोली बनालेवै, प्रतिदिन प्रातःकाल एक गोली खाय, यह वटी–धातुपोषक, बलकारक, वीर्यस्तम्भक, प्रमेह और मूत्रकृच्छ्रको नष्ट करैहै ॥ ३१ ॥

अथ मरिचादि वटी ।

मरिचं पलमेकंतु पुराणं खंड त्रैपलम् ।
त्रिपलं घृतसंयुक्तं त्रिपलं कोकिलाक्षकः ॥
हुलहुलबीजत्रिपलं सर्वमेकत्र चूर्णितम् ।
गुटिकां कर्षमात्रं च प्रातःकाले च भक्षितम् ॥
विंदुसंस्रवणं हन्ति प्रमेहो नश्यति ध्रुवम् ।
कामोद्दीपनकं पुंसां वाजीवीर्यकरं परम् ॥ ३२ ॥

अर्थ–कालीमिरच४तोले, पुरानी खांड३पल,घी,३पल, तालमखाना ३ पल. हुलहुलके बीज ३ पल इन सबको एकत्र पीस कर एक एक तोल की गोली बना लेवै, प्रतिदिन एक गोली खाय

यह गोली–वीर्यको स्तम्भन करैहै. तथा प्रमेहको नष्ट करैहै, कामदेवको दीपन करै है और अत्यन्त वाजीकरण है ॥ ३२ ॥

अथ वुद्बुदीचूर्णम्।

कर्षमात्रं तु यः खादेद् बिंदुविस्तीर्णनाशनम्।
बुद्बुदबीजं समादाय सूक्ष्मं चूर्णंतु कारयेत् ॥
संतप्तं चापि गोदुग्धं पीत्वा नित्यं प्रभातके।
पीतवर्णं स्रवेन्मेहं स च नश्यति सत्वरम् ॥ ३३ ॥

अर्थ–जो मनुष्य नित्य प्रातःकाल एक तोलेभर कुमुद (बबूले) के बीजोंको खावै; और ऊपरसे गरम गरम दूध पीवै तौ उसका वीर्य्य अत्यन्त गाढा होजाय तथा शीघ्रही पीले रंगका प्रमेह दूर होजावै ॥ ३३ ॥

अथ मेदावटी।

मेदात्वक्पत्रकं चैव अब्धिशोषश्च वानरी।
मुसली कोकिलाक्षश्च एतत्सर्वं समानकम् ॥
द्विगुणा च सिता योज्या घृतपादसुमर्दितम्।
पलार्द्धं गुटिकां भक्षेन्मधुराहारसेविताः ॥
बिन्दुनिष्यदकं हन्यात्प्रमेहं सर्वजं तथा।
वीर्यवृद्धिं करोत्याशु बलपुष्टिप्रवर्धनः ॥ ३४ ॥

अर्थ–मेदा, दालचीनी, तेजपात, समुद्रशोष, कौंछके बीज, मुसली, तालमखाना, यह सब समान भाग लेवै, और सबसे दूनी मिश्री लेवै, सबको एकत्र पीसकर चौथाई भाग घीमें मिलाकर दो दो तोले की गोलियां बनालेवै. प्रतिदिन एक गोली खाय. और इसपै मधुर आहार भक्षण करै, यह मेदावटी–वीर्यको

स्तम्भन करैहै. तथा सर्वप्रकारके प्रमेहोंको दूर करैहै वीर्यको वढावै तथा बल और पुष्टिको प्रगट करैहै ॥ ३४ ॥

अथ लहसोरकवटी ।

लहसोरकवीजानि मेदा गोक्षुरमेव च ।
कोकिलाक्षस्य वीजानि बीजं सामुद्रिकं फलम् ॥
समानं सर्वमेकत्र द्विगुणं श्वेतशर्करा ।
कर्षद्वयगुटीं कृत्वा भक्षिता दुग्धसंयुता ॥
विंदुसंस्त्रवमेहं च कृच्छ्रं हन्ति च सत्वरम् ॥ ३५ ॥

अर्थ—लिसोड़ेके वीज, मैदा, गोखरू; तालमखानेके बीज;समुद्रफल; यह सब समान भाग और सबसे दुगुनी सफेद चीनी लेवै; सबको एकत्र पीसकर दो दो तोलेकी गोलियां बनालेवै, प्रतिदिन एक गोली खाय और ऊपरसे दूध पीवै, यहवटी—वीर्यकी चंचलता प्रमेह और मूत्रकृच्छ्रको दूर करै है ॥ ३५ ॥

अथ रेवचीन्यादि वटी ।

रेवचीनी च शृंगाटं मेदा षाष्टिकतंडुलान्
कोकिलाक्षस्य वीजानि द्विपलं च पृथक् पृथक ॥
द्विगुणं च सिता योज्या गुडमध्ये गुटीकृता ।
कर्षैकं गुटिकां खादेद्विंदुप्रस्त्रवनाशनम् ॥
प्रमेहं मूत्रकृच्छ्रं च षंढत्वनाशनं परम् ॥ ३६ ॥

अर्थ—रेवतचीनी, सिंघाड़े, मेदा, सांठी चावल, और तालमखानेके बीज प्रत्येक दो दो पल,इन सबसे दूनी मिश्री लेवै, सबको एकत्र पीसकर गुड़में मिलाकर एक एक तोलेकी गोली बनालेवै, प्रतिदिन एक गोली खाय। यह गोली-प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र और नपुंसकताको नष्ट करैहै ॥ ३६ ॥

अथ आभादिवटी।

आभापत्रं पलैकं तु त्रिपलं कोकिलाक्षजम् ।
बिल्वं च त्रिपलं योज्यं सर्वमेकत्र चूर्णितम् ॥
मधुना मोदकं कृत्वा कर्षमानं च भक्षितम् ।
प्रभाते योऽत्ति वै नित्यं बिंदुनिष्यंदनाशनम् ॥
प्रमेहकृच्छ्रहननं वाजीकरणमेवच ॥ ३७ ॥

अर्थ—आभापत्र (किसीके मतसे बबूरके पत्ते) एक पल, तालमखाने तीन पल, बेलगिरी तीन पल, सबको एकत्र पीसकर सहतमें मिलाकर एक एक, मोदक बनालेवै, प्रतिदिन प्रातःकाल एक मोदक खाय । यह मोदक-वीर्यकी चंचलता,प्रमेह और मूत्र-कृच्छ्रको दूरकरैहै । तथा उत्तम वाजीकरणहै ॥ ३७ ॥

अथ गोक्षुरादिवटी ।

गोक्षुरं कोकिलाक्षं च चूर्णं च सममेव तत् ।
घृतेन गुटिका कार्या खंडं द्विगुणसंयुतम् ॥
बिन्दुप्रस्रवणं हन्यात्प्रमेहं शुष्कगात्रकम् ।
गोक्षुरादिवटी नाम दुग्धमध्ये पिबेद्यदि ॥ ३८ ॥

अर्थ—गोखुरू, और तालमखानेका चूर्ण समान भाग लेकर बारीक पीसलेवै, और इससे दूनी खांड मिलावै, सबको एकत्र घीमें मिलाकर गोली बनालेवै, यह गोली वीर्यकी चंचलता, प्रमेह, शरीरकी शुष्कता आदि दोषोंको दूर करै है । इसके ऊपर दूध पीना चाहिये ॥ ३८ ॥

अथ वातारिपुष्पवटी ।

वातारिपुष्पं कर्षैकं आर्द्रकं कर्षमेव च ।

संमर्द्य गुटिका कार्या भक्षयेत्प्रातरुत्थितः ॥
बिन्दुविस्रंसनं हन्याद्वातमंदाग्निनाशनम् ॥ ३९ ॥

अर्थ—श्योनाकके फूल एक तोला, अदरख एक तोला, इन दोनोंको एकत्र खरल करके गोली बनालेवै, प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर एक गोली खाय। यह गोली—वीर्यकी चंचलता, वात और मंदाग्निको नष्ट करैहै ॥ ३९ ॥

अथ मुसली वटी।

मुसलीकन्दचूर्णं च कुमारीरसमर्दितम्।
गुटिका शाणमाना च बिन्दुविस्रुतिनाशनी ॥ ४० ॥

अर्थ—मुसलीके चूर्णको घीकारके रसमें खरल करके नित्य चार मासे खानेसे वीर्यकी चंचलता दूर होतीहै ॥ ४० ॥

अथ वंदावटी।

क्षुद्रावदरिवंदाकं जातीफलसमन्वितम्।
गुटिका चाक्षमानाच तांबूलरसमर्दिता
भक्ष्यते प्रातरुत्थाय शीतलांबु पिबेद्यदि।
प्रमेहं बिन्दुविस्रावं वीर्यस्खलतिसुतकम् ॥
नाशयेत्तत्क्षणादेव फिरंगाख्यमुपद्रवम्।
वंदावटीति नाम्ना सा त्यजेत्क्षाराम्लवातुलम् ॥ ४१ ॥

अर्थ—कटेरी, बेरीका वंदा, जायफल, इनको एकत्र करके पानोंके रसमें खरल करके एक एक तोलेकी गोली बनालेवै, प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर एक गोली खाय और ऊपरसे शीतल जल पीवै यह वटी-प्रमेह, वीर्यकी चंचलता, तरलता, स्वप्नदोष फिरंग रोग, इन सब रोगोंको दूर करैहै। इसमैं निमक खटाई और वादिल वस्तु सकल पदार्थ त्यागदेवै ॥ ४१ ॥

अथ लवणपात्रवटी।

पुराणं लवणपात्रं सम्यक् सूक्ष्मं विचूर्णितम्।
चणकाभृष्टसार्धं च मंदाग्निकासनाशनम् ॥ ४२ ॥

अर्थ–पुराने लवणके पात्र का चूर्ण १ भाग और भुनेहुए चनोंका चूर्ण १ ।। भाग, दोनोंका एकत्र मिलाकर सेवन करनेमे मंदाग्नि और खाँसी दूर होतीहै ॥ ४२ ॥

अथ यवानीतुषमोदकः।

यवानीप्रस्थमेकं तु कुट्टितं कर्षमात्रकम्।
बीजं खाखसजं योज्यं समानं घृतमर्दितम् ॥
पलार्धं मोदकं कृत्वा प्रातर्नित्यं च भक्षयेत्।
बिंदुविस्रवणं हंति नात्र कार्या विचारणा ॥
मूत्ररोधं न कुरुते यवानीतुषमोदकः ॥ ४३ ॥

अर्थ–अजवायन कुटी हुई एक प्रस्थ, सितावरका शाक एक कर्ष, और पोस्तकेदाने एक कर्ष, इन सबको एकत्र पीसकर घीमे मलकर दो दो तोलेके लड्डु बनालेवै, प्रतिदिन प्रातःकाल एक मोदक खाय। यह यवानीतुषमोदक वीर्यकी चंचलता और मूत्ररोधको दूर करै है ॥ ४३ ॥

अथ जातीफलादिवटी।

जातीफलं च माकल्लं पारसी च यवानिका।
उटंगणरसे पिष्टं समं च गुडमिश्रितम् ॥
कोलमानं वटीं खादेद्रतिकाले पिबेत्पयः ॥ ४४ ॥

अर्थ–जायफल, मखाने, खुरासानी अजवायन, यह सब समान भाग और सबकी बराबर गुड लेवै, सबको एकत्र उटंग-

णके रससें खरल करकै एक एक तोलेकी गोली बनालेवै, रतिके समय एक गोली खाय और ऊपरसे दूध पीवै ॥ ४४ ॥

अथ मृगांडजा वटी।

मृगनाभिश्च शाणार्धा लवंगं शाणमानकम्।
शाणमानं च पानीयं तांबूलं चर्वितं ततः॥
वीर्यस्तम्भकरं पुंसां द्विमुहूर्त्तं न संशयः।
शाणद्वयं च कर्पूरं अहिफेनं च मासिकम्॥
जातीफलं च कर्षैकं मर्दितं चार्द्रके रसैः।
गुंजाद्वयं च यः खादेद्वीर्यवृद्धिं करोति च॥
कासं श्वासं हरेच्छीघ्रं बालातीसारनाशम्॥ ४५॥

अर्थ–कस्तूरी दो मासे, लौंग ४ मासे, इन दोनोंको चारमासे पानीमें खरल करकै रतिके समय सेवन करै और इसके ऊपर पानचाबै। इससे दो मुहूर्त्त तक वीर्यस्तम्भन होताहै।

कपूर आठ मासे, अफीम १ मासे, जायफल एक तोला, इनको एकत्र पीसकर अदरखके रसमें खरलकरै, इसमेंसे प्रतिदिन दो रत्ती प्रमाण सेवन करै; यह अत्यन्त वीर्यको बढावै. तथा खाँसी, श्वास, और बालातीसारको दूर करै है॥ ४५॥

अथ रतिप्रकाशलप्सिका।

कपिकच्छुगजभार्गवीज मुटंगण स्य
हुदहुदं ससवीजैः सर्वमेकत्र चूर्णम्।
पचति पयसि गव्ये ह्याढके द्वे प्रमाणे
सघृतपलचतुष्के शर्कराप्रस्थमिश्रे॥
सकलविहितपक्कैर्बिल्वमानं च खादेत्

सुखदमदनवृद्धिं कामिनी क्लीवरेतैः ।
रतिसमय निहन्ति मानिनीगर्वमुच्चै-
र्मदन कृत विलासैर्लिप्सिकासुप्रकारैः ॥ ४६ ॥

अर्थ—कौंछके बीज, उटंगणके बीज, हुलहुलके बीज, इन सबको एकत्र पीसकर दो आढक गायके दूध में पकावै, जब दूध गाढ़ा होजाय तब चारपल घी और सफेद चीनी एक प्रस्थ मिलाकर इसमेंसे एक बेलकी बराबर खाय, यह अत्यन्त आनन्दजनक, कामदेवको दीपन करनेवाली, स्त्रियोंको सुखकारक, नपुंसकतानाशक, रतिके समय बड़ी बड़ी गर्ववाली स्त्रियों के मानको खंडनकरनेवाली है, और मैथुनके समय अत्यन्त आनन्दको उत्पन्न करैहै ॥ ४६ ॥

अथ रतिप्रिया पिण्डी ।

कुक्कुरसूक्ष्मकंदैश्च प्रस्थमात्रै भागैः ॥
नतः समसुत कुर्याच्छुद्धगोधूमचूर्णैः
सुरभिघृत सुप्रस्थैः खंड प्रस्थैर्विपक्कैः ।
द्विपलमित च खादेत्क्लीव काम प्रकाशैः ॥
वृष्यति च बलवीर्यं सुंदरीदर्पहंत्री ।
हरति सकलमेहं नाम पिण्डीरताख्या ॥ ४७ ॥

अर्थ—सेमलकी जड़का चूर्ण १ प्रस्थ, गेहूंका चूर्ण १ प्रस्थ, उत्तम गायका घी १ प्रस्थ, खांड एक प्रस्थ, इन सबको एकत्र मिलाकर पकावै, प्रतिदिन इसमेंसे दोपल प्रमाण खाय, इससे नपुंसक मनुष्योंके कामदेव प्रदीपन होताहै, बल और वीर्य बढता है, स्त्रियोंका अभिमान खंडन होताहै, तथा सर्व प्रकारके प्रमेह दूर होतेहैं ॥ ४७ ॥

अथ रसाला ।

अर्द्धाढकं सुचिरपर्युषितस्य दध्नः
खण्डस्य षोडश पलानि शशिप्रभस्य ।
सर्पिःपलं मधुपलं मरिचार्द्धकर्षं
शुण्ठ्यास्तथार्द्धपलमर्द्धपलञ्चतुर्णाम् ॥
शुक्ले पटे ललनया मृदुपाणिघृष्टा
कर्पूरगन्धसुरभिर्नवभांडसंस्था ।
एषा वृकोदरकृता सुरसा रसाला
यास्वादिता भगवता मधुसूदनेन ॥ ४८ ॥

अर्थ–उत्तम जमाहुआ गाढा दही ४ सेर, सफेद बूरा १६ पल. घी ४ तोले, सहत चार तोले, काली मिरच ६ मासे, सोंठ २ तोले, दालचीनी, इलायची, तेजपात, और नागकेशर, प्रत्येक छै छै मासे, इन सबको एकत्र पीसकर उपरोक्त दहीमें मिलाकर उत्तम श्वेत वस्त्रमें स्त्री अपने हाथोंसे मलकर छाने, पश्चात् कपूर से सुवासित किये हुए मट्टीके नवीन बासन में भरके रख देवै. यह सुरस रसाला भीमसेनने बनाया है और भगवान् मधुसूदनने इसका स्वाद लिया है ॥ ४८ ॥

अथ रतिवल्लभा पयस्या ।

महाकोलमज्जापलं संनिघृष्य जले तंदुलांस्तत्प्रमाणान्निरूप्य ।
पचेत्पायसीं सर्पिषा संनिपृच्य द्विकर्षप्रमाणां सुशीतांच खादेत् ॥
प्रभावादमुष्या नरो वीर्यवान्स्यान्महानन्दकर्त्री जरारोगहन्त्री ।
पयस्येयमत्यन्तवीर्याश्मरीघ्नी प्रमेह मघ्नी प्रसिद्ध धरित्र्याम् ४९

अर्थ–बड़े बेरकी मींग या गिरी ४ तोले लेकर जलमें पीसकर

चावल डालकर खीर पकावे;पकते समय इसमें चार तोले घी मिलादेवै जब शीतल होजाय तब दो तोले प्रमाण इसमेंसे भक्षणकरै यह नपुंसक मनुष्योंके शीघ्रही वीर्यको बढानेवाली है, महाआनंदजनक, जरारोगनाशक, मूत्रकृच्छ्रनाशक और प्रमेहको दूर करैहै ॥ ४९ ॥

अथ लवंगादिवटी ।

लवंगं खाखसं बीजं सूक्ष्मैला नागकेशरम् ।
जातीफलं विडंगानि तुगावारि च रेणुका ॥
अश्वगंधा धनायष्टी मुशली वंशजा तथा ।
माकल्लशालिनीबीजकबाब्चीनीउटंगणैः ॥
एतानि सप्तभागानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ।
मधुना सह संयोज्या गुटिका कर्षमात्रिका ॥
भक्षयेत्प्रातरुत्थाय मधुराहारसेवकः ।
नपुंसकगदांश्चैव प्रमेहं कृच्छ्रमेदसी ॥
उपदंशं च मेहं च नाशयेत्तत्क्षणादपि ॥ ५० ॥

अर्थ–लोंग; खसखसके बीज, छोटी इलायची, नागकेशर, जायफल, वायविडंग, वंशलोचन, सुगंधवाला, रेणुका, असगंध, धनियां, मुलैठी, वंशलोचन, तालमखाने, शालिधान, कबाबचीनी और उटंगण, यह सब समान भाग लेकर बारीक पीसकर सहतमें मिलाकर एक एक तोलेकी गोलियां बनालेवै । प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर एक गोली खाय, और इसपै मधुर आहार भोजनकरै। यह नपुंसकता, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मेदरोग, उपदंश और प्रमेहको तत्काल नष्ट करैहै ॥ ५० ॥

अथ मुद्गादिवटी ।

मुद्गान्नं च पलार्धं च पलार्धं जातिकाफलम् ।
गोघृतं द्विपलं चैव सर्वमेकत्र कारयेत् ॥
सैंधवं कर्षसंयुक्तं जलस्य पलपंचकम् ।
मृद्वग्निना पचेद्धीमान्खल्वे कृत्वा दिनावधि ॥
शाणमानां गुटीं खादेत्क्लीबत्वं नाशयेद्ध्रुवम् ।
मंदाग्निनाशनं श्रेष्ठं वीर्यवृद्धिं करोति च ॥ ९१ ॥

अर्थ—मूंग २ तोले और जायफल दो तोले, गायका घी ८ तोले सैंधानोन १ तोला, और जल ५ पल सबको मिलाकर मंद मंद अग्निसे पकावै, फिर एकदिन खरलकरै इसमेंसे प्रतिदिन ४ मासे खाय, तौ नपुंसकता अवश्य नष्टहो मंदाग्नि दूरहो और वीर्यको बढावै है ॥ ५१ ॥

अथ नागरादिवटी ।

नागरं नारिकेलं च पलं च पलद्वादशम् ।
पुराणं च गुडं योज्य पलमानं तु भक्षितम् ॥
धातुक्षीणे पुष्टिकरं बलवीर्यविवर्धनम् ।
आमातीसारशमनं ग्राहि दीपनपाचनम् ॥ ९२ ॥

अर्थ—सोंठ, नारियल, प्रत्येक एक एक पल, तथा पुराना गुड़ १२ पल लेवै, सबको एकत्र मर्दन करकै इसमेंसे प्रतिदिन चार तोले प्रमाण खाय,यह क्षीणधातुवाले मनुष्योंको पुष्ट करैहै, बल और वीर्य-वर्द्धक, आमातीसारनाशक,मलरोधक, दीपन और पाचन है॥५२॥

अथ शतावर्याद्यवलेह ।

शतावरीमूलमहाबलानां श्यामातिलावानरिबीजकानाम् ।

खंडाघृताभ्यां समसोदकानां भक्ष्यं निशायांच पलप्रमाणम् ॥
दुग्धं पिवेच्चोपरितन्नराणां विवर्धयेत्काममहोत्सवं च ॥ ५३ ॥

अर्थ–सतावर, कालेतिल, कौंछके बीज, इन सबको समान भाग लेकर एकत्र पीसकर घी और चीनीमें मिलाकर लड्डू बनालेवै, इसमेंसे प्रतिदिन चार तोले प्रमाण रात्रिके समय भक्षण करै, ऊपरसे दूध पीवै, यह नपुंसक मनुष्यों के अत्यन्त कामको उत्पन्न करैहै ५३

अथ उटंगणप्रयोगः ।

उटंगणस्य वीजानि मुसल्या सह पेषयेत् ।
पलार्धं भक्षितन्नित्यं सायं च पयसा सह ॥
वीर्यवृद्धिकरं पुंसां कुसादं बिन्दुनाशनम् ।
सदाशिवेन योगानां भाषितो योग उत्तमः ॥
एतत्साधनमात्रेण हंति रोगान्न संशयः ॥ ५४ ॥

अर्थ–उटंगणके बीजोंको मुसलीके साथ पीस लेवै । प्रतिदिन संध्यासमय इसमेंसे दो तोलेप्रमाण खाय और ऊपरसे दूध पीलेवै यह अत्यन्त वीर्यवर्द्धक, बिंदु कुसाद (हस्तमैथुन करनेसे उत्पन्न हुए) रोगनाशक है । यह सर्व योगोंमें उत्तम योग सदाशिवने कहाहै, इसके साधनमात्रसे सर्व रोगोंके समूह नष्ट होतेहैं ॥ ५४ ॥

इति श्रीमदायुर्वेदोद्धारकमाथुरवैश्यवंशोद्भवकविकुलकुमुद-
कलानिधिमुरादाबादनिवासिशालिग्रामवैश्यकृत-
कामकौतूहलभाषानुवादः समाप्तः ।

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बंबई.

नाम	की रु आ
चरकसंहिता–भाषाटीका सहित	८–०
हारीतसंहिता भाषाटीका सहित	३–०
अष्टांगहृदय (वाग्भट) भाषाटीका समेत	८–०
भावप्रकाश भाषाटीका....	८–०
रसरत्नाकर भाषाटीका समेत समस्त रसादि मारण शोधन आदि	५–०
बृहन्निघंटुरत्नाकर भाषाटीका प्रथमभाग	३–०
बृहन्निघंटुरत्नाकर भाषाटीका द्वितीयभाग	३–०
बृहन्निघंटुरत्नाकर भाषाटीका तृतीयभाग	३–८
बृहन्निघंटुरत्नाकर भाषाटीका चतुर्थभाग	२–८
बृहन्निघंटुरत्नाकर भाषाटीका पंचमभाग	५–८
बृहन्निघंटुरत्नाकर भाषाटीका छठवाँ भाग	४–८
बृहन्निघंटुरत्नाकर–सप्तम अष्टम भाग अर्थात् "शालग्राम निघंटुभूषण" (अनेक देशदेशांतरीय संस्कृत, हिन्दी, बंगला, मराठी, गौर्जरी, द्राविडी, तैलंगी, औत्कली, इंग्लिश, लैटिन, फारसी, अरबी भाषाओंमें सर्व औषधोंके नाम और गुणोंका वर्णन औषधियोंके चित्रोंसमेत)....	८–०
बृहन्निघंटुरत्नाकर (देखने योग्य) संपूर्ण आठोंभाग	३०–०
कामरत्न योगेश्वर नित्यनाथप्रणीत भाषाटीका समेत....	१–१२
पथ्यापथ्यभाषाटीका समेत	०–१२

संपूर्ण पुस्तकोंका "बडासूचीपत्र" अलगहै) ॥ का टिकट भेजकर मँगालीजिये.

पुस्तकोंके मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास 'श्रीवेङ्कटेश्वर' स्टीम् प्रेस-बंबई.

जर्म्मन डाक्टर लुई कोहनी

साहिब के

सर्व रोगघ्न ४ स्नान

जिस में

उन चारों स्नानों की पूरी विधि बड़ी योग्यता से संक्षिप्त करके
लिखने के पश्चात् उन से प्लेग की चिकित्सा कैसे
करनी चाहिये इस का भी वर्णन
किया गया है

जिस को

पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य "कवि विनोद"

मालिक "अमृतधारा", तथा सम्पादक उर्दू, हिन्दी
देशोपकारक ने लिखा ।

कार्य्यालय "अमृतधारा" के कार्य कर्त्ताओं ने
छपवा कर प्रकाशित किया ॥

सं० १९१२

प्रथम बार १००० प्रति]   [मूल्य =)॥

पञ्जाब प्रिंटिंग वर्कस लाहौर में छपा ।

भूमिका

हमारा विचार है कि विलायत में जो भिन्न २ विधियां चिकित्सा की निकल रही है, कोई केवल पानी से चिकित्सा करता है, कोई सूर्य के रंगों से चिकित्सा करता है, कोई केवल वस्ति से जगत् भर के रोग खोता है, कोई चार स्नानों से चिकित्सा कर रहा है, कोई मानसिक शक्ति ही को चिकित्सा का मुख्य अंग ठहराते है, उन सब को अति सक्षिप्त करके जिस से उन का सारांश आजावे, अपने भाइयों के ज्ञान वृद्धि तथा विचारार्थ लिखें। यह डाक्टर अपनी पुष्टि में अपने स्वस्थ किये हुये रोगियों के वृतान्त आदि लिखने में पृष्ठों के पृष्ठ भर दिया करते हैं। इस सारी पुस्तक को पढ़कर उसका सारांश आप के सन्मुख रख दिया करेंगे। आशा है कि इन से बहुत लाभ होगा। इन चिकित्सा विधियों के विषय में हमारा विचार है, कि यह अपने २ स्थान पर बड़ी उत्तम है। परन्तु एक ही विचार में बह जाना भी उत्तम नहीं है। यथा अवसर इन से काम लेना चाहिये। और जैसा कि इन सब की सम्मति होती है औषधि से डरना नहीं चाहिये। जब २ आवश्यकता हो उस को भी वरतना चाहिये। हां बात २ पर औषधि खाना भी अच्छा नहीं है॥

आज यह आप के सामने ४ स्नानों का वर्णन है, जिन के होते डाक्टर लुई कोहनी किसी और चिकित्सा की आवश्यकता नहीं समझते है। आशा है सर्व सज्जन यथायोग्य लाभ उठावेंगे। यह वही निबन्ध है, जो कि उर्दू देशोपकारक में हम लिख चुके है और जिस को बहुत पसन्द किया गया था॥

डाक्टर कुहनी साहिब

के चार स्नान और प्लेग ॥

डाक्टर लोई कुहनी साहिब जर्मनी के एक डाक्टर हैं। उनका दावा है, कि संसार के सर्व रोग इन ४ स्नानों में से एक न एक से जिन को उन्हों ने निर्द्धारित किया है, दूर हो जाते हैं। डाक्टर लोई कुहनी की पुस्तक ५० बार से अधिक छप चुकी है, और यह उन के इस आविष्कार की सर्वप्रियता का पर्य्याप्त प्रमाण है। उन की पुस्तक का नाम "न्यू सायन्स आफ़ हीलिंग" *New Science of Healing* अर्थात् नव चिकित्सा विद्या है। जर्मनी से अंग्रेज़ी और अंग्रेज़ी से उर्दू में अनुवादित हो चुकी है। उर्दू पुस्तक का नाम "नया इल्म शफ़ा बख़्शी" है ॥

डाक्टर साहिब की प्रतिज्ञा

यह है, कि रोग संसार में एक है, और विविध रूपों में प्रगट होने के कारण से उस के अनेक नाम हैं। रोग एक ही है अतएव चिकित्सा भी निस्सन्देह एक ही है। और वह प्राकृतिक चिकित्सा ४ स्नान हैं ॥

उक्त डाक्टर साहिब के किञ्चित् शब्दों का आशय नीचे अंकित किया जाता है:—

जाता है। अन्यथा नियम विरुद्ध अपक्क अन्न अन्त्रियों में पहुंचते हैं, और इस दशा में पाचन क्रिया भली भांति नहीं होती। ऐसे आहारांश बहुधा स्वभावतः अपने आप बाहर निकल जाते हैं। और यदि कोई भाग रुधिर में सम्मिलित भी हो जाय, तो वह तुरन्त पृथक् हो जाता है॥

"यहां तक तो कोई हानि नहीं होती। परन्तु दुर्भाग्य से प्राकृतिक नियम का उलङ्घन सदैव होता रहता है। और न केवल बारम्बार वरन् दैनिक किया जाता है। जिससे शरीर अपना कर्तव्य पालन करने के अयोग्य होजाता है। यह अप्राकृतिक अंश पहिले २ आमाशय की नालियों के मार्ग के समीप एकत्र होते हैं, और प्रतिदिन इस दूषित पदार्थ की मात्रा बढ़ती जाती है। यहां तक कि वह टूटता है और पृथक् होना आरम्भ होता है। अब यदि यह दूषित पदार्थ बाहर न निकले तो नीचे ऊपर फैलता है। और क्रमशः शरीर के सब अवयवों में प्रविष्ट होने लगता है। बड़ी नाली से और अंगों की ओर जाता है। यहां तक कि शरीर की सीमा पर ही जाकर रुकता है। फिर शरीर उसे त्वचा पर लाने का यत्न करता है। किन्तु उसे कुछ काल तक कृतकार्य्यता नहीं होती। जब यह अवस्था हो जाती है, तो प्रस्वेदादि निकलना आरम्भ होता है। और यह पहिले शरीर के अन्तिम भाग पर प्रगट होता है, यथा हाथ वा पांव से पसीना निकलता है, और उस से शरीर को सुख मिलता है। यद्यपि इस विषय में लोगों के विविध विचार हैं। पसीना निकलना यद्यपि व्याधि का लक्षण है, किन्तु इसे कृत्रिम उपायों द्वारा रोकने से शारीरिक स्वास्थ्य और भी अधिक बिगड़ जाती है। एक्सायटिंग काज़ (Exciting Cause) यथा शीत अधिक लगना, अति श्रम, क्षताघात, या इसी प्रकार के और हेतु उसे उसी मार्ग से पुनः मोड़ ले जाते हैं, जिस से वह आया था। यह सन्धियों (जोड़ों) पर आकर प्रायः ठहर जाता है। इस प्रकार शरीर में शोथ उत्पन्न हो जाता है, जो जोड़ों के पास होता है, जैसा कि हम सन्निपात की दशा में देखते हैं।

वह सम्पूर्ण अंग जिन में दूषित पदार्थ ठहर जाता है, अपने कर्तव्यों को भलीभांति पालन नहीं करते। इन में रुधिर का भ्रमण रुक जाता है। जिसका परिणाम यह होता है, कि पालन पोषण ठीक नहीं होता। यदि नाड़ों पर दबाव अधिक पड़ता है, तो वह शीतल हो जाते हैं, और फिर उन्हें उष्ण करना कठिन हो जाता है। यह सरदी पहिले हाथ पांव पर और फिर सम्पूर्ण शरीर पर फैल जाती है। और उस के साथ साथ अप्राकृतिक पदार्थ शरीर की आकृति में भी परिवर्तन करदेता है। यह एक ऐसी साधारण बात है, कि बहुत से मनुष्य इस परिवर्तन को मालूम नहीं कर सकते। परन्तु बाह्य परिवर्तनों से पता लग सकता है, कि शरीर में कितना अप्राकृतिक पदार्थ सञ्चित है॥

इसी आधार पर जो ऊपर वर्णन किया गया, ग्रन्थकार ने चेहरे को देख कर सर्व रोग बताने की योग्यता प्राप्त की। क्योंकि चेहरा और गर्दन पे छोटे २ परिवर्तन भी (यद्यपि उन के जानने के लिये बहुत तीव्र बुद्धि चाहिये) देखे जा सकते हैं॥

जाता है। जो शरीर दोषों से भरा हुआ है, वह अवश्य रोगग्रस्त है। और जितना अधिक रोगग्रस्त है, समझना चाहिये कि उतना ही अधिक अप्राकृतिक पदार्थ जमा है। दूषित पदार्थ आवश्यक है कि अन्य दूषित पदार्थ उत्पन्न करे। यह बाह्य कारणों पर निर्भर है, कि वह कब बढ़ता है। ऋतु के परिवर्तन से, आहार से, और अन्य ऐसेही कारणों से बढ़ना आरम्भ होजाता है। यदि शरीर में यह अप्राकृतिक पदार्थ बहुत अधिक हो, तो वह सम्पूर्ण शरीर या शरीर के एक बहुत बड़े भाग में फैल जाता है। यह गर्मी उत्पन्न करता है। यह वही गरमी होती है जिस को साधारणतः ज्वर कहा जाता है। अप्राकृतिक पदार्थ सञ्चित होने के दिनों में शरीर इस दूषित पदार्थ को दूर करने के उद्योग में अपनी सम्पूर्ण शक्ति को खर्च कर देता है। अप्राकृतिक पदार्थ को बाहर निकालने के लिये शरीर के उद्योग का नाम ज्वर है। अस्तु प्रत्येक कठिन ज्वर पुनःस्वास्थ्य प्राप्त करने का उद्योग है। सम्पूर्ण Accute (दारुण रोगों) का कारण यही है। इस से परिणाम यह निकलता है, कि ज्वर अपने आप दूर हो जाना चाहिये; जब कि अप्राकृतिक पदार्थ दूर हो जावे। और यही प्राकृतिक चिकित्सा है। यदि यह कृत्रिम उपायों से दबाया जावे तो अप्राकृतिक पदार्थ शरीरमें शेष रहता है और शरीर को अधिक हानिकारक रोगों से ग्रस्त कर देता है॥

"प्रिय वाचकवृन्द! क्या कभी आप को ध्यान आया है, कि एक ओर तो आप का एक मित्र कहता है, कि मैं पिछले ज्वर से निवृत्ति पाकर पहिले से भी अधिक स्वस्थ होगया हूं, और दूसरा कहता है; कि मुझे गत रोगावस्था के पश्चात् से सदैव कोई न कोई कष्ट रहता है। अब आप को इन दोनों परस्पर विरुद्ध अवस्थाओं के समझने में कोई कठिनता न रही होगी, पहिली अवस्था में तो ज्वर को अप्राकृतिक पदार्थ के बाहर निकालने में कृतकार्य्यता हुई है, और दूसरी में वह अकृत कार्य्य रहा है॥

२५ फ़रवरी १८१२ (७) देशोपकारक, लाहौर

" गरमी के बाह्य लक्षणों के कारण इस के विविध नाम पड़ गये है। और इस में वह सब रोग भी सम्मिलित हैं, जो विशेष कर बालकों को अधिक होते है। यथा विस्फोटक, शीतला, मसूरिका, मोतीझरा, विशूचिका, मरोड़, टाईफ़ाईड भी इसी प्रकार के रोग हैं॥

" जैसा कि हम ने पहिले वर्णन किया; इन सब का हेतु एक ही होता है। और इन का प्रभेद अधिकतर बाह्यावस्थाओं पर और विशेष कर उस दूषित पदार्थ की न्यूनाधिकता पर निर्भर है, जो नालियों में भर जाता है। बलवान् मनुष्यों की अवस्थाओं में प्रायः यह होता है, कि शरीर के केवल थोड़ा सा भाग अप्राकृतिक पदार्थ बाहर निकाल देने पर वह ज्वर से बच जाते है। ऐसे मनुष्य अपनी स्वास्थ्य के उत्तम होने का मान किया करते है, क्योंकि उन्हें अप्राकृतिक पदार्थ, की वृद्धि से पहिले कोई कष्ट अनुभव नहीं होता। परन्तु अन्त में उन की अवस्था भी उन रोगियों के सदृश हो जाती है, जिन का ज्वर औषधियों द्वारा दबाया जाता है। क्रमशः दुखदाई अवस्था आरम्भ होजाती है। यथा शिरःशूल, कास, दन्तशूल, जीवन एक बोझ प्रतीत होता है, और बोझ दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता है। शरीर के बाज़े अंग निर्बल होजाते है। केश श्वेत होजाते हैं, अथवा झड़ जाते है। दांत खराब होजाते है। नेत्र और कर्ण अपने कर्तव्य पालन में त्रुटि करने लगते है। अथवा पूर्णतयः कार्य्य त्याग देते है। शरीर के वह स्थान जहां अप्राकृतिक पदार्थ अधिक जमा होता है ठण्डा होजाते है, और वेदना आरम्भ होजाती है। पाचन शक्ति जाती रहती है। कभी कोष्ठबद्धता रहती है, और कभी रेचन और अप्राकृतिक पदार्थ के बढ़ने के समय में अंतड़ियों में दाह उत्पन्न होजाता है, और आमाशय की झिल्ली रूक्ष होकर कोष्ठबद्धता उत्पन्न करती है॥

"फेफड़े दूसरे अंगों की तरह उसी समय रोगग्रस्त होते हैं, जब उन पर सञ्चित दोष का दबाव पड़ता है। और उन का विनाश उस समय आरम्भ होता है, जब कि वह शरीर के अन्तिमांग से पुनः लौट आता है। यह अप्राकृतिक पदार्थ आमाशय की ओर से आरम्भ होकर फुफ्फुस की ओर फैलता है, और फुफ्फुस के अन्तिम भाग अर्थात् कन्धों के नीचे ठहर जाता है। यहां से आगे नहीं जा सकता, इस लिये फुफ्फुस के शिरों पर जमा होकर नाश आरम्भ करता है। इसी का नाम राजयक्ष्मा (तपदिक) रोग है" ॥

इस से आप ने भलीभांति समझ लिया होगा कि, एक अप्राकृतिक पदार्थ के कारण, जिस का नाम दोष आदि चाहे कुछ ही रक्खा जावे प्रत्येक रोग आरम्भ होता है। जहां वह पदार्थ जा बैठता है उसी जगह के रोग आरम्भ होजाते हैं। इन सब की चिकित्सा डाक्टर साहिब चार प्रकार के स्नानों से करते हैं —

और अब हम उन स्नानों का वर्णन करते हैं ॥

उचित तो यह होता कि इस अध्याय का पूरा अनुवाद यहां किया जाता, परन्तु एक अंक में यह समाप्त नहीं हो सकता, इस लिये उस का आवश्यक सारांश अंकित करते हैं:—

स्टीम बाथ अर्थात् भापका स्नान ॥

यह स्नान अप्राकृतिक पदार्थ को निकालने के लिये विशेष रूप से हितकर है। इस को वैद्यक में स्वेदन विधि कहते हैं। यूनानी में इन्कबाब कहा जाता है। शरीर को वाष्प पहुंचाई जाती है। जिस से सम्पूर्ण शरीर को पसीना आ जाता है। अवस्थानुसार यदि किसी को पसीना की आवश्यकता हो, तो उसी जगह भपारा किया जाता है। इस से अप्राकृतिक पदार्थ निकल जाता है। डाक्टर साहिब स्वास्थ्य रखने के वास्ते भी इसे आवश्यक समझते हैं। यद्यपि वैद्यों की पुस्तकों से ज्ञात होता है, कि सब अप्राकृतिक पदार्थ

निकालने के वास्ते केवल भपारा पर्याप्त नहीं है। परन्तु यहां इस के निर्णय से प्रयोजन नहीं है। यहां हमें केवल डाक्टर साहिब के स्नानों का वर्णन करना है, जो वास्तव में बहुत से रोगों पर नितान्त हितकर प्रमाणित होचुके है, और प्लेग के वास्ते भी प्रशंसा प्राप्त करते जाते हैं, और जिन के विषय में डाक्टर साहिब का दावा है कि सर्व रोगों को हितकर है। स्टीमबाथ (स्वेद कर्म) कई प्रकार से किया जाता है॥

पूर्ण शरीर का स्टीमबाथ (स्वेद स्नान)

इस के वास्ते डाक्टर साहिब ने एक विशेष यन्त्र भी निर्माण किया है, और स्वयम् भी बनवाया जा सकता है। आरामकुरसी भी यह काम दे सकती है। रोगी को नंगा करके पृष्ठ के बल लेटा देना चाहिये;

चित्र न० ६



जैसा कि चित्र से विदित है। उस के ऊपर एक कम्बल इस प्रकार ओढा देना चाहिये, कि भूमि तक चारों ओर पहुंचे, और वाष्प बाहर न निकले। तीन चार देगचियां लेकर उन्हें पृथक् २ चूल्हों पर रख कर खूब गरम करना चाहिये। जब खूब उबलने लगे तो उठा कर उन्हें आरामकुरसी अर्थात् रोगी के नीचे रख देना चाहिये। इन के ऊपर के ढकनों के इतस्ततः करने से वाष्प न्यूनाधिक की जा सकती है। बालक के लिये एक देगची पर्याप्त है। और तरुण के वास्ते दो तीन। पहिले पहिल मुख को भी कम्बल के नीचे ढक लेना चाहिये। यथा-आवश्यक बाहर निकाल कर खुली वायु का श्वास लेकर पुनः ढांक लिया जा सकता है। एक देगची अधिक चूल्हे पर रखनी चाहिये। ताकि पहिली देगचियों को बदल सकें, और जितनी देर वाष्प देनी हो दी जा सके। १० मिनट के भीतर पहिले देगचे से वाष्प निकलनी कम

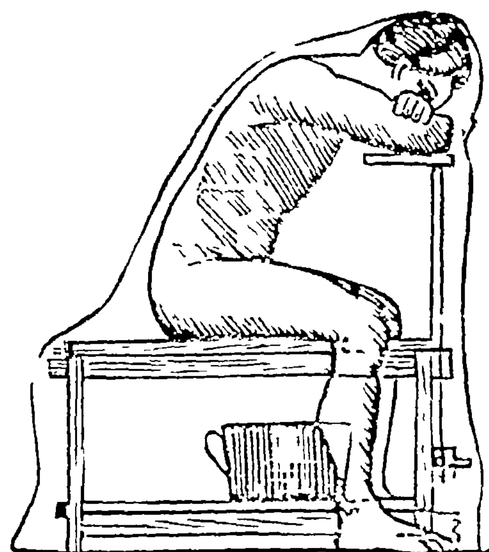
होजाती है। और १०-१५ मिण्ट के पश्चात् रोगी को उलट जाना चाहिये। आशा है अब शिर से पांव तक एक साथ पसीना आना आरम्भ होगा। जिन्हें पसीना न आता हो, उन्हें शिर ढके रखना चाहिये, कुछ अधिक अहित नहीं है। १५ मिण्ट से ३० मिण्ट तक जितनी आवश्यकता हो, पसीना देना चाहिए। यदि बहुत अल्प प्रस्वेद की आवश्यकता हो, तो देगचियां नहीं बदलनी चाहिए। शरीर के उन भागों में जिन में अप्राकृतिक पदार्थ सञ्चित हो,स्वेद मुश्किल से आता है। और रोगी को वहां अधिक वाष्प लेने की अपने आप आवश्यकता होती है॥

यह स्टीमबाथ बहुत निर्बल मनुष्यों को न देना चाहिये, उन्मादी रोगी को भी यह स्नान नहीं देना चाहिये। ऐसे रोगियों को फ्रैकशन सिट्ज़बाथ और फ्रैकशन हिपबाथ, और सन बाथ लेने चाहिए, (जिन का वर्णन अभी किया जावेगा) वाष्पीय स्वेद सप्ताह में दो बार पर्य्याप्त है॥

स्मरण रहे कि वाष्पीय स्वेद के पश्चात् शरीर को शीतल करने के वास्ते फ्रैकशन हिपबाथ कूप के ताज़े पानी से करना चाहिए, इस में शरीर का मध्य भाग केवल पेड़ू धोया जाता है। अतः उस के अतिरिक्त छाती, हाथ, टांग, पांव, शिर, गर्दन, को बहुत शीघ्र और फुरतीसे इस बाथ के आदि अथवा अन्त में धो लिया जाय तो उत्तम है। डाक्टर साहिब कहते हैं, कि भय मत करो, वाष्पीय स्वेदन से उष्ण हुआ शरीर शीतल किए जाने से दृढ़ और परिश्रमी होजाता है॥

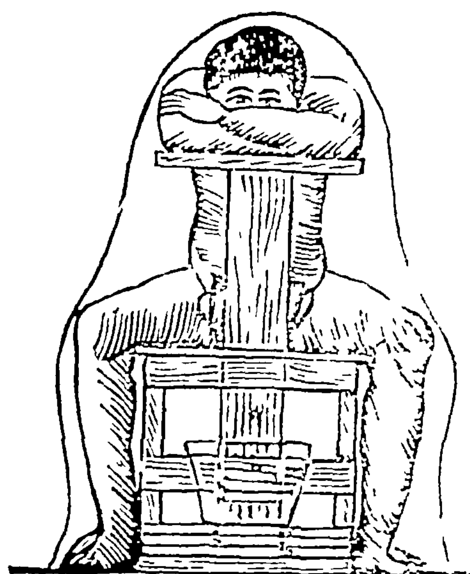
अब जब कि शरीर शीतल होगया, तो हिपबाथ (पेड़ू धोने के पश्चात) खुली वायु में वा विशेष कर धूप में थोड़ा सा व्यायाम कर के उस को उष्ण भी कर लेना चाहिये। यदि रोगी निर्बल है, तो गरम चादर ओढ कर पलंग पर जाना पर्याप्त है। परन्तु जैसा कि वर्णन हुआ निर्बल रोगियों को स्टीमबाथ कराना ही नहीं चाहिए॥

शरीर के विशेष विशेष भागों को स्टीमबाथ—देना हो तो जिस भाग को देना हो, उस के नीचे बाष्प का बर्तन रख कर और उसी को ढांपना चाहिए ॥



चित्र नं॰ २

यह आकार डाक्टर कुहनी साहिब के स्वनिर्माण कृत यन्त्र का है । इस पर पेट का स्टीमबाथ दिया जा रहा है । परन्तु एक कुरसी से भी यह काम निकल सकता है । पेट का स्टीमबाथ कठिन उदर रोगों, पाण्डुरोग, गर्भाशय सम्बन्धी रोगों में दिया जाता है। अर्थात् उस समय जब कि अप्राकृतिक पदार्थ उसी जगह हो। जैसा कि सम्पूर्ण शरीर के स्वेदन के पश्चात् हिपबाथ ताजे पानी का किया जाना लिखा है। उसी प्रकार इस में भी किया जाना चाहिये । सारांश यह कि पीछे की विधि वही है, जो बतलाई गई । हां स्त्रियों के रोगों में हिपबाथ के स्थान में फ्रिक्शन सिट्जबाथ इस स्टीमबाथ के पश्चात् कराना चाहिए ॥



चित्र न० ३

उपरोक्त आकार वाष्पीय स्वेदन का है, जब कि केवल शिर और ग्रीवा को दिया गया है। यह आकार डाक्टर साहिब के अपने यत्र का है, परन्तु इस प्रकार भी किया जा सकता है, कि वेञ्च पर एक तख़ता रखकर उसके ऊपर उबलते हुए पानी का बासन रक्खा जाता है, और शिर व ग्रीवा को लपेट कर सहारे के लिए सामने एक साधारण कुरसी रखकर उस समय तक वाष्प दी जाती है, जब तक कि शिर और ग्रीवा को खूब पसीना आजावे। पसीना आते ही सब प्रकार का दर्द दन्त, शिर, आदि का बन्द हो जाता है। इस स्वेद के पश्चात् शिर, छाती, यदि गरम हो, तो तत्काल फ्रैकशन हिपबाथ, (पेड़ू का स्नान) या फ्रैकशन सिटज़बाथ दे देना चाहिए। और यदि कुछ देर पीछे फिर दर्द होने लगे तो वाष्प का बाथ सम्पूर्ण शरीर को करना चाहिए। संक्षिप्त यह कि इसी प्रकार जितने अधिक पसीना की आवश्यकता हो भाप दी जासकती है॥

सनबाथ (SUN BATH) अर्थात् सूर्य्य स्नान

का वर्णन किया जाता है। शीत ऋतु में जिस दिन धूप हो, और ग्रीष्म ऋतु में जब सहन करने योग्य हो, तो धूप ली जा सकती

है। परन्तु उस समय तक कि सुख पूर्वक सहन होसके। क्योंकि भारत वर्ष की धूप यूरुप के शीतल देशों की अपेक्षा, जिन में कुहनी साहिब रहते हैं, अधिक उष्ण होती है। अतः इस स्वेदन को करते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि लू न चलती हो, धूप अति कठिन न हो। शीत ऋतु में १० बजे से ३ बजे तक का समय उत्तम है। ग्रीष्म ऋतु में इस से प्रथम। रोगी को चाहिए कि हलके वस्त्र पहन कर एक चारपाई पर कम्बल बिछाकर और मुख व शिर को केले व निम्ब के पत्तों से ढांप कर लेट जावे, नग्न पेट्ट को भी इसी प्रकार ढांका जा सकता है। आध घण्टे से १½ घण्टा तक इस धूप को लेना चाहिए। जिन को धूप में शिरःशूल होने लगता है, उनको पहिले कम धूप लेनी चाहिए। धूप यदि अधिक हो, वा रोगी सहन न कर सकता हो, तो भी कम लेना चाहिए। धूप लेने के पश्चात् शीतल करने के वास्ते फ्रैकशन हिपबाथ, या फ्रैकशन सिट्ज़बाथ लेना चाहिए। जिन रोगियों को इस तरह पानी में नहाने के पश्चात् शीघ्र शारीरिक ऊष्मा लौट न आवे, उनको पुनः थोड़ी धूप लगाना, या टहलाना चाहिए। सत्य तो यह है, कि निर्बल रोगियों को बड़ी सावधानी से धूप देनी चाहिए। और भोजन के पश्चात् एकाध घण्टा ठहर कर धूप लेनी चाहिए॥

स्मरण रहे, कि धूप के कारण से अप्राकृतिक पदार्थ जो शरीर में चलायमान होता है उस से स्वाभावत शिर शूल चक्कर, श्रम, और गुरुता उत्पन्न होती है॥

शरीर के विशेष २ भागों को धूप से स्नान कराने की आवश्यकता पड़ती है, ऐसे रोगों में जिन में मांस कहीं शरीर पर उभर आता है। या बहते हुए घावों में या किसी अंग के कठोर हो जाने पर, या रसौली में, या किसी स्थान के मांस घट जाने पर, या शरीर में कहीं पीड़ा होती हो॥

उस भाग को सर्वथा नग्न करके उस पर एक पत्ता केले का या थोड़े से पत्ते निम्ब के रख दिए जाते हैं। डाक्टर साहिब का तजुर्बा है, कि हरित पत्तों के भीतर से सूर्य्य की किरणें जो जाकर पहुंचती हैं, तो उनका प्रभाव बहुत ही बढ़िया होता है ॥

कहा जा सकता है, कि धूप के वाथ में शरीर नग्न रखना और भी उत्तम मालूम होता है, परन्तु डाक्टर साहिब इसके विरुद्ध हैं। वह कहते हैं, कि प्रकृति में फल, पत्तों के नीचे ढके हुए पहिले धूप पश्चात् जल पाकर पलते हैं। धूप के पश्चात् जल न देना, अथवा नग्न रहना उनको मुरझा देता है। अतएव हल्के वस्त्र पहन कर और यदि किसी विशेष भाग को वाथ कराना है, तो उसे नग्न करके और हरे पत्ते उस पर रख कर उचित समय तक वाथ करके अथवा फ्रैकशन हिपबाथ, या फ्रैकशन सिट्ज़बाथ, से अवश्य शीतल करना चाहिए। अन्यथा कुछ लाभ नहीं है ॥

फ्रैकशन हिपबाथ।

बष्पीय स्नान के पश्चात् अर्थात् पेड़ू का स्नान जो सूर्य्य स्नान या यौंही भी किया जाता है। विधि चित्र से प्रगट होती है। एक टब में इतना पानी डाला ॥

चित्र नं० १४



जावे, कि पेड़ू और नाभि डूब जावे, और रान तक पहुंचे। पांव टांगें, और शरीर का ऊपर का भाग पानी से बाहर रहे, क्योंकि इन स्थानों में प्रायः रक्त कम होता है। पानी की उष्णता ६८ से ८४ फ़ैरनहीट होनी चाहिए फ़ैरनहीट थर्मामेटर (घर्म्म मात्रि) एक यंत्र अंग्रेज़ी दुकानों से मिलता है, जिस से वायु या पानी की उष्णता की जाती है। ६८ से ८४ तक प्रायः ताज़ा कूप का जल गरम

होता है। अस्तु इसी को लेना पर्याप्त है। स्नान करने वाला कुछ बैठ कर और कुछ पीछे को सहारा करके बिना ठहरने के शीघ्रता से समस्त पेड़ू को नाभि के नीचे एक ओर से दूसरी ओर तक एक सामान्य मोटे गीले वस्त्र से मले, यहां तक कि शरीर खूब ठण्डा हो जाय। बालकों के वास्ते थोड़े मिण्ट पर्य्याप्त है। रोगियों के वास्ते ५ या १ मिण्ट और फिर क्रमश अधिक। नग्न भाग कदापि ठण्डे न होने चाहिए। उन्हें कम्बल से अच्छी तरह ढक देना चाहिए। यह भी हो सकता है, कि एक बड़ा कम्बल ऊपर ओढ़ाया जावे। कम्बल शिर से लेकर पांव तक और टब के इस्ततः भी लटके। पेड़ू के मलने म हाथ न रुके। इस प्रकार शेष सम्पूर्ण शरीर गरम रहेगा। और फिर वही सरद होगा, जब यह शीतल हो गया, तो रोगी को शरीर उष्ण करणार्थ तुरन्त खुले मैदान में व्यायाम करना चाहिए। और निर्बल रोगियों को कम्बल ओढ़ाकर लेटा देना चाहिए। यदि ऊष्मा क्रमश आवे तो एक पट्टी पेड़ू के इर्द गिर्द लपेटनी चाहिए। इस प्रकार के हिपबाथ (पेट स्नान) एक बार से ३ बार तक दैनिक दिए जा सकते हैं। इसके स्थान में रात्रि समय फ्रैकशन सिट्ज़बाथ भी दिया जाता है, या दोनों। अस्तु फ्रैकशन सिट्ज़बाथ का वर्णन नीचे किया जाता है:—

फ्रैकशन सिट्जबाथ॥

यह बाथ विशेष कर स्त्री रोगो में दिया जाता है। इसकी विधि लग भग हिपबाथ जैसी ही है। हिपबाथ में जैसा टब है, उस टब में एक काष्ट का आसन रख देना चाहिए। और फिर उस में पानी इतना डाला जावे, कि उस काष्टासन के किनारों तक पहुंचे। परन्तु उसका ऊपर का भाग शुष्क रहे। अब इस पर स्त्री इस प्रकार बैठ जावे, जैसा हिपबाथ में बैठा जाता है। फिर एक मोटे वस्त्र या तालिए को भिगोकर योनि को धोना आरम्भ करे। वस्त्र को बारम्बार भिगोना और धोना चाहिए। योनि के केवल बाह्य ओष्ट धोए जावें,

और उनको ज़ोर से आगे पीछे को मलना नहीं चाहिए, वरन् नरमी से धीरे २ मलना चाहिए। शेष शरीर शुष्क रहेगा, यदि नितम्ब भीग जावें तो कुछ ऐसी हानि नहीं। मासिक धर्म्म के दिनों में यह स्नान बन्द कर देना चाहिए। हां यदि प्रदर (आर्तव की अधिकता) हो, तो यह बाथ लाभ दायक है। तीन चार दिन रज आना स्वास्थ्य का लक्षण है, इस से अधिक व्याधि समझना चाहिए। इस फ्रैकशन सिट्ज़बाथ के वास्ते घड़े का शीतल जल (५० से ६० दर्जा फ़ैरनहीट) पर्य्याप्त है। और इस स्नान को १० मिण्ट से ८० मिण्ट तक रोगी की आयु और शारीरिक बल के अनुसार किया जा सकता है। पानी जितना शीतल हो उत्तम है, परन्तु इतना अधिक भी न हो, कि हाथ सह न सके। बड़े टब में एक स्टूल रखकर भी इसको किया जा सकता है। ऐसा प्रबन्ध होना चाहिए कि स्टूल वा बैठक के सिरे तक पानी पहुंचने तक १०-२० सेर पानी टब में अवश्य आजावें। क्योंकि जितना पानी कम होगा उतनाही शीघ्र उष्ण होजावेगा। और इस लिए लाभ कम होगा ॥

फ्रैकशन सिट्ज़बाथ की पुरुषों के लिए भी आज्ञा है। उपस्थेन्द्रिय की ऊपर की खाल को दो उंगलियों से सुपारी के बाहर तक खींचा जाता है, ताकि सुपारी सर्वथा भीतर ढप जावे और धोते समय उसको कोई रगड न आवे। फिर सामान्य रूमाल के बराबर टाट के टुकड़े को गीला करके उगलियों में पकडी हुई खाल को धीरे २ धोता जावे, इस पर उर्दू अनुवादक ने निम्नलिखित नोट लिखा है:—

"इस स्नान के लिए टब के स्थान मे एक मिट्टी की नांद (मिट्टी का खुले मुख का बर्तन) ली जावे, और बैठने के लिए मोढ़ा या चौकी जो कि उचाई में उसके बराबर हो, उसके साथ मिलाकर रक्खें, और मोढ़े पर पांव लटका कर बैठकर लिंगेन्द्रिय स्नान किया जाय। एक रोगी की वर्ती हुई नांद दुसरा रोगी न वर्ते। और उसका पानी स्नान के लिए बदला हुआ होना चाहिए। उचित है कि थोड़े घडे इस

कार्य्य के लिए उसके पास रक्खे हुए हों। ताकि ठण्डा पानी जिस समय आवश्यकता हो मिल सके। नांद ऐसी हो कि जिस में २० सेर पानी कम से कम आजाय। क्योंकि इतना पानी २०–३० मिण्ट तक काम आवेगा। इस पानी को वृक्षादि में न देना चाहिये, सूख जाता है। प्रश्न उत्पन्न होता है, कि मुसलमान बन्धु जिन का यह चर्म काट दिया जाता है यह बाथ कैसे करें ? यह प्रश्न मैंने डाक्टर साहिब को जर्मन में लिखा, तो उन्होंने उत्तर दिया कि जिन की खाल कटी हो, वह उस स्थान को जो टांगों और अण्डकोश के मध्य में होती है, तौलिए से मलें, और कटि के निचले भाग को टब के भीतर ३ उंगुल नितम्बों के ऊपर तक पानी रख कर उसमें बैठकर तौलिये से मलें। अस्तु केवल ३ उंगल नितम्ब भीगेंगे। शेष शरीर और टांगें शुष्क रहेंगे। पानी जितना शीतल मिल सकता हो उत्तम है। परन्तु ६३ दर्जा फैरन हीट से अधिक शीतल न किया जावे। फ्रक्शन सिट्ज़ बाथ में एक और आवश्यक बात जो डाक्टर साहिब से पूछने पर ज्ञात हुई, वह यह है कि इस बाथ के करते समय सम्पूर्ण शरीर से वस्त्र उतार दिए जावें। यह स्नान स्नानागार के भीतर होना चाहिए। विशेषतः शीत ऋतु में या शीत के समय दूसरे ऋतु में भी कमरा बाहर की वायु से गरम रखना चाहिए। जो कि अंगीठी से हो सकता है। परन्तु स्मरण रहे कि कोयलों का विष कमरे के भीतर न फैलने पावे। अंगीठी बाहर दहका कर भीतर लानी चाहिए। और फिर भी कमरे में वायु के गमनागमन का मार्ग रहे।

बाथ के समय रगडा गया था, इसे बुरा न समझना चाहिए, स्नान बराबर करते रहना चाहिए। हां वस्त्र पहिले से नरम बर्तना चाहिए। बाज़े रोगों में नितम्बों के ३ उंगल ऊपर पानी आना चाहिए। तब पानी की ऊष्णता ६४ दर्जे से कम और ७३ से अधिक न होनी चाहिए। नितम्ब जब पानी मे हों, तो बहुत शीतल पानी हानि करता है। डाक्टर साहिब इस बात का स्वयम् ही उत्तर देते है, कि आन्तरिक घावों को बाहर लाने के वास्ते कोई और भाग इस लिए नहीं चुना गया है, कि इसी स्थान पर जीवनरूपी वृक्ष की पूर्ण जड़ है। पट्ठों के सिरे यहां ही है। रीढ़ से निकली स्नायु की शाखाएं यहीं है। यह केवल लिंग ही है जो सम्पूर्ण शरीर पर प्रभाव डाल सकता है। इस जगह को शीतल जल से धोने से न केवल निकृष्ट आन्तरिक गरमी ही कम होती है। वरन् पट्ठों में भी अधिक स्फ़ूर्ति आती है। मानों सम्पूर्ण शरीर में नूतन बल प्रविष्ट कर दिया गया है। फ्रैक्शन सिट्ज़ बाथ सब बातों को जो शारीरिक अवयवों के कार्य्य को ठीक करती हैं पूरा करता है। यह बाथ उनके लिए है, जिनकी स्वास्थ्य ख़राब है। दुखदाई, घृणित शल्य क्रिया की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि सर्व घाव इस से अच्छे हो सकते है। पूरे स्वस्थ मनुष्यो पर फ्रैकशन सिट्ज़ बाथ का कुछ प्रभाव नही होता॥

इस बाथ को वर्णन करके डाक्टर साहिब ने इस फ्रैक्शन हिपबाथ, और फ्रैक्शन सिट्ज़बाथ की प्रशंसा में जो शब्द लिखे है, और जिनके साथ इस अध्याय की समाप्ति है, हम अक्षर प्रत्यक्षर अंकित करना उचित समझते हैः —

"यदि शरीर के भीतर प्राकृतिक पदार्थ भरा हुआ है, जिसकी उपमा ज़ङ्गार लगी हुई मैशीन से दी जासकती है, तो बिगड़ी हुई पाचन शक्ति इस योग्य न होगी, कि साधारण आहार से इतना बल पहुचावे, कि शारीरिक स्वास्थ्य को स्थिर रखने के लिए पर्य्याप्त हो। पहिले की अपेक्षा अधिक आहार की आवश्यकता प्रतीत होने लगती है। और दैनिक, विशेषकर उत्तेजक आहार की, ताकि शरीर काम काज के योग्य

रहे, परन्तु ऐसी दशा मे पाचन शक्ति स्वाभावतः क्षण प्रतिक्षण अधिक घटती जावेगी ॥

"यदि हम फिर शरीर की जीवनी शक्ति को बढ़ाना चाहें, तो ऐसे उपायों के द्वारा बढ़ा सकते है, जो पाचन शक्ति को बल देवे। सब से अच्छे उपाय जो मुझे मालूम है, वह प्राकृतिक आहार और उसी के साथ ठण्डक पहुचाने वाले यह स्नान है। यह खराब से खराब पाचन शक्ति को (जब तक वह ठीक होने के योग्य है) किसी दूसरी चिकित्सा की तुलना से शीघ्र ठीक करते है । और प्रकृति अनुसार प्रभाव करते है। इसके अतिरिक्त यह स्नान ज्वर की गरमी को जो अप्राकृतिक पदार्थ की रगड़ से उत्पन्न हुई है घटाकर स्वास्थ्य की दशा में लाते है। आगामी रोग का बढ़ना रुक जाता है, दैनिक कार्य्यों से एक दृष्टान्त लेते है यथा यदि हम चाहें कि उस भाप को जो एक कमरे के भीतर खौलते हुए पानी से निकल रही है, फिर उसके असली रूप पानी में लावें तो उपाय केवल यह होगा कि गरमी को कम करदें। यही दशा अप्राकृत पदार्थ की है। रोग शरीर में उष्णता बढ़ जाने से उत्पन्न होता है । और यदि विपरीत अवस्था उत्पन्न कर दी जाए तो दूर भी होजाता है। अर्थात् लगातार शीतलता पहुचावें और आन्तरिक उष्मा जो उचित सीमा से बहुत बढ़ गई है कम कर देवें ॥

विचार करके) इस से मैं दूसरे रोगों अर्थात् शीतला, ज्वर, स्कारलट विशूचिका आदि को आराम करता हूं। प्राकृत शक्ति सम्पूर्ण शरीर की बढ़ा दी जाती है। और उसके साथ यह सम्भव नहीं है, कि शरीर के एक भाग में दूसरे की अपेक्षा अधिक तेज़ी आजावे, सिवाय उस दशा के जिसका ऊपर वर्णन किया गया है, कि जहां स्नायविक शृंखला भग होगई हो। प्रायः लोग इस बात को नहीं जानते कि उस की प्रकृत शक्ति का बढ़ना किस प्रकार प्रगट होता है। और अनेक समय रोगी की आशा के सर्वथा विरुद्ध प्रगट होता है। यथा ऐसी घटना हो सकती है, कि तम्बाकू पीने वाले इस प्रकार के बाथों के पश्चात् तम्बाकू अधिक सेवन नहीं कर सकते। और वह सोचने लगते हैं कि उनके आमाशय निर्बल होगए हैं। यद्यपि इस के विपरीत पहिले उनके आमाशय तम्बाकू के विषाक्त धूम्र का सामना करने के अयोग्य थे। परन्तु अब पुनः उन में यथेष्ट बल आगया, कि उस विष का मुकाबला करें। जब तक पट्ठे इन स्नानों के द्वारा बल प्राप्त करने की योग्यता रखते हैं, तब तक शरीर में सदैव ऐसी शक्ति आजावेगी, कि प्राकृतक अंग दूषित पूय को जो शरीर में सञ्चित हो गया है निकाल देवें॥

"फ्रैकशनसिट्ज़बाथ के अतिरिक्त पेडू के ऊपर मिट्टी (गीली चिकनी मट्टी वा पिंडोल का लेप बाह्य ऊष्मा को घटाने, और अप्राकृतिक पदार्थ को उखाडने के लिए बहुत ही हितकर प्रमाणित होगा। ऐसा बांधना आगन्तुक चोटों और घावों को भी बहुत लाभ देने वाला है॥

"किसी मनुष्य को यह विचार नहीं करना चाहिए, कि यह चिकित्सा विधि (जो कि प्रत्येक मनुष्य की अवस्थानुकूल निर्द्धारित की जाती है) प्रत्येक रोगी को अवश्यमेव पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करेगी, जैसाकि मैं पहिले वर्णन कर चुका हूं मैं प्रत्येक रोग को अच्छा कर सकता हूं, नाकि प्रत्येक रोगी को। क्योंकि जिस रोगी की प्रकृत शारीरिक शक्ति और जठराग्नि नष्ट हो चुकी है, उसको इस चिकित्सा

विधि से निस्सन्देह ऐसा लाभ होगा, जो सच मुच किसी दूसरी औषधि से नहीं हो सकता ॥

"बाज़ अवस्थायें ऐसी भी कठिन होती हैं, कि जिन में मेरे स्नान बहुत सोच समझकर लेने चाहियें। और जिन में प्राय थोडे दिनों के पश्चात् बन्द भी कर देने चाहिए। ऐसी दशाओं में केवल इस लेख के आधार पर, बिना इसके कि मेरी चिकित्सा विधि से पूर्ण विज्ञता प्राप्त करें, रोगियों का स्वयम् ही इलाज करने लगना अनुचित होगा। ऐसी दशाओं में उचित है, कि पत्र व्यवहार द्वारा मुझ से जिज्ञासा करें, ताकि कोई बुरा परिणाम इस चिकित्सा विधि से उत्पन्न न हो" ॥

अब आप ने भली भान्ति समझ लिया, कि डाक्टर लुईकुहनी साहिब ४ प्रकार के स्नानों से सर्व रोगों की चिकित्सा करते हैं। वह ४ बाथ यह हैं :—

स्टीमबाथ अर्थात् बाष्पस्नान, सनबाथ अर्थात् सूर्यस्नान, हिपबाथ अर्थात् नितम्बस्नान, और सिट्ज़बाथ अर्थात् जननेन्द्रिय स्नान–

अब उचित प्रतीत होता है, कि [illegible] का जिस प्रकार इन स्नानों से इलाज किया जाता है, उस को लिखा जावे। उर्दू अनुवादक [illegible] दिया है, जिन्हें हम नीचे अंकित करते हैं :—

में एक प्रकार का शोथ हो जाता है, और वह पूर्ण रूप से अपना काम नहीं कर सकते। तृतीय सेप्टसिमिक जिस में सम्पूर्ण शरीर का रुधिर दूषित हो जाता है। चौथे इन्टिसटाइनल जिस में अन्त्रियां निकृष्ट हो जाती है। एक ही रोगी को एक से अधिक प्रकार का ताऊन एक वार हो जाना भी सम्भव है। पहिली प्रकार के ताऊन में गिल्टियां या तो ज्वर के प्रथम निकलती है, या ज्वर आरम्भ होने के पश्चात्। यदि शरीर के नीचे भाग में गिल्टी निकलती है, तो प्रायः रान में। और यदि ऊर्द्ध भाग में निकलती है तो कानों के पास, वा उन के नीचे गले में॥

यह रोग मनुष्यो की अपेक्षा लोग कहते है, कि मूषों में शीघ्र व्यापता है। और पहिले मूष ही मरते हुए देखने में आते हैं। फिर इसका प्रभाव मनुष्यों पर होता है। ऐसा तो कोई घर नहीं, कि जहां चूहे न हों, अस्तु चूहों के द्वारा एक घर से दूसरे घर में भली भान्ति जा सकता है। बड़े शहरों में जहां कि म्यूनिसिपिल्टी ने इन दुष्ट जीवो की संख्या शीत ऋतु आरम्भ होने से पहिले ही घटा दी है, उन नगरों में फिर यह बहुत कम हुआ है। जब रोग को एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने वाले मूषों की संख्या कम होगी तो रोग भी कम फैलेगा। रोग को रोकने के लिए घरों की सफाई भी आवश्यक है। विशेष कर नालियो, बद्रवरचो, और पाखानों की, अर्थात् उन स्थानों की, कि जहां मल होने का अवसर हो, स्वच्छता अवश्य रखनी चाहिए। और फिनायल वाटर से उन्हें धोडालना, या उन में छिड़क देना, और घरों की वायु शुद्ध रखने के लिए उनमें सुगन्धी एक वार दैनिक जलाना उचित है। जिन लोगो का दैनिक हवन करना कर्तव्य है, वह गृह में हवन करें। और दूसरे लोग किसी उत्तम वस्तु यथा गुग्गुल या अन्य सुगन्धी को एक दो वार गृह में दैनिक जलाकर उसका धूम्र लगा दिया करें॥

गृहों की स्वच्छता से शारीरिक स्वच्छता भी कम आवश्यक

नहीं है। शरीर को स्वच्छ रखना तो बाह्य स्नान और वस्त्र स्वच्छ रखने से पूर्णतयः हो सकता है। परन्तु केवल बाह्य शारीरिक स्वच्छता से काम नहीं चलता, वरन् आन्तरिक स्वच्छता भी आवश्यक है। इस पुस्तक "नया इल्म शफ़ाबख़शी" के प्रथम ६६ पृष्ठ पढ़कर आप को ज्ञात हो गया होगा, कि बिना आन्तरिक मलीनता के कोई रोग होना सम्भव नहीं। और आन्तरिक मैल से बचने और उस के निवारण करने का उपाय भी प्रथम भाग के शेष पृष्ठों के पढ़ने से ज्ञात होचुका होगा॥

आन्तरिक व बाह्यक स्वच्छता से भी अत्यावश्यक आत्मिक शुद्धि है। आत्मिक शुद्धि के बिना मनुष्य ऐसे २ कर्म्मों का कर्त्ता बनता है, कि जिन में सब प्रकार की अपवित्रता होती है। आत्मिक शुद्धि के लिए मनुष्य को उचित है, कि अपने जातीय धर्म्म को पालन करे। रोग मनुष्य के पापाचार का फल है। और जितना अधिक किसी देश के निवासी पापी होंगे उतने ही अधिक कठिन रोगों में ग्रस्त होंगे। क्या यह कहा जा सकता है, कि भारतवर्ष में लोगों का आचार पहिले की तुलना में अब अच्छा है? प्रत्येक मनुष्य जब अपने आप की ओर अपने इतस्ततः विचार पूर्वक देखेगा तो यही कहेगा कि नहीं, और इसका कारण यही दिखाई देगा कि साधारणतः प्रत्येक मत के लोग अपने धर्म्म कर्म का पालन नहीं करते। केवल बाह्य कर्म्मों का ही नहीं वरन् आन्तरिक दुराचार का भी स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है, और जीवन को कम करने वाला होता है॥

सूखी घास और नीम के शुष्क पत्ते बिछा कर और ऊपले व लकड़ी उस के ऊपर फैला कर जला दें, ताकि घर में खूब धुआं हो जाय, और पूर्णतयः गरम हो जाय। और घर की सम्पूर्ण भूमि एक बार अग्निवत तपा देनी चाहिए। क्योंकि जहां तक मानुषी तजुर्बा है कोई भी जीवधारी ऐसा नहीं, जिस को अग्नि भस्म न कर सकती हो॥

यदि किसी मनुष्य के विषय में सन्देह हो, कि वह इस रोग में ग्रस्त है, तो उसे घर के अन्य मनुष्यों से पृथक् रक्खें। और उस की आवश्यकता के समय ही उस के पास जावें। उस से अधिक वार्तालाप करना भी उस के विचारों को निर्बल करना है। चित्त को एकाग्र करने के लिए उचित है, कि रोगी अपने सच्चे उपासनीय के ध्यान में प्रवृत हो। रोगी को ऐसे घर में रक्खें, जिस में ताज़ी वायु का भली भान्ति प्रवेश हो॥

चिकित्सा।

जिस समय किसी मनुष्य के विषय में ताऊन का थोड़ा भी सन्देह हो, चाहे गिलटी निकल आई हो, या सर्वथा रोग हो, तो सब से प्रथम रोगी को एक स्टीम बाथ सम्पूर्ण शरीर का आध घण्टा पर्य्यन्त देवें। यदि कोई बेञ्च या कुरसी प्राप्त न हो, तो छोटी चारपाई पर भी जिस की बुनावट घनी न हो, यह वाष्पस्नान लिया जासकता है। और वाष्पस्नान के पश्चात् तुरन्त एक फ्रैकशन हिपबाथ देर तक देवें। आधा घण्टा या उस से भी अधिक, यदि रोगी को पानी में बैठना बुरा न प्रतीत होता हो। स्टीमबाथ लेने के समय यदि थोड़ी २ देर तक मुख कम्बल के भीतर ढांप रक्खें, और खोल कर श्वास लेवें तो उत्तम है। ऐसा करने से वाष्प का प्रभाव भीतर तक पहुंचता है। इस बाथ के पश्चात् प्रति ३-३ बार चार घण्टे के पश्चात् फ्रैकशनसिट्ज़बाथ आध २ घण्टा तक और हिपबाथ कोई २०-३० मिण्ट तक बारी

बारी से लेवें। जब तक कि ज्वर दूर न हो जावे। यदि ३ बाथ देने से लाभ प्रतीत हो, तो फिर अगले दिन देवें और ज्वर दूर होने के पश्चात् भी सप्ताह तक दैनिक हिपबाथ व फ्रैकशन सिट्ज़बाथ लेते रहें, यदि आवश्यकता प्रतीत होती हो। अथवा पहिले स्टीम बाथ में पसीना न आया हो तो दूसरे दिन फिर स्टीमबाथ लिया जा सकता है। परन्तु सावधानी के साथ॥

यदि गिल्टी निकल आई हो, तो पूरे शरीर के लिए स्टीम बाथ देने के समय गिल्टी को विशेष कर खूब भाप देवे। और यदि गिल्टी कान के पास या गलेमें है, तो उपर्युक्त चिकित्सा के अतिरिक्त एक दो बार चेहरा व गर्दन को स्टीमबाथ देकर तब फ्रैकशन हिपबाथ या सिट्ज़बाथ करें। यदि गिल्टी रान में है तो पेड़ू के स्टीमबाथज़ पूर्ण शरीर के स्टीम बाथज़ के अतिरिक्त देने उचित होंगे। पूरे स्टीम बाथ के दिन पेड़ू का स्टीमबाथ पृथक् न दिया जावे। यदि गिल्टी में दाह प्रतीत होती हो, तो उस को थोड़ी देर गरम पानी में ऊनी वस्त्र भिगो कर और निचोड़ कर सेंकते रहें। और शेष समय में उस पर ठण्डे पानी से भीगे हुए वस्त्र रख कर ऊपर से किसी ऊनी वस्त्र की पट्टी लपेट देवें। (फलालैन की पट्टी उत्तम होगी या किसी अन्य ऊनी वस्त्र की) पट्टी ऐसी कठोर न बंधी हुई हो, कि उससे रक्त भ्रमण बन्द होजावे। पट्टी भिगोने के लिये यदि वर्षा का जल हो तो उत्तम है।

आहार—क्षुधा लगने के विना रोगी को आहार न देवें, और जब देवें तो शीघ्र पचने वाला और लघु देवें ॥

अब अन्त में उन शब्दों को लिखता हूं, जिन को अनुवादक बाबू कृष्ण स्वरूप साहिब ने मुझे अपने पत्र में लिखा था, और जिन्हों ने मुझ को यह बाथ लिखने पर उद्यत किया:—

"प्लेग के रोगियों के लिए प्रारम्भ में यदि सूचना मिले, तो "अमृतधारा" हितकर पाई गई है। "अमृतधारा" ने अनेक रोगियों को १ से २ घण्टे में स्वस्थ कर दिया. . .परन्तु जब रोग को उत्पन्न हुए कुछ काल होगया, तो मैंने डाक्टर लुईकुहनी की चिकित्सा विधि अनुसार हिपबाथ और स्टीम बाथ दिलवाए। केवल सन्निपतक दशा एक हिपबाथ से २ घण्टे के भीतर दूर होगई। पश्चात् हिपबाथ या सिट्ज़बाथ। इस विधि के फल बहुत आश्चर्य जनक है" ॥

